THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

श्री
जैनकथारत्नकोष.

भाग बीजो.

आ पुस्तकमां

पंडित श्रीपद्मविजयजी विरचित बावीशमा तीर्थंकर
श्रीनेमीश्वर भगवानना रास दाखल कर्यो छे

तेमां

विचित्र प्रकारनी वैराग्यादिक रसने उत्पन्न करनारी
आश्चर्यकारक कथाओ आपेली छे.

ए ग्रंथ

चतुर्विध श्रीसंघने भणवा वांचवाने अर्थे

श्रावक, भीमसिंह माणेके

श्रीमुंबइबंदर मध्ये

निर्णयसागर छापखानामां छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे.

संवत १९४६ - सने १८९०.

आ पुस्तकने फरीथी छापवानो हक्क सरकारना कायदा मुजब नोधाव्यो छे.

सनी दानना, लोक वसे धनवंत ॥ ल० ॥ महोटा आवासें कोरणी, को रणी नहिं जसवंत ॥ ल० ॥ जं० ॥ ६ ॥ मूंगा पारका दोषने, कहेवा ले वा अजाण ॥ ल० ॥ अंध जे परस्त्री देखवा, इणिपरें नयर मंमाण ॥ ल० ॥जं०॥७॥ जनाकीर्ण ते नयरमां,बंधन कुसुमने होय ॥ल०॥ निर्दयता पणुं खड्गमां, ए जनने नहिं कोय ॥ ल० ॥ जं० ॥ ८ ॥ प्रासाद शृंगनी ऊपरें, दंम देखीजें त्यांहि ॥ ल० ॥ नाकारो को नवि कहे,वात देवानी ज्यांहि॥ ल० ॥ जं० ॥ ए ॥ यउक्तं ॥ यत्रनिःस्तृंशता खड्गे, बंधनं कुसुमेषु च ॥ मं मः प्रासादशृंगेषु, जनेषु न कदाचन ॥ १ ॥ विक्रमधन तिहां राजीयो, जे धर्मे आसक्त ॥ ल० ॥ विक्रम धन ले जेहने, नाम यथार्थ ले युक्त ॥ ल० ॥ जं० ॥ १० ॥ शत्रुने त्रास पमाडतो, यम उपम घटमान ॥ ल० ॥ मित्रनेत्रने शशी समो, आणंद देवा गण ॥ ल० ॥ जं० ॥ ११ ॥ कल्प वृक्ष सम लोकने, वैरीने वज्रमंम ॥ ल० ॥ न्यायमार्ग तिम चालतो, दीपे तेज प्रचंम ॥ ल० ॥ जं० ॥ १२ ॥ दश दिशथी आवे संपदा, जिम नई समुद्रमां सार ॥ ल० ॥ कीर्त्ति प्रगट जिम गिरिथकी, नीझरणां निरधार ॥ ल० ॥ जं० ॥ १३ ॥ नीम कांत गुण जेहना, शत्रु मित्रने गम ॥ ल० ॥ अब्धि रत्न मत्स्यादिकें, जिम तिम नृप गुणधाम ॥ ल०॥ जं० ॥ १४ ॥ यउक्तं ॥ नीमकांतनृपगुणैः, स बन्नूवोपजीविनाम् ॥ अधृष्यश्चानिगम्यश्च, या दोरत्नैरिवार्णवः ॥ ३ ॥ धर्मचारिणी तस धारणी, धरणी परें थिर जेह ॥ ल० ॥ राणी निर्मल गुणधरा, शीलालरणी देह ॥ ल० ॥ जं० ॥ १५ ॥ सर्व अंग रूप शोनतुं,पुण्य लावण्यनुं गेह ॥ ल० ॥ मूर्त्तिवंत मानुं संपदा, नूपतिने अति नेह ॥ ल० ॥ जं०॥ १६ ॥ वाणी वाणी सारिखी, तस वा हन गति खास ॥ ल० ॥ अधिकी इंद्राणीथकी, नहिं उपमा जग जास ॥ ल० ॥ जं० ॥ १७ ॥ राय राणी सुख नोगवे,बीजी ढाल रसाल ॥ल०॥ पद्म कहे श्रोता घरे, होजो मंगलमाल ॥ ल० ॥ जं० ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५३ ॥ सर्वश्लोक तथा गाथा मली ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राणी स्वपनमां, देखे अंब अनिराम ॥ कोयलडी टहुका करे, फलियो गुणनो धाम ॥ १ ॥ कोइ पुरुष ते आम्रने, वावे अंगण मुफ ॥ तस अवदात उंचे स्वरें, सांजलजे कहुं तुफ ॥ २ ॥ काल केतोइ

क जायशे, वपशे नवले ताण ॥ इम नव चार ववायशे, फल अधिकेरुं जाण ॥ ३ ॥ इणि परें स्वप्न सोहामणुं, लहि जागी परजात ॥ आवी कहे नरतारने, स्वप्ननी सघली वात ॥ ४ ॥ स्वामी आज में स्वप्न में, दीठो चूत उदार ॥ फल मांखो मुऊ तेहनुं, शुं होशे जयकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ राजा निमित्तधर पूठीने रे, मांखे तेहने एम ॥ सुत होशे शुभलक्षणो रे, वलि होशे सुख खेम रे ॥ राणी सुण सुपनानी वात, एहथी लेहशो अधिक सुखशात रे ॥रा०॥१ ॥ ए आंकणी ॥ आम्रनुं फल एणिपरें कह्युं रे, पण न लहुं वलि एह ॥ नव नव था नें ववायशे रे, जाणे केवली तेह रे ॥ रा०॥२॥ वचन सुणी एम नूपनां रे, राणी हरखित होइ ॥ गर्भ धरें सा कामिनी रे, जिम नू निधि धरे जोय रे ॥ रा०॥३॥ उपनो पुत्र जे दिवसथी रे, ते दिनथी होय वृद्धि ॥ चार प्रकार ग णिमादिका रे, पुत्र पुण्य इणविधरे ॥रा०॥४॥ अनुक्रमें प्रसव्यो पुत्रने रे, धा रणी राणीयें चंग ॥ जगतने हर्षकारी घणुं रे, संपूरण सवि अंग रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ लक्षण लक्षित देहडी रे, जस आकार पवित्र ॥ पूरव दिशि जिम अर्कने रे, प्रसवे तिम ए पुत्र रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ जन्मोत्सव करे पुत्रनो रे, राजा अतिहि उदार ॥ दानादिक आपे घणां रे, आवे वधामणी सार रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ रायघरे धन बहु वधे रे, तिम वली हर्ष वधंत ॥ स्वजन कुटुंब मली सवे रे, हर्षे नाम धरंत रे ॥ रा० ॥ ८॥ शुभदिवसें शुभ लग्न मां रे, धन कुमर अति चंग ॥ रायने कुमर देखी वधे रे, दिनदिन अति उछरंग रे ॥ रा० ॥ ए ॥ अनुक्रमें यौवन आवियो रे, सकलकला लहि तेण ॥ आश्चर्य उपजे विबुधने रे, थोडा दिनथी जेण रे ॥ रा० ॥ १० ॥ तनु नयणें करि जींतिया रें, कनक कमल कृश केश ॥ मानुं तेणें कारण कह्यो रे, जलण जलें परवेश रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ पंच धावें माता पिता रे, एक अंकथी लहे एक ॥ स्नेहने धन साथें वधे रे, जिम विद्या ने वि वेक रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ बीजनो चंद वधे यथा रे, गिरिमां चंपक डो ड ॥ नागरवेली तरुमधें रे, तिम वधे पुत्र न खोड रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ रूपें अनंगने झींपतो रे, अभ्यस्यो शास्त्र अशेष ॥ सकल कला शीखी ति णें रे, कोइ नहीं तस शेष रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ कलहंसें राजहंसलो रे,

हो कांइ न करो काणि के ॥ क० ॥ १७ ॥ वचन अपूर्व सुणी करि, चिंते विस्मित हो केम ए कहे वात के ॥ कहे रे वत्स वेहेंचे हवे, केहनी सा थें हो वेहेंची किहां जात के ॥ क० ॥ १८ ॥ तुझ विणु माहारे कुण अछे, मुझ विणुं नवि हो तुझ कोई अन्य के ॥ एटला दिन लगें नवि कह्युं, तुझ अप्रिय हो में कांइ अधन्य के ॥ क० ॥ १९ ॥ में अविनय तुझने कह्यो, तो मुखथी हो नांखी देखाव के ॥ स्नेहबद्धथको केम कहे, वहें चणनो हो अकालें आराव के ॥ क० ॥ २० ॥ सवि लखमी विलसो तु में, ए लखमी हो सघली छे तुझ के ॥ स्नेहवचन जुगतें करी, फरी ते कहे हो नवि वहेंचवुं मुझ के ॥ क० ॥ २१ ॥ आवी कहे निजनारी ने, मुझ नाइ हो कहे एणि परें वाच के ॥ तव ते त्रटकीने कहे, एह वचनें हो कहुं तुं मत माच के ॥ क० ॥ २२ ॥ वचनें तुझ ललचावी यो, धूतारा हो बोले मीठां वयण के ॥ शाहुकार परें देखीयें, तेहनी गति हो नवि जाणे सयण के ॥ क० ॥ २३ ॥

यतः ॥ खलः सत्क्रियमाणोपि, ददाति कलहं सताम् ॥ दुग्धधौतोऽपि किं याति, वायसः कलहंसताम् ॥ ३ ॥ पण जाणुं तुझ मति खसी, घर णीनुं हो जे न करे वयण के ॥ ते अंतें दुःखिया होये, ते माटें हो मानो मुझ वयण के ॥ क० ॥ २४ ॥ तुं तो नोलो थइ रह्यो, कोण मूके हो ह स्तागत जेह के ॥ जो न कहे तुझ इणि परें, केम होवे हो विश्वासनुं गेह के ॥ क० ॥ २५ ॥ तुं सुखें दास पणुं करे, हुं नवि करुं हुं दासी पणुं कोय के ॥ पण जाणीश अंतें वली, शिशु साथें हो पंचत्व ते जोय के ॥ क० ॥ २६ ॥ हुं तो पीयरमां जइ, रहेशुं सुखें हो नवि कोइनी आश के ॥ ते सुणि दयिताने कहे, थिर थाउ हो थोडा दिन खास के ॥ क० ॥ २७ ॥ एणी परें सातमी ढालमां, कहे मुनिवर हो निज वीतक जेह के ॥ पद्मविजय कहे सांभलो, आगल कहे हो वैराग्य सनेह के ॥ क० ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ २२१ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन मागे नाग ते, वलि समजावे सोय ॥ इम नारी बांधव त णे, वचनें मोलित होय ॥ १ ॥ यतः ॥ सुगुणा एह सहावो, अवगुण सिंचंति हिअय मझंमि ॥ महिलानामपि नाहो, जाणंति न जंपए जीहा

॥१॥ एम करतां एकदिन हवे, नारीनो प्रेस्यो तेह ॥ जाइ जोजाइ ऊपरें, पाम्यो द्वेष अछेह ॥ २ ॥ हीणां वचन घणां लवे, नाणे कांही लाज ॥ वृद्ध भ्रात समजावीने, कहे तें शुं कस्यो आज ॥ ३ ॥ तो पण नवि माने वचन, चिंते बांधव जेठ ॥ जगमां सहु दीठुं अछे, पण नारीथी हेठ ॥ ४ ॥ नारी कपटनी कोथली, नारी नरकनुं द्वार ॥ नारीपाशें जे पड्या, ते न तस्या संसार ॥ ५ ॥ नारीथी मुउ मुंजडो, रावण गयां दश शीश ॥ रामजी वनवासें वस्या, नहिं कहि नारि जगीश ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ मोरा साहिबा हो श्री शीतलनाथ के, अरज सुणो एक मोरडी ॥ ए देशी ॥ तिहां लगें रहे हो पुण्यवंत विवेक के, नारी लोचन जब नवि पड्यां ॥ सन्मार्गें हो इंद्रिय रहे ताव के, नारी नयण जब नाथड्यां ॥१॥ लज्जाविनय ते हो तिहां लगें रहे सर्व के, नारीलोचन जब नावीयां ॥ भ्रूचापें हो आकर्षीने जाम के, मूके शर तब सवि गयां ॥ २ ॥ यतः ॥ तावदेव कृतिनामपि स्फुर, त्येषनिर्मलविवेकदीपकः ॥ यावदेव न कुरंगचक्षुषा, ताड्यते चटुललोचनांचलैः ॥ २ ॥ सन्मार्गे तावदास्ते प्रनवति पुरुषस्तावदेवेंद्रियाणां, लज्जा तावद्विधत्ते विनयमपि समालंबते तावदेव ॥ भ्रूचापाकृष्टमुक्ताश्रवणपथजुषो नीलपक्ष्माण एते, यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिबाणाः पतंति ॥ ३ ॥ घनश्रेणी हो डुःकृत वन एह के, शोककासार पाली कही ॥ छे मराली हो नवकमलने गाम के,पाप तोयनीकज सही ॥३॥ पेटी कपटनी हो चेटी मोहराय के, विषविषय सापण कही ॥ डुःखदायक हो कही एहवी नारि के, पापिणी कामिनी तनुदही ॥ ४ ॥ यतः ॥ डुरितवनघनाली शोककासारपाली, नवकमलमराली पाप तोयप्रणाली ॥ विकट कपटपेटी मोहनुपालचेटी, विषयविषभुजंगी डुःखसाराकृशांगी ॥ ४ ॥ जूठुं बोले हो साहस अति धैर्य के, माया मूर्खपणुं घणुं ॥ अतिलोनता हो अशुचि दयाहीन के, सहजथी दोष स्त्रीना जणुं ॥ ५ ॥ यतः ॥ अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोनता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वनावजाः ॥ ५ ॥ रवि ग्रह ने हो तारा ने राह के, जाणे चार ते पंमिता ॥ नवि जाणे हो महिलानो चार के, तेहमां बुद्धि होय खंमिता ॥ ६ ॥ यतः ॥ रविचरियं गहचरियं, तारा चरियं च राहुच

हां०॥ राजा पूछे रण शुं छे तुम स्वामी जो, अम सरिखाने युद्ध होये किम ताहरे रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ मुनि कहे जिम ताहरे तिम माहरे युद्ध जो, रात दिवस नवि फीटे नित्य करवो पडे रे लो ॥ हां० ॥ कुतूहल राय बहुल धरि मनमां हर्ष जो, कहे किम युद्ध करीजें जिम वयरी रडे रे लो ॥७॥ हां० ॥ करि प्रसादने द्यो आस्वाद मुज नाथ जो, कहे मुनिवर सुण नरवर मोह छे नूपति रे लो ॥ हां० ॥ सवि प्राणीने जाणीने दिये दुःख जो, कोहलोहमय जोह परिवृत नरपति रे लो ॥८ ॥ हां० ॥ जग जीतीने करिय विदीती वात जो, तिणें अवसर हुं चारित्रनृप शरणें गयो रे लो ॥हां०॥ जिनशासननो नासन वप्र आधार जो, सेनापति सदागम माहारे थिर थयो रे लो ॥ ए ॥ हां० ॥ शम दम संयम सम्यग ने संतोष जो, कोडि गमें सुनटें करि हुं पण परिवर्यो रे लो ॥ हां० ॥ अमरषथी करुं तेह सरिस हवे युद्ध जो, महारा रे ए शिष्यथकी पण थरहर्यो रे लो ॥१०॥ हां०॥ काढी तप करवाल कराल ले हाथ जो, खंतिफलक विवेककवच अंगें धरे रे लो ॥ हां० ॥ जे संतोषनो पोष ते तुरगारूढ जो, ज्ञानादिक त्रिक तींखां शस्त्र धरे करें रे लो ॥११॥हां० ॥ मर्दव महोटो नहिं छोटो गजराज जो, अज्जव कुंतायें नेदे रिपुवर्गने रे लो ॥ अध्यवसाय शुन थाय ते रथवर जाणी जो, नावधनु यष्टि ग्रहि हणता गर्गने रे लो ॥१२॥हां०॥ बाण ते जाणी सुदेशना रूपमहंत जो, शुनसाधनना योग सुनट समवायशुं रे लो॥हां०॥ ढंढेरो सद्आगमनो तिहां वाय जो, बंदीपोसथकी होय तोस सज्झायशुं रे लो ॥१३॥हां०॥ शत्रु हणिया नवि गणिया कोइ रीत जो, बीजा पण बहु शत्रुथी मूकावीया रे लो ॥ हां० ॥ ए मुनिवर हुं सूरीश्वर मध्य गाय जो, विचरंतो इहां तुज मूकाववा आवीयो रे लो ॥ १४ ॥ हां० ॥ कहे राजा महाराजा रण शुन तुज जो, करि उपगारने स्वामी नलें पाउधारिया रे लो ॥ हां० ॥ घर पुर देश तथा वली परिजन सहीत जो, पीडा रे पामंता अमने तारिया रे लो ॥ १५ ॥ हां० ॥ ए वयरीथी नयरीलोक अशेष जो, पीड्यो ते मूकावी बीजो नवि शके रे लो ॥ हां० ॥ हे मुनिनाह अथाह करुणनंमार जो, मूकावो ए वयरी जिम मुज नवि टके रे लो ॥ १६ ॥ हां० ॥ लेइ दीक्षा ने ग्रहि शिक्षा तुम्हें राय जो, न करो ए प्रतिबंध तथा वयरी ग्रहो रे लो ॥ हां० ॥ धनवती पूत जयंत हवे निज गाण जो, धन धनवती केइ मंत्री

सामंत करी महा महो रे लो ॥ १७॥ हां०॥ सूरि सकाशें शुजआशें ग्रहि दिरक जो,धन राजर्षि तिहां संयम डक्कर पालता रे लो ॥हां०॥ थइ गियत्र गयत्र सूरिपद होय जो, जव्यांबुज सूरजनी परें अजुवालता रे लो ॥१८॥हां०॥ केइ नरिंद वरिंदनें देई दिरक जो, मासखमणनुं अणसण पालीने थया रे लो ॥ हां०॥ धनवती पण सती पाली अणसण शुद्ध जो, सामानिक सुर सौधर्मैं ते बिहुं गयां रे लो ॥ १९ ॥ हां०॥ ज्राता दोय तस गुणज्ञाता गुणवंत जो, धनदेवने धनदत्त पण जेला ऊपना रे लो ॥ हां० ॥ गुण आगर रतिसागरमां अवगाढ जो, एह प्रजाव जनमांतर संचित पुण्यना रे लो ॥ २० ॥ हां०॥ धन धनवती नेमी राजिमतीना जीव जो, सुरजव सहित कह्यो ए पहिलो जव जलो रे लो ॥हां०॥ बारमी ढाल रसाल ए पहेले खंड जो,पहेलो ए अधिकार थयो अति गुणनिलो रे लो ॥२१॥ हां० ॥ वैरागी त्यागी वडजागी जेह जो, पंडित श्रीजिनविजय गुरु शुज संयमी रे लो ॥ हां० ॥ उत्तमविजय विनेय अछे गुणवंत जो,पद्मविजय कहे वात ए मुऊ मनमां रमी रे लो ॥२२॥ सर्व गाथा ॥ ३७९ ॥ श्लोक॥३३॥ इति श्रीमन्नेमराजिमत्योः सुरसहितः प्रथमजवः समाप्तः ॥ इति प्रथमाधिकारः समाप्तः ॥१॥

॥ अथ द्वितीयाधिकारः प्रारज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमी पास जिणंदने, जास महिम विख्यात ॥ त्रीजो जव हवे दाखवुं, ते सुणजो अवदात ॥ १ ॥ जरत खेत्रमांहे अछे, गिरिवैताढ्य महंत ॥ रूपमयी लवणाधिगत, पूर्वापर जस अंत ॥ २ ॥ उंचो पणविस जोयणा, पहोलो मूल पच्चास ॥ दश जोयण तिहांथी जइ, एहवा तिहां विलास ॥ ३ ॥ दक्षिण उत्तर श्रेणि तिहां, खेचरनां रहेगाण ॥ दश योजन पहोलां अछे, तिहां सुणजो मंडाण ॥ ४ ॥ नगर पंचास दक्षिण दिशें, उत्तर दिशिमां साठ ॥ रतन कनकमय कूट नव, जिहां दीसे बहु गाठ ॥ ५ ॥ सिद्ध कूट तेहमां अछे, कोश मारेरो ऊंच ॥ कोश आयाम अध कोश पृथु, जंबूनदमइ संच ॥ ६ ॥ जिनवर चैत्य ते वर्णवुं, प्रतिमा एकशो आठ ॥ देवज्जुवन सम दीपतुं, इणिपरें सूत्रें पाठ ॥ ७ ॥ अंब बकुल चंपक खजुर, डाख चंदनवन ज्यांहिं ॥ जे मुनिवर पण देखीने, विस्मय

गरने आयुखे, पढी चंमालिणी थाय ॥ तेह्ने गर्ज रहे थकें, ऊगडो शोक्य कराय ॥ ६ ॥ शोक्यवेध अति आकरा, जेह्वां तीखां तीर ॥ जालां ·शूल तणी परें, परपर दाखे पीर ॥ ७ ॥ मारी तेह्ने कर्त्तिका, उदर विदारे शोक ॥ मरी बीजे नरकें गइ, पाप तणुं फल रोक ॥ ८ ॥ तिहांथी लइ तिर्यंचपणुं, जशे वली नरकें तेह ॥ ते संसार अनंत एम, जमशे डुःख अबेह ॥ ए ॥ प्रायें तिरिय मनुष्यना, जव करशे ते असार ॥ कहिं शस्त्रें कहिं विषथकी, किहां दग्धें होये मार ॥ १० ॥ सम्यग्दृष्टि जीवनो, जावथकी उपघात ॥ कीधा ते अनुजव्या विना, कबहीं ते नवि जात ॥११॥ यडुक्तं ॥ कृतकर्म्मक्षयोनास्ति,कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव जोक्तव्यं,कृतं कर्मशुजाशुजम् ॥१॥ कर्म कस्यां जे जे नरें,ते ते केडें धाय ॥ गाय हजार मले थके,पण वब वलगे माय ॥१२॥ यडुक्तं ॥ श्लोक ॥ यथा धेनुसहस्रेषु,वत्सो विंदति मातरम् ॥ तथा पूर्वकृतं कर्म,कर्त्तारमनुगबति ॥२॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जंबुद्वीप मकार रे ॥ ए देशी ॥ सांजली एणी पेरें वाणी रे, नरपति चिंतवे ॥ जुउ जुउ कर्म विटंबणा ए ॥ जेह्नें काजें काम रे, कीध ते इहां अबे ॥ ते तो डुःख सहे ले घणां ए ॥ १ ॥ सांजली कुमर सुमित्त रे,जणे नृपति प्रति ॥ करकज जोडी एणि पेरें ए ॥ कर्म बंधननो हेतु रे, हुं थयो तात जी ॥ न घटे मुऊ रहेवुं घरें ए ॥२॥ अनुमति द्यो मुऊ तात रे, लेउं दीक्षा हवे ॥ सर्व जीवने हितकरी ए ॥ कर्म तणो क्षय थाय रे, सुख लहे शाश्वतां ॥ कारणबंधनो नवि वरी ए ॥३॥ यतः ॥ धन्ना ते सप्पुरिसा, जे नवर मनुत्तरंगयामुरकं ॥ जम्हा ते जीवाणं,न कारणं कम्म बंधस्स ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ मुख मलकावी राय रे, जांखे एणि पेरें ॥ पुत्र अम्हें तें जीतीया ए ॥ जेह अह्मारुं कृत्य रे,ते तुम्हें आदरो ॥ वयथी तो अम्हें वीतीया ए ॥ ४ ॥ धर्म ते करवो तात रे, आगलथी कह्यो ॥ पुत्र तणो पाबल कह्यो ए ॥ सुमित्र कहे सुणो तात रे, नियम न एहमां ॥ संसार डुःख सायर लह्यो ए ॥ ५ ॥ घर बलतुं जव होय रे, तव अनुक्रम किस्यो ॥ अवसर लहि नासे सहु ए ॥ रणमां हणतां शत्रु रे, नही क्रम को कह्यो ॥ अवसर लहि मारे बहु ए ॥ ६ ॥ कहे नृप सांजल पुत्त रे, जुक्त जोगी अम्हो ॥ ते कारण व्रत अमें ग्रहुं ए ॥ जव सागरमां जाज रे, गुरु

अम्हें पामीया ॥ तेणें घर रहो तुम्हें अम्हें कहुं ए ॥ ७ ॥ प्रजा पालण काज रे, राज करो तुमें ॥ अम्हें अंतर रिपुने हणुं ए ॥ पुत्रने थापी राज्य रे आदरजो तुम्हें ॥ दीक्षा एणि पेरें अम्हें जणुं ए ॥८॥ कुमर कहे सुणो तात रे, नवि मुऊ मन रमे ॥ दुःखदायक ए जोगमां ए ॥ तो पण हुं अंतराय रे, न करुं तुम्ह प्रतें ॥ एम कहे ते सवि लोगमां ए ॥ ए॥ उचित करी सहु मुऊ रे, हमणां ने पलें ॥ जे तुम्ह मन रुचे ते करो ए ॥ राजा हर्षित होय रे, विनय ते देखीने ॥ पुत्र विनय रयणायरो ए ॥ १० ॥ सुमित्र कुमरने राज्य रे, थापे नरपति ॥ महा विजूतियें करी ए ॥ दान दीये क रे पूजा रे, जिनप्रतिमा तणी ॥ बहु लोकें नृप परवरी ए ॥ ११ ॥ केश्क सामंत साथें रे, दीक्षा पडिवजे ॥ केवली पासें विधिथकी ए ॥ राय रु षि सुग्रीव रे, विहार करे सदा ॥ पाले दीक्षा सुखकारकी ए ॥ १२ ॥ पाले राज्य सुमित्र, लघु बांधव प्रतें ॥ ग्रामादि करे आपे बहु ए ॥ पण नाव्यो संतोष रे, बाहिर नीसखो ॥ निंदा करे तेहनी सहु ए ॥ १३ ॥ देइ सन्मान ते तास रे, वली संतोषियो ॥ उत्तम नीच न होय कदा ए ॥ चित्रगति कहे मित्र रे, सघलुं तें कखुं ॥ जुवनमां करवुं ते तदा ए ॥१४॥ स्वर्गापवर्गनो हेतु रे, जिनवर धर्मनो ॥ तुं मुऊने कारण मव्यो ए ॥ वा ट जुए मुऊ तात रे,तेणें अम्हें जायशुं ॥ अवसरें वली मलशुं वव्यो ए ॥ ॥ १५ ॥ बोले गदगद वाणी रे, आंसुं रेडतो ॥ चित्रगति तमें शुं कहो ए ॥ मन चिंते माहाराय रे, मागे नूषणां ॥ तेहथी कहो केम सुख लहो ए ॥ ॥ १६ ॥ जे परदेशी लोक रे,तेहशुं प्रीतडी ॥ दुःखदायी थाये घणी ए ॥ प्रीति करीने जाय रे, पलें मले दोहिला, केवल लहे वात दुःख तणी ए ॥ १७ ॥ आंसू पडते धार रे,एणि पेरें वीनवे, मित्रजी वेहला आवजो ए ॥ विद्याधरनी साथें रे, सुखशाता तणी ॥ वात निरंतर काहावजो ए ॥१८॥ वोलाव्या एम नांखी रे, वैताढ्यें गया ॥ मात पितादिकने मव्या ए ॥ म नमां दुःख बहु आणी रे, सुमित्र प्रमुख जे ॥ अनुक्रमें सहु घर जणी व व्या ए ॥ १ए ॥ जिनवरनी करे पूजा रे, वंदे साधुने ॥ दान दीये अढल कपणे ए ॥ जेह सिद्धांतनां शास्त्र रे, सांजले विधिथकी ॥ आवडे ते नि त नित गणे ए ॥ २० ॥ उजव करे नित तेह रे, जिनवर मंदिरें ॥ रथया त्रा करे राजीयो ए ॥ साधर्मिक वात्सल्य रे,संग तेहनो करे ॥ एम जगमां

नहीं कोइ हाण ॥ पु० ॥ २७ ॥ नूपतियें तस मानी वातडी, तेहने दीधुं सन्मान ॥पु०॥ तेह जइ अनंगसिंहने कहे,हरख्यो नृप तिणें थान ॥पु०॥२९॥ एक दिन रत्नवतीने मोकली, पाणिग्रहणने काज ॥ पु० ॥ महा आमं बरें परण्यां ते बेहु, शोने घणुं युवराज ॥ पु० ॥ ३० ॥ सुख नोगवे ते संसारनां, जेम महर्द्धिक देव ॥ पु० ॥ पुण्य कर्यां ते कहिं जाये नहीं, करें वली धर्मनी सेव ॥ पु० ॥ ३१ ॥ लोक प्रशंसा करता अति घणी, दे आणंद मन नयण ॥ पु० ॥ बंदीवृंद पढे गुण जेहना, संतोषे वहु सयण ॥ पु० ॥ ३२ ॥ रत्नवतीशुं करे जिन नक्तिने, वंदे नित्य गुरु पाय ॥ पु० ॥ शास्त्र सुणे ते अति सोहामणां, दानी ज्ञानी ते थाय ॥ पु० ॥ ३३ ॥ बीजे अधिकारें सोहामणी, नाखी आठमी ढाल ॥ ॥ पु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्य संचयथकी, नित्य होय मंगलमाल ॥ पु० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ २९१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनदेवने धनदत्त बहु, लघु नाता थया तास ॥ देवलोक मांथी चवी, पुण्य प्रबल ले जास ॥ १ ॥ मनोगतिने चपलगति, नाम अने सुखकार ॥ नंदीश्वर प्रमुखें नमे, चैत्य घणां जण चार ॥ २ ॥ विहरमान जिनवर कनें, सुणे हर्ष उपदेश ॥ पदकज सेवे ऋषि तणां, नमतो देश विदेश ॥ ३ ॥ काल एणि पेरें निर्गमे, लहि एकदिन संवेग ॥ वय परिपाक जाणी करी, धरे नृप मन उद्वेग ॥ ४ ॥ राज्य ठवी तव कुंवरने, आप थयो मुनिनूप ॥ घाती अघाती क्षय करी, पाम्यो सिद्ध स्वरूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ चित्रगति विद्याधरु रे, पाले राज्य उदार ॥ गुणना नोगी ॥ पतितमात्र आवे कला रे, विद्या सिद्ध श्रीकार ॥ गु० ॥ ॥ १ ॥ आण वहे विद्याधरा रे, पुण्य प्रबल जग जास ॥ गु० ॥ रत्नवती करे पाटवी रे, अंतेउरमां खास ॥ गु० ॥ २ ॥ खेचर एक एणि अवसरें रे, मणिचूड जस नाम ॥ गु० ॥ एक दिन ते परनव गयो रे, दोय पुत्र तस ताम ॥ गु० ॥ ३ ॥ शशी सूर नामें अने रे, राजनिमित्त करे युद्ध ॥ गु० ॥ चित्रगति वहेंची दीये रे, राज्य तास अविरुद्ध ॥गु०॥४॥ युक्ति वचनें समजाविया रे, नवि समजे पण मूढ ॥ गु० ॥ कलह करे अति आकरो रे, वैर थयों अति गूढ ॥ गु० ॥ ५ ॥ युद्ध थयां तस आकरां रे, मरण लह्यां ते दोय ॥

गु० ॥ चित्रगति नृपने कहे रे, वात ते आवी कोय ॥ गु० ॥ ६ ॥ परलोकें ते बेहु गया रे, राज्य लूंटे पर आय ॥ गु० ॥ सुणी वैराग्य ते उपनो रे, म न चिंते माहाराय ॥ गु० ॥ ७ ॥ कर्म विचित्रगति देखीयें रे, विषयामिशना गिद्ध ॥ गु० ॥ मूढता जुउ प्राणी तणी रे, मदिरा होय जेम पीध ॥ गु० ॥ ॥८॥ इछा करे प्राणी घणी रे, पण इछित नवि थाय ॥ गु० ॥ ज्ञानी नवि चिंता करे रे, अज्ञानी खेदाय ॥ गु० ॥ ए ॥ यतः ॥ अन्नं चिंतियमानं, उद यपउगेण अन्नहा जायं ॥ चिंतोदय विवरीयं, मुणदो नो चिंतए नाणी ॥१॥ लखमी राखे प्राणिया रे, लंमे लखमी तास ॥ गु० ॥ दान पुण्य न करे कदा रे, पडे दुर्गति पास ॥ गु० ॥ १० ॥ केइ पुरुष इछे घणा रे, दानादिक म हा नाग ॥ गु० ॥ पुत्रादिक विघन करे रे, रोगादिक अथ लाग ॥ गु० ॥ ॥ ११ ॥ लखमीने मूकी गया रे, करे कलहो तस पुत्र ॥ गु० ॥ शुनकपरें ऊग डी मरे रे, होय जे तास कुपुत्र ॥ गु० ॥ १२ ॥ केइ पुरुष पामी करी रे, चक्रवर्त्तीनी रुद्धि ॥ गु० ॥ लंमीने षट खंमने रे, तृण परें नवि हुआ गिद्ध ॥ गु० ॥ १३ ॥ वांछे कोइ अछती सिरी रे, करता क्लेश अनेक ॥ गु० ॥ जाइ तुछ तणे घरे रे, मूके जेह विवेक ॥ गु० ॥ १४ ॥ यतः ॥ संतेवि केइ उ प्पइ, केइ असंतेवि अहिलसइ जोए ॥ चयइ परछए एवि, पत्तवो दधूण जह जंबू ॥ २ ॥ पाप करे जीव अति घणां रे, वांछे लखमी सार ॥ गु० ॥ तेतो धर्म आयत्त छे रे, केम पामे अविकार ॥ गु० ॥ १५ ॥ विषजोगी केणी पेरें करे रे, अमृत संजव सुख ॥ गु० ॥ जमता एह संसारमां रे, पामे अनंतां दुःख ॥ गु० ॥ १६ ॥ सेव्यां अकार्य एणें घणां रे, राज्य अनंती वार ॥ गु० ॥ पण नवि तृप्ति कदा लही रे, दुःखदा विषय विकार ॥ गु० ॥ १७ ॥ सिद्धि सुख एक शाश्वतुं रे, अमर अजर अकलंक ॥ गु० ॥ पूर्वे कदा नवि जोग व्युं रे, मानो एह निःशंक ॥ गु० ॥ १८ ॥ जेनी उपमा जग नही रे, राग द्वेषा दि यत्र ॥ गु० ॥ ते सुखने नवि उलखे रे, विषयासंगें अत्र ॥ गु० ॥ १ए ॥ ते माटें धन्य तेहने रे, जेणें तज्या विषय विकार ॥ गु० ॥ स्वजन कुटुंब तज्यां जेणें रे, तजे लक्ष्मी जे असार ॥ गु० ॥ २० ॥ पाम्या परमाणंदने रे, धन्य वली सुमित्र मित्त ॥ गु० ॥ यौवनमां तजि राजने रे, साध्युं कार्य सुचित्त गु० ॥ २१ ॥ वयपरिणत प्रायें थयो रे, पण नवि लंमयुं राज्य ॥ गु० ॥ पण अनित्य ए सुख अछे रे, त्यजीयें ए हवे आज ॥ गु० ॥ २२ ॥ लंमे तृण परें

देखी, कांइ जुए मनडुं चाली हो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सरोवर जल तंबोल मणि, वृक्ष निशा ने नार ॥ भोजन मेघ वाहन प्रमुख, ए सवि वल्लन सार ॥ ३ ॥ स्त्री तो पाकी बोरडी, होंश सहूनें थाय ॥ सहुने लागे वल्लहा, मूल्य विना वीकाय ॥ ४ ॥ सूरिकंत हवे हरिगयो तेहने, आणी इणहीज गणे हो ॥ प्र०॥ एहनी प्रतिज्ञा पूरण करवा, अग्नि रची ए टाणे हो ॥ प्र० ॥ ए ॥ हुं सुरकंत ते जाणो कुंअरजी, कांइ नाम ग्रहण न वि योग्य हो ॥प्र०॥ रत्नमाला ए नारी जाणो, कांइ नवि आवी मुझ भोग हो ॥ प्र० ॥ १० ॥ उत्तम पुरुषने योग्य न सुणवुं, कांइ भांख्युं में तुम्ह आगें हो ॥ प्र० ॥ माहरुं पाप गयुं सवि विलयें, कांइ तुम्ह दरिसणने रागें हो ॥ प्र० ॥ ११ ॥ विद्याधर कहे चरित्र कहो तुम्ह, कांइ मंत्रिसुत सवि भांखे हो ॥ प्र० ॥ ते सवि वात रत्नमाला तिहां, सांभली चित्तमां राखे हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ मन चिंते वरशे के नांही, कांइ गुणवंतो उपगारी हो ॥ प्र० ॥ केम आव्यो ए एणे थानक, चिंतवे एम विचारी हो ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कामदृष्टि थइ एहनी उपर, कांइ ए भरतार ते माहरो हो ॥ प्र० ॥ मानुं मूकावणना मिषथी, कांइ आव्यो परणवा त्यारो हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ नारीनां मात पिता त्यां आव्यां, कांइ वात कही सवि तेहने हो ॥ प्र० ॥ पूर्वें पण भूपतियें दीठो, कांइ आवी प्रतीत सहु केहने हो ॥ प्र० ॥ १५ ॥ रत्नमाला परणावी तेहने, कांइ अपराजित तिणवारें हो ॥ प्र० ॥ सूरिकंतने मूकाव्यो तिहां, कांइ रायने भांखे तेवारें हो ॥प्र०॥ १६॥ तुम्ह पुत्री पहोंचावज्यो त्यारें, कांइ अम्हे घेर जइयें ज्यारें हो ॥ प्र० ॥ एम कही सहु निज थानकें पहोतां, कांइ सूरिकंत हवे पारे हो ॥ प्र० ॥ ॥ १७ ॥ मूलिका मणि आपे मंत्री सुतने, कांइ वेश फेरववानी गोली हो ॥ प्र० ॥ नवि वंछे पण आपे पराणे, कांइ घर जाये बहु गुण बोली हो ॥ प्र० ॥ १८ ॥ कुंवर पण आगल हवें विचस्या, कांइ त्रीजे ए अधिकारें हो ॥ प्र० ॥ पद्मविजय कहे चोथी ढालें, कांइ पुण्यें कष्ट विदारे हो ॥प्र०॥ १ए॥

॥ दोहा ॥

॥ तिरषा लागी वाटमां, बेठा अंबनी छांय ॥ उदक गवेषणने गयो, मंत्रीसुत तिण ठाय ॥ १ ॥ जल लेइने आवीयो, तिणहिज थानक तेह ॥ नवि देखे ते कुमरने, ए आश्चर्य अछेह ॥ २ ॥

सवि मलि आव्या, ताहरा गुण मनमांही नाव्या ॥ गु० ॥२७॥ देश कदं बनो स्वामी एह, भुवनचंद नामें गुणगेह ॥ गु० ॥ पुत्रादिकथी ए परिवरीयो, पूर्ववधू तिलक ज एह करियो ॥गु०॥ २८ ॥ सुभटचरित्रें करीने दूर, रिपुदलने जस दिसे गयो नूर ॥ गु० ॥ दक्षिण देशपति एह राय, समरकेतु प्रणमे सहु पाय ॥ गु० ॥ २९ ॥ वरुणं नाम पश्चिम दिशि राय, जेहना गुण दश दिशिमां गवाय ॥ गु० ॥ सुभट गुणी दानी मानी होवे, जस नामें रिपु दल सवि रोवे ॥ गु० ॥ ३० ॥ उत्तर दिशिनो नाथ कुबेर, नृप गुणमांही अनुत्तर मेर ॥ गु० ॥ सोमप्रभ नामें पण दीपे, सूरतेजथी रिपुबल झीपे ॥ गु० ॥ ३१ ॥ नाम धवल ए राजा रूडो, कृष्ण करे रिपु बल तिहां चूंमो ॥ गु० ॥ शूर भीम आदि बहु राजा, देखावे बेहु पक्षमां हे ताजा ॥ गु० ॥ ३२ ॥ एह धनंजय सुजस ले सार, कलिंग शूरसेन मंगल धार ॥ गु० ॥ खेचरपति मणिचूड ए राय, विद्या सिद्ध घणी जस थाय ॥ गु० ॥ ३३ ॥ रत्नचूड मणिप्रभ वली जाण, सुमनस विद्याधरमां प्रमाण ॥ गु० ॥ शूरसेन सुसेन राजान, अमितप्रभने दिये बहु मान ॥ गु० ॥ ३४ ॥ रूप सौभाग्य ने तेज वखाणे, वर कुमरी जो तुझ मन जाणे ॥ गु० ॥ एह राजाना पुत्र युवान, कला बहोंत्तेर वली रूपनिधान ॥ गु० ॥ ३५ ॥ त्रीजे ए अधिकारें भांखी, नृप वर्णव कथा बहु जन साखी ॥ गु० ॥ आठमी ढाल अधिक उल्लासें, पद्मविजय कहे शुभ अभ्यासें ॥ गु० ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ २७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी दृष्टि करे यदा, भालां परें अति तीक्ष्ण ॥ कुमर हृदय जेम कमल दल, शल्य सहित थयां वीक्ष ॥ १ ॥ अबला थया अबलालयें, सबला सबला राय ॥ पण वामा वामांग जस, नूषे तें वर थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ थारा मोहला उपर मेह, झबूके वीजली हो लाल ॥ झबूके वीजली ॥ ए देशी ॥ एणि अवसर तिहां प्रीति, मती कला वरसती हो लाल ॥म०॥ गीत विचार करंती, पूर्वपक्षें सती हो लाल ॥ पू० ॥ तिहां कोइ कुमरना मुखथी, वचन नवि नीकल्युं हो लाल ॥ व० ॥ आवी गले ग्रहे तेम, मन सर्वनुं संकल्युं हो लाल ॥ म० ॥ १ ॥ कोइक स्खलना बोलतां, पामे प्रा

णिया हो लाल ॥ पा० ॥ कोइक मौन धरी रह्या, मानुं अजाणीया हो लाल ॥ मा० ॥ कोइक बोले असंबद्ध, लोक हसावता हो लाल ॥ लो० ॥ पण कोइ उत्तरपक्ष, करण नवि पावता हो लाल ॥ क० ॥ २ ॥ सर्व निलीन थया जब, प्राणी बक परें हो लाल ॥ प्रा० ॥ तब हसता देइ ताली, कहे केइ इणिपरें हो लाल ॥ क०॥ जो जो सरस्वती नारी, तेणें स्त्री पक्ष करे हो लाल ॥ ते० ॥ कोइ कहे जीत्या नारी, तोही जीवित धरे हो लाल ॥ तो० ॥ ३ ॥ कोइ कहे त्रिया राज्य, ए कारण जाणीयें हो लाल ॥ ए० ॥ एणिपरें थयो कोलाहल, ते जनवाणियें हो लाल ॥ते०॥ एम असंबद्ध देखी, नृपति मन चिंतवे हो लाल ॥ नृ० ॥ कृष्ण करी मुख दृष्टि, नृनाग समी ठवे हो लाल ॥ नृ० ॥ ४ ॥ गुण सवि जगमां आय, रह्या शुं एटला हो लाल ॥ र० ॥ राजकुमर मलिया बे, बहोत ते केटला हो लाल ॥ ब० ॥ विधि पण नूल्यो वात, ए करतां शुज परें हो लाल ॥ ए० ॥ प्रीतिमती पति नवि, निपजाव्यो कोइ घरें हो लाल ॥ नि० ॥ ५ ॥ अथवा खिन्न थयो विधि, तिणें एह सारिखो हो लाल ॥ ति० ॥ नवि निपजावी शक्यो एम, करुं मन पारखो हो लाल ॥ क० ॥ मंत्री कहे सुण स्वामी, विषाद न कीजीयें हो लाल ॥ वि० ॥ उद्यम करतां इछित, फल सवि लीजीयें हो लाल ॥ फ० ॥ ६ ॥ राजकुमर असंख्य, मल्या इहां तुम घरे हो लाल ॥ म० ॥ नवि लहियें कोइ जीत्यो, न जीत्यो नली परें हो लाल ॥ न० ॥ एम कही करे उद्घोषणा, सुणो सवि राजीया हो लाल ॥ सु० ॥ खेचर कुमार प्राकृत नर, जे गुण गाजिया हो लाल ॥ जे० ॥ ७ ॥ मुज पुत्री जे जीतशे, तस परणावशुं हो लाल ॥ त० ॥ युक्तिसंगत उद्घोषणा, सांजली नावशुं हो लाल ॥ सां० ॥ मन चिंते अपराजित, कुंवर ए स्त्री अछे हो लाल ॥ कुं० ॥ एहनी साथें जीत,थए परणशुं पछें हो लाल ॥ थ० ॥८॥ नवि घेटानी साथें के,गजने रण घटे हो लाल ॥ ग० ॥ नारी स्वनावें दोष, संयुत ते नवि मटे हो लाल ॥सं०॥ जो न करुं विवाद तो, ए पण मद धरे हो लाल ॥ ए० ॥ शास्त्र अलीक होय नरपक्ष, हारे एणी परें हो लाल ॥ हा० ॥ ए ॥ एम चिंतवीनें आवे, सहु मुख आगलें हो लाल ॥ स० ॥ रूपांतर रह्यो तोहि, शोने लावण्यबलें हो लाल ॥ शो० ॥ अभ्रपटल अंतरित, शशी पण उ

रक शोधन नृप करे, करे अमारीना घोष रे ॥ दश दिन सघला देशमां, करता बहु जन पोष रे ॥ १५ ॥सां०॥ सघले जिनने देहरे, पूजा विरचे जिनरायो रे ॥ दंम निवारे नूपति, दश दिन नवि कर थायो रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ कुंअर तणे पुण्यें करी, मणि कनक ने निधानो रे ॥ सुर आवी तस घर नरे, प्रगट पुण्य अमानो रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ डुंडुहि वाजे आकाशमां, नाचे रमणीयो हारो रे ॥ पहेरे नूषण अति अनिनवां, बहु मूलां बहु नाखो रे ॥ ॥ १८ ॥ सां० ॥ पुष्फ तंबोल प्रमुख घणां, आपे ने वली लेय रे ॥ नोजन पान करे सुखें, प्रमुदित नगरनां लोय रे ॥ १९ ॥ सां० ॥ एम दशदिन सुविनूतिथी, हर्षित राय करंत रे ॥ बारमे दिन अनिधा नलुं, शंखकुमार ठवंत रे ॥ २० ॥ सां० ॥ स्नान मज्जन मंमन वली, क्रीडा ने वली अंक रे ॥ पंच धाव्यें पालीजतो, वधतो कुंअर निःशंक रे ॥ २१ ॥ सां० ॥ वयरी मित्र घरे नित वधे, उपघात ने वली मोद रे ॥ नृप घर कुंअर वधे घणुं, उपजे सहुने विनोद रे ॥ २२ ॥ सां० ॥ लेखाचारजनी कने, मूके नणवाने राय रे ॥ बुध पण कुंअर देखीने, मनमां हर्षित थाय रे ॥ २३ ॥ सां० ॥ व्याकरण निमित्त गणित नण्यो, आगम मंत्र ने तंत्र रे ॥ विद्या वैदक शास्त्रने, अलंकार छंद यंत्र रे ॥ २४ ॥ सां० ॥ ज्योतिष गारुड काव्यने, नाटिक मदननां शास्त्र रे ॥ महा नारत धनुषकला, हस्ती शीक्षा वली वस्त्र रे ॥ ॥ २५॥सां०॥ धातुर्वाद ने द्यूतनी, लक्षण पुरुष ने नार रे ॥ कागरुतादिक शकुनना, अंग विद्या मन धार रे ॥ २६ ॥ सां० ॥ नाटक गीतादिक कला, पुरुषनी कला बहोंतेर रे ॥ दिन थोडामां शीखियो, थयो बृहस्पति पेर रे ॥ ॥ २७ ॥ सां० ॥ ए चोथा अधिकारनी, पहेली ढाल रसाल रे ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, होवे मंगलमाल रे ॥ २८ ॥ सां० ॥ सर्वगाथा ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन प्रारंन्यो हवे, पसरंतो कंदर्प्प ॥ तरुणी हृदय तपावतो, इब्बा ज्वाल प्रसर्प्प ॥ १ ॥ विमलबोध पण ऊपनो, गुणनिधि मंत्री पूत ॥ मतिप्रन नाम ने जेहनुं, जे राखे घरसूत्र ॥२॥ पांशुक्रीडा साथें नण्या, यौवन पाम्या साथ ॥ बीजा पण राजपुत्रशुं, रमतो हाथो हाथ ॥३॥ पुर उद्यानें जायतां, नाखो बोले एम ॥ हर्ष धरी उत्साहशुं, दाखे बहु विध प्रेम ॥ ४ ॥

हारो कंत ॥ ला० ॥ ६ ॥ मुऊ अर्थें दुःख बहु सह्युं रे, जुउ ए कर्म वि चित्त ॥ ला० ॥ पूरवथी वली प्रीतडी रे, अधिकी हुइ सुविदित्त ॥ ला० ॥ ७ ॥ सुख नोगवे तिहां दंपती रे, दिन दिन अधिके नेह ॥ ला० ॥ रा ज्य देइ हवे नानुने रे, पाम्यो पंचत्व तेह ॥ ला० ॥ ८ ॥ नानुने हवे सरस्व ती रे, नोगवे नोग रसाल ॥ ला० ॥ एक दिन सरस्वती अंगमां रे, उपनो गद असराल ॥ ला० ॥ ए ॥ दाघज्वर अति आकरो रे, देखाडे बहु वैद्य ॥ ला० ॥ नरपति द्रव्य आपे घणुं रे, पण नवि टाले सद्य ॥ला० ॥१०॥ वैद्यें तजी ते नारीने रे, नृप मन चिंता थाय ॥ ला० ॥ चिंतवे जीव तां एहने रे, मरण जो महारुं थाय ॥ ला० ॥ ११ ॥ तो दुःख देखुं हुं नहिं रे, विरह ते दुःख दातार ॥ ला० ॥ क्षण एक हुं नवि रहि शकुं रे, ए मुऊ प्राण आधार ॥ ला० ॥ १२ ॥ हवे मुऊ झंपा रुयडो रे, हवे जीवे शुं होय ॥ ला० ॥ प्राणप्रिया मरवा पडी रें, ए सम अवर न कोय ॥ ला० ॥ १३ ॥ सातमे मालें ते चढयो रे, करवा जीवितत्याग ॥ ला० ॥ चारण मुनिवर तिणे समे रे, दीठो ते महानाग ॥ ला० ॥१४॥ मुनि कहे तुं शुं करे रे, आप तणो वध एम ॥ला० ॥ बालजनें जे आचर्युं रे, ते करीयें कहो केम ॥ ला० ॥ १५ ॥ अविधि मुआने सुख नहिं रे, परनव पण हो य दुःख ॥ ला० ॥ तव कहे मुनिवर सांनलो रे, मुऊने नहिं इहां सुख ॥ ॥ ला० ॥ १६ ॥ शुं करुं स्वामीजी ते कहो रे, नवि सहेवाये वियोग ॥ ला० प्राण धरी हुं नवि शकुं रे, उपनो सरस्वती रोग ॥ ला० ॥ १७ ॥ तव क हे मुनिवर एणि परें रे, धर्म करो तुम्हें राय ॥ ला० ॥ धर्म सकल दुःख त्रायको रें, बाल युवा वृद्ध थाय ॥ ला० ॥ १८ ॥ देव ते अरिहा आदरो रे, रागद्वेषादिक मुक्त ॥ ला० ॥ पंच महाव्रत पालतां रे, गुरु सु सा धु उक्त ॥ ला० ॥ १ए ॥ यतः ॥ रागाइ दोस रहिउ, चउत्तीसाइसय संजुउ धीरो ॥ परउवगारं मिरउ, देवो महएरि सो हवइ ॥१ ॥ अवद्यमुक्ते पथि यः प्रवर्त्तते, प्रवर्त्तयत्यन्यजनं च निःस्पृहः ॥ सएव सेव्यः स्वहितैषिणा गुरुः, स्वयं तरंतारयितुं क्षमः परम् ॥ २ ॥ तत्त्वग्रहो जिन नांखीयो रे, पापनां ठा ण अढार ॥ ला० ॥ विरति करो तुम्हें तेहनी रे, एणि परें धर्म उदार ॥ ॥ ला० ॥ २० ॥ धर्म ते सार संसार बे रे, जग आधार ए धर्म ॥ ला० ॥ सद्गति पहोंचाडे नलो रे, बांधे नवि ते कर्म ॥ला०॥ २१ ॥ एणि परें उ

देश संजालीरे, अंगीकरे तेह राय ॥ ला० ॥ सरस्वती पासें लावीयो रे, नू पति ते ऋषिराय ॥ ला० ॥ २२ ॥ वंदना करी ते नावथी रे, देश विरति क रे अंग ॥ ला० ॥ पाप विलय गयां तेहनां रे, रोग गयो मुनिसंग ॥ ला० ॥२३॥ राज्यसिरी एम नोगवे रे, वृद्ध थया नानुराय ॥ ला० ॥ राय राणी मन चिंतवे रे, दीक्षा लिउं जिनराय ॥ ला० ॥ २४ ॥ पुत्रने राज्य थापी करी रे, सुगुरु तणे पायमूल ॥ ला० ॥ दीक्षा आदरे राजीयो रे, पाले व्रत अनुकूल ॥ला०॥ २५॥ साधवी पासें सरस्वती रे, लिये दीक्षा शुनयोग ॥ ला० ॥ गीतारथ नानु थयो रे, देई गुरु उपयोग ॥ ला० ॥ २६ ॥ आणा एकाकी तणी रे, यद्यपि शास्त्रें निषिद्ध ॥ला०॥ तो पण शास्त्र जाणी करी रे, तेहने आणा दीध ॥ ला० ॥ २७ ॥ ते नानु हुं जाणजे रे, आ बेठो तुज पास ॥ ला० ॥ मरण लहंत नृपवच सुणी रे, तो किम जिन धर्मवास ॥ ला० ॥ २८ ॥ राज्य पालत कुण एणि परें रे, श्रेय परंपरा एम ॥ ला० ते कारण तुं धर्मने रे, कर वली कांइक नेम ॥ ला० ॥ २९ ॥ बाल मरण करी वेगलुं रे, पामे जेहथी श्रेय ॥ ला० ॥ चंद्र कहे तव मुनि प्रतें रे, द्यो मुज जेह आदेय ॥ ला० ॥ ३० ॥ ए चोथा अधिकारनी रे, नांखी छठी ढा ल ॥ला०॥ पद्मविजय कहे जिनतणा रे, धर्मथी मंगलमाल ॥ ला० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंद्र कहे सुणो स्वामी जी, अनवस्थित चित्त मुज ॥ मित्र वियोगी धन विरहो, नाखुं विनयें तुज ॥१॥ ते कारण किरपा घणी, करि आपो मुज तेह ॥ स्वस्थ चित्त जेम माहरुं, थाये धर्म सनेह ॥ २ ॥ वली विशेष अवसर लही, आदरशुं व्रतनार ॥ तव मुनिवर एणि परें कहे, शीखो तुम्हें नवकार ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी चोपाई ॥ सांजल तुं हवे चंद्रकुमार, नाखुं फल हुं श्रीनवकार ॥ एहनां पद नव संपद आठ, जपतां नासे कर्मकुकाठ ॥ १ ॥ लघु अक्षर एकसठि वखाण, एहमां सात अक्षर गुरु जाण ॥ सर्व मलीने अडसठ था य, सडसठ पण कोइक कहेवाय ॥ २ ॥ होइ मंगल माने ले जेह, पण अ युक्त नाख्युं ले एह ॥ निशीथचूर्णिमांही ए कह्युं, प्रवचन सार उद्धारें ल ह्युं ॥ ३ ॥ कोइ कारण एहनी चूलिका, आराले शिवतरु मूलिका ॥ कमल बत्रीश पांखडीनुं करे, एक एक तिहां अक्षर नरे ॥४॥ ते नरतां बत्रीस न

राय, पण मोमो मध्य खाली थाय ॥ हवइ मंगल कहेतां तेह,कंणो पण पूरो थाय एह ॥ ५ ॥ बीजे पण बहु ग्रंथें सुण्युं, गुरु परंपरायें पण मुण्युं ॥ एक नवकार कहे शुभ भाव, सागर सातनुं फेडे पाव ॥६॥ जो नमो अरिहंताणं गणे, पाप सागर पच्चासनुं हणे ॥ जो संपूर्ण गणे नवकार, पांचशें सागर पापनिवार ॥७॥ यतः ॥ नवकार इक्क अरकर, पावं फेडेइ सत्तअयराइं ॥ पन्नासं च पएणं,सागर पणसय समग्गेणं ॥१॥ आठ कोडी ने वलि लख आठ, आठ सहस अठ सत वली आठ ॥ गणतां शाश्वत थानक लहे, ए अधिकार जिनेश्वर कहे ॥ ८ ॥ यतः ॥ अठेवय अठसया, अठसहस अठ लरक कोडीउ ॥ जो गुणइ भत्तिजुत्तो, सो पावइ सासयं ठाणं ॥ २ ॥ शिवकुमार ने वली श्रीमती, श्रीजिनदास श्रावक शुभमति ॥ एहनी आ भव पूगी आश, परभव पण नवि थाय निराश ॥ ए ॥ चंद्रपिंगल हुंमक बिहु चोर, जे करतां नित्य पाप अघोर ॥ ते पण सुरपद पाम्या वही, महिमा ए नवकारनो सही ॥१०॥ श्रीश्रीपाल नरिंद वली जुउ, ए नवपदथी नीरोगी हुउ ॥ एम शास्त्रें कह्यां बहु विरतंत, ते कहेतां नवि आवे अंत ॥ ११ ॥ जंबुद्वीप अनाहत देव, पूरव भव करी नव पद सेव ॥ ए सवि श्रुतखंधमांही रह्यो, महिमा नवि जाये कोइ कह्यो ॥१२ ॥ एहज चौद पूरवनो सार, ग्रंथें भाख्यो श्रीनवकार ॥ चौद पूरवना अरथ जे कह्या, पहेला पदमां अरिहंत लह्या ॥ १३ ॥ ते अरिहंत पण साधे सिद्ध, बीजा पदमां तेह प्रसिद्ध ॥ सूत्र तणा करता गणधरा, ते त्रीजे पदें सूरिवरा ॥१४॥ सूत्र तणा कह्या पाठक जेह, चोथा पदमां भाख्या तेह ॥ सूत्रमांही कह्यो जे निरुपाध, मारग साधे तेहज साध ॥ १५ ॥ तिणें नवकार पूरवनो सार, जगत जीव सहुने हितकार ॥ चौद पूरवी गरढा थया, सूत्रारथ उपयोगी न भया ॥ १६ ॥ अंत अवस्थायें श्रीनवकार, तेहने पण होवे आधार ॥ ए नवकार समो नहिं मंत्र, केठे सहु मणिमंत्र ने यंत्र ॥ १७ ॥ खलने बोलण योग्य शुं नहिं, भूख्यो शुं नवि खाये ग्रही ॥ व्यापारीने नहिं परदेश, वज्र अभेद्य किस्युं सुविशेष ॥ १८ ॥ शी वस्तु जगमां छे जेह, जे नवपद साधे नहिं तेह ॥ ऋद्धि वृद्धि दिये आ भव घणी, अनुक्रमें पदवी मोक्षज तणी ॥ १ए ॥ एम सांभलीने चंद्रकुमार, भक्तें शीखे श्रीनवकार ॥ विचरयो मुनिने करी प्रणाम ॥ अनुक्रमें पहोतो कुसुमपुरें गाम ॥ २० ॥ मांमयो

तिहां चंडें व्यापार, फलीयो तेहने श्रीनवकार॥ माहा ऋद्धिवंतो ते थयो, एक दिन निमित्तने पूछण गयो ॥२१॥ माहारा मित्र जीवे के नहिं,मुऊ मल शे के छे वली कहीं ॥ कहे निमित्तियो दिन थोडले,त्रणे मित्र मलशे जोडले ॥२२॥ अन्य अन्यपुरथी आवशे, ते पण ऋद्धि घणी लावशे ॥ एम सांजली ने दीधुं दान, निमित्तियो पहोतो निजथान ॥२३॥ हवे थोडा दिनमांहे तेह, नानु शिव नें कृष्ण सनेह ॥ बहु ऋद्धि आव्या सहु मल्या, सुख डुःख नी वातोमां नल्या ॥ २४ ॥ निज निजनी जे वातो थइ, नांखे जेह अती तें गइ ॥ चार मित्र हवे रहे सुखवास, विषयसुख नोगवे आवास ॥२५॥ ते सहु नइकनावी थया, श्री नवकार शीखण सज थया ॥ चंडकुमार नुं सुणी चरित्र,मनमां नावे कर्म विचित्र ॥ २६ ॥ ए चोथे अधिकारें कही, ढाल सातमी एणि पेरें लही ॥ पद्मविजय कहे जपो नवकार, जेहथी होवे जयजयकार ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ २२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु धन पाम्या तिणपुरें, एकदिन बेठा चार ॥ करे विचार ते एणि परें, लखमीनो नहिं पार ॥ १ ॥ ते धन पामे पण किस्युं, जो रहे सजन वियोग ॥ तस लखमी विफली लहो, अन्यदेशमां नोग ॥ २ ॥ यतः ॥ किं ताए सिरीए, सुंदरी विजा होइ अणदेसंमि ॥ जाइ न मित्तेहि समं, जाय न दिठ्ठा अमित्तेहिं ॥ १ ॥ निज देशें जावा नणी, सम्मत कीध विचार ॥ प्रवहण नरी चाल्या हवे, सायर पाम्या पार ॥ ३ ॥ वेलाउलमां ऊतरी, वेची वस्तु अनेक ॥ करियाणां अन्यदेशने, योग्य नरे सुविवेक ॥ ४॥ जयपुर नगर नणी हवे, थलमारग करी जाय ॥ कोइक थानक ऊतर्या, बेठा सहु समवाय ॥ ५ ॥ सामग्री नोजन तणी, करी अनेक प्रकार ॥ नोजन करवाने सहु, बेठा चित्त उदार ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ बे बे मुनिवर विहरण पांगुर्या जी ॥ ए देशी ॥ एणि अवसर मुनिवर तिहां आवीया जी, धरता निर्मलध्यान रे ॥ पंच माहाव्रत पालता जी, चरण दर्शन धरे ज्ञान रे ॥ १ ॥ एणि०॥ वेयावच्च करे मुनि दश नेदथी जी, संजम सत्तरे प्रकार रे ॥ दशविध साधुधर्म अजुवालता जी, ब्रह्मचर्य गुप्तिना धार रे ॥ २ ॥ एणि०॥ बार नेदें तप आदरे जी, क्रोध मान माया

॥ ढाल अगियारमी ॥

॥ लाहलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ एम कही अनंग देव, युवती व शें हेव ॥ आज हो ॥ लांबो रे घुंघट करीने ते नीकल्यो रे ॥ १ ॥ शिबि कायें बेठो तेह, अनुक्रमें पहोतो गेह ॥ आ० ॥ मंगलना तिहां तूर घणां वाजी रह्यां रे ॥ २ ॥ नाटक होवे द्वार, गावे बहुजन बार ॥ आ० ॥ प व्यंकें जइ सूतो ते थाकापरें जी ॥ ३ ॥ आवी तिणे ठाम, रतिमाला ए णि नाम ॥ आ० ॥ रतिसुंदरीना मामानी पुत्री अने रे ॥ ४ ॥ विवाह अर्थे तास, विजयपुरथी निज पास ॥ आ० ॥ तेडी ते अनंगदेव पासें उपविशे जी ॥५॥ रतिमाल कहे एम, बहिन सांभलो तुझ नेम ॥ आ०॥ रतिवर्द्धन मूकीने अन्य पुरुष तणो रे ॥ ६ ॥ रतिवर्द्धन तुझ नांहि, मली यो चोरीमांहि ॥ आ० ॥ तो पण तुं पुण्यवंतमांहि शिरोमणी रे ॥ ७ ॥ वल्लभ साथें मेलाप, करी टाव्यो संताप ॥ आ० ॥ बहु दिन लगें ते आ तम निज सफलो कर्यो रे ॥ ८ ॥ पुण्यहीन हुं नार, ते पण न थयुं सा र ॥ आ० ॥ बहेनी रे सांभल तुं म्हारी वातडी रे ॥ ए ॥ गजथी राखी मुझ, हरि मुझ हृदयनुं गुझ ॥ आ० ॥ बहिनी रे गयो खबर न तेहनी को पडी रे ॥१०॥ खोली नगरी तेह,गहुंमां कंकर रेह ॥आ०॥ लीधो रे न वि कोइ उपायें वालहो रे ॥ ११ ॥ तेह अनंगदेव ताम, करे हुंकार ते काम ॥ आ० ॥ वातो रे सघली कहे ते उठी करी रे ॥ १२ ॥ लाज करी ते दूर, पुरुषवेष करे तूर ॥ आ० ॥ बांहडी रे जालीने उगाडे तदा रे ॥१३॥ लोक मल्यां बहु बार, गीत वाजित्र प्रकार ॥ आ० ॥ नाशी रे जइयें पश्चि म द्वारें करी रे ॥ १४ ॥ शब्दथी उलखी तास, मान्युं वचन ते खास ॥ आ० ॥ नाठा रे ते बिहुं जण थइने एक मना रे ॥ १५ ॥ विश्वपुरें गयां तेह, चार मल्या ससनेह ॥ आ० ॥ सकल साथ तिहां भलो थयो तिणें समे रे ॥ १६ ॥ मांड्यो तिहां व्यापार, पाम्या द्रव्य अपार ॥ आ० ॥ तिहां प्रासाद बनावीने रहे सुखभरे रे ॥ १७ ॥ नाशिकपुरथी स्वजन्न, तेडे रतिवर्द्धन ॥ आ० ॥ ब्रह्मस्थलथी अनंगदेव तेडे कुटुंबने रे ॥ १८ ॥ चंद्रसेन नामें राय, सुंदरजीव ते थाय ॥ आ० ॥ राज्य पाले विख्यात वि क्रम न्यायें करी रे ॥१९॥ राजा साथें तास, हुउं व्यापार विलास ॥ आ०॥ स्नेह वध्यो पूरवभवना अभ्यासथी रे ॥ २० ॥ रतिसुंदरी बीजी नारी,

रतिमाला अवधारी ॥ आ० ॥ तेहनें पण राय आदर मान दे अति घणो रे ॥ २१ ॥ पांच जणाने प्रीत, हुइ जगमां सुविदित्त ॥ आ० ॥ एक दिनें रे तिहां केवलनाणी समोसस्या रे ॥ २२ ॥ जइ सहु केवली पास, सांजले धर्म उल्लास ॥ आ० ॥ पामी रे अवसरें ते पूछे नृपति रे ॥ २३ ॥ उपना सूदे गाम, किम छे स्नेह उद्दाम ॥ आ० ॥ ज्ञानी रे तव चंद्रादिक नो जव कहे जी ॥ २४ ॥ जातिसमरण पाम, वाणी सुणी तिणें गम ॥ आ० ॥ पांचे रे जणने वैराग्य ते उपनो रे ॥ २५ ॥ मुनिनें दान प्रजाव, कर्म हुआं हलुजाव ॥ आ० ॥ राज्यें रे थापे निज सुतने राजीयो रे ॥ २६ ॥ रतिवर्द्धन अनंगदेव, निज निज सुतने हेव ॥ आ० ॥ थापे रे कुटुंब तणा सवि जारने रे ॥ २७ ॥ लीये दीक्षा सहु तेह, केवली पास सनेह ॥ आ० ॥ करता रे सहु उग्र तपस्या ते जवें रे ॥ २८ ॥ घातिकर्म करी नाश, केवल ज्ञान विलास ॥ आ० ॥ ते जवमां सहु सिद्धि वस्या सुख शाश्वतां रे ॥ २९ ॥ रतिप्रज कहे एणि जांत, शंखकुमरने वात ॥ आ० ॥ सांजली रे मनमां घणुं शंख खुशी थयो रे ॥ ३० ॥ एम चोथे अधिकार, ढाल थइ अगियार ॥ आ० ॥ जांखे रे मुनि पद्मविजय सुणो जविजना रे ॥ ३१

॥ दोहा ॥

॥ मतिप्रज नाम साचुं कह्युं, एह कहे अवदात ॥ विसर्ज्यो तव मंत्रि सुत, आप निद्रामां थात ॥ १ ॥ मध्यरात्रिने अवसरें, रुदननो शब्द सुणंत ॥ जे सुणी करुणा उपजे, दूरथकी आवंत ॥ २ ॥ कौतुकनो लीधो तिहां, करतो खड्ग सहाय ॥ शब्द तणा अनुसारथी, ते चाल्यो उछाय ॥ ३ ॥ अनुक्रमें पहोतो शुज परें, दीठी तिहां एक नार ॥ मध्यम वयें आवी अछे, करे विलाप दुःख धार ॥ ४ ॥ कहे कुमर माता सुणो, धीरा थाउ एवार ॥ संजलावो दुःख तुम्ह तणुं, करीयें तास विचार ॥ ५ ॥ उत्तम पुरुष जाणी करी, कहे सांजल वत्स वात ॥ जाग्यहीन हुं अति निपट, शिथिल थयुं मुज गात ॥ ६ ॥ रतननिधान देखावीने, दैवें ते हरी लीध ॥ सांजल कुंअर ते हुं कहुं, मुज वंछित नवि सिद्ध ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ पीउजी पीउजी नाम, जपुं दिन रातीयां ॥ पीउजी चले परदेश, तपे मोरी छातीयां ॥ ए देशी ॥ अंगदेश चंपा नगरी, अति दीपती ॥ विपु

लपणाथी मानुं, आकाशने झींपती ॥ ते नगरीनो वर्णन, केटलो कीजीयें ॥ वासुपूज्यना पंच, कल्याणक लीजीयें ॥ १ ॥ नाम जितारि ते, नगरीनो राजीयो ॥ तेज प्रताप महिमाथी, जे जग गाजीयो ॥ चोर चरड ने नवि, सहेवाये तेजथी ॥ मित्र प्रजा सहु लोक,बोलावे हेजथी ॥ २॥ जे अहंकारी शत्रु,सुनटने देखवा ॥ माया विनीत गुण,आह्लादन लेखवा ॥ जस लेवाने लो भी, परधनें पांगलो ॥ परस्त्री देखण जेह, कह्यो ले आंधलो ॥३॥ कीर्त्तिमती तस राणी, गुणखाणी कही ॥ शुन सुपने सूचित, गर्भे पुत्री रही ॥ रोहणा चल परवतमां, रतन शुचि जीसी ॥ तनुकांतें अजुआल,करे जे दश दिशी ॥४॥ जनम समय वधामणुं, महामोछव करी ॥ जितारि नृप जसमती, तस अभिधा धरी ॥ गिरुआ लोकने पर, उपगारनी बुद्धि परें ॥ सज्जननी सु खदायक,गोठडी ज्युं धरे ॥५॥ तिणपरें दिन दिन वधती,नागर वेलडी ॥ अ ण अन्यसित तस आवी, कला सुखवेलडी ॥ अनुक्रमें यौवन आव्युं, ते नारी तणुं ॥ महिमामात्र ते यौवन हुं, किणिपरें नणुं ॥६॥ तो पण सां नल हुं, तुझने कांयक कहुं ॥ मानुं जस पद अंगुली, अलतापणें ल हुं ॥ नहमणि किरण परें नह, किरण ते जाणीयें ॥ नाद मधुर कल हंस, परें वखाणीयें ॥ ७ ॥ कमलिनीनाला उपम, जंघा जेहनी ॥ चा लती थल कमलिनी परें, सोहे मोहनी ॥ नाभिमंमलविपुल, मृदु अति सोहती ॥ मदन तणी मानुं शय्या, जन मन मोहती ॥ ८ ॥ मुक्ताफल ना हार, थकी विराजती ॥ कुचफल कठिण विशाल, कलशपरें त्राज ती ॥ कर पदनां तल जेहनां, कमल समां कह्यां ॥ श्वासोछ्वास सुरनि घणुं, चंदन परें लह्या ॥ ए ॥ बोले वचन ते वीणा,वेणुनी परें ॥ अधर अरुण जिम कुंकुम, राग वदन धरे ॥ अणमातुं मानुं सरलपणुं, जस हृ दयेंवसे ॥ आवी रह्युं नासिकायें, सरल पणे नवि वचें ॥ १० ॥ नेत्र क मलनां पत्र, बन्यां शुन श्रवण ते ॥ जास कपोल ज्योत्स्नायें, पखाले वयण ते ॥ पंचमी चंड्परें शुन, नाल ते धारती ॥ वाहु लता मानुं कुटिल, पणाने वारती ॥ ११ ॥ मालती कुसुमने केतकी, सहित वे णी नली ॥ मृदु स्निग्ध कुटिल, कृष्ण पणुं जिहां वली ॥ कनक कां ति जस देह, घणुं जोवा जिसी ॥ जो सुरगुरु आवी वर्णवे, पण नवि क हे तिसी ॥ १२ ॥ पण अनुरूप पुरुष कोइ, जगमां नवि जड्यो ॥ जा

यां, तेम मंत्रि सामंत प्रमोद ॥ गुणधर गुणधर पासें लीये, दीक्षा विधिथी लहि मोद ॥ १० ॥ न० ॥ जणी सूत्रनें गीतारथ थया, करे उग्र तपस्या साध ॥ निरतिचार चारित्र पालता, नवि करतां कोइ अपराध ॥ ११ ॥ ॥ न० ॥ हवे शंखराय पाले राज्यने, वश करी वयरीनो व्रात ॥ पटदेवी जसमतीने करे, मतिप्रज्ञ मंत्रिपदें थात ॥ १२ ॥ न० ॥ आणा वहे स हु परजा तिहां, सीधां सघलां नृपकाज ॥ पूरवें जे दुःसाध्यने साधिया, पाले अखंम एम राज ॥ १३ ॥ न० ॥ देशमांहे सघले करावतो, जिनव रनां चैत्य विशाल ॥ करे स्वर्गशुं तेह विवादने, वली करतो तास संभाल ॥ १४ ॥ न० ॥ करे रथयात्राउ तेहवी, देखीने थाय आल्हाद ॥ करे दा नशालाउ पगपगें, नवि स्वपर विशेष विवाद ॥ १५ ॥ न० ॥ पडह वजा वे अमारीना,करे साहमीवछल राय ॥ जे निर्धन ते धनवंत कर्या, त्रण जु वनने आनंद थाय ॥ १६ ॥ न० ॥ श्रीषेण मुनिश्वर विचरता, करे कर्म त णो नित्य घात ॥ तपरूप अग्नि पेदा करी, घातीकर्म इंधण करे पात ॥ ॥ १७ ॥ न० ॥ एम सकल घातीकर्म क्षय करी, ऋषि पाम्या केवल ज्ञान ॥ प्रतिबोध करे सूरजपरें, नवि लोककमल अज्ञान ॥ १८ ॥ न० ॥ एक दिन दक्षिणाउरें आविया, अनुक्रमें विहार करंत ॥ रचे कनककमल सुर वर तिहां, गंधोदक फूल वरसंत ॥ १९ ॥ न० ॥ सहसंबवन उद्यानमां,आ वी समवसर्या शुद्ध भाय ॥ उद्यानपाल नूपालने, वधामणी दिये तिहां आ य ॥ २० ॥न०॥ तस दान देइ संतोषियो, हरख्यो मन राय अपार ॥ हवे के वलीनें वंदन जणी, सज्ज थाय करि शणगार ॥ २१ ॥ न० ॥ एम ए चोथा अधिकारनी, भांखी पन्नरमी ढाल ॥ गुरु उत्तमविजय कृपाथकी, होय प द्मने मंगलमाल ॥ २२ ॥ न० ॥ सर्वगाथा ॥ ४९७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गज तुरंगम अति जला, रथ जटनो नहिं पार ॥ सामंत मंत्रीसर स हित, पुरजन लोक अपार ॥ १ ॥ जसमती प्रमुख अंतेउरी, लेइ सघलो परिवार ॥ पहोतो राय उद्यानमां, उतरे गजथी तिवार ॥ २ ॥ पंच अभि गम साचवी, करे प्रदक्षिणा तीन ॥ विनयें केवलीने नमी, बेठो आणंद पीन ॥ ३ ॥ शंख नूपति भांखे इस्युं, करी कृपा मुज स्वाम ॥ जे मुज करवा योग्य ते, भांखो करुं शिर नाम ॥ ४ ॥ एक पिताने मुनिवरु, वली लह्युं

कहे सुण बाल रे ॥ रा० ॥ क० ॥ पुत्री कोइक परणावशुं रे, जाचीने तत काल रे ॥ रा० १३ ॥ क० ॥ धीरो थाजे बालका रे, तव चिंते नंदिषेण रे ॥ रा० ॥ क० ॥ माउलपुत्री इछे नहिं रे, अन्य वांछे कहो केण रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ क० ॥ हुं तो दुःखित रूपथी रे, इम मन धरी वैराग्य रे ॥ रा० ॥ क० ॥ निकल्यो माउल घरथकी रे, कीधो नंदीपुर त्याग रे ॥ रा० ॥ १५ ॥ क० ॥ रत्नपुरें पहोतो वही रे, क्रीडा करतां जाम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ दंप तीने देखी तिहां रे, निज निंदा करे ताम रे ॥ रा० ॥ १६ ॥ क० ॥ मर वानी इछा करी रे, कोइ वनांतरें जाय रे ॥ रा० ॥ क० ॥ देखीने प्रणमे तिहां रे, सुस्थित मुनि ऋषिराय रे ॥ रा० ॥ १७ ॥ क० ॥ जाणी ज्ञानथी मुनिवरु रे, जांखे एणि परें वाण रे ॥ रा० ॥ क० ॥ मरण न कर महा नाग तुं रे, पामीश दुःखनी खाण रे ॥ रा० ॥ १८ ॥ क० ॥ धर्म न कीधो परनवें रे, दुःख पामे तिणें आज रे ॥ रा० ॥ क० ॥ सुख अर्थी करो ध र्मने रे, धर्मथी लहो शिवराज रे ॥ रा० ॥ १९ ॥ क० ॥ आत्मघात कीधां थकां रे, सुख नवि होवे कोय रे ॥ रा० ॥ क० ॥ धर्म दीक्षाथी पामीयें रे, नव नव सुख लहे सोय रे ॥ रा० ॥ २० ॥ क० ॥ सुणी प्रतिबोध ते पा मीयो रे, लीयें महाव्रत मुनिपास रे ॥ रा० ॥ क० ॥ गीतारथ अनिग्रह क रे रे, साधु वैयावच्च खास रे ॥ रा० ॥ २१ ॥क० ॥ बाल ग्लानादिक साधु नी रे, वेयावच्च करे तेह रें ॥ रा० ॥ क० ॥ अनिग्रह ते पूरो करे रे, गु णगणनो मुनिगेह रे ॥ रा० ॥ २२ ॥ क० ॥ एक दिन इंद्र प्रशंसता रे, देवसना मांही सार रे ॥ रा० ॥ क० ॥ नंदिषेण समो नहिं रे, वेयावच्च करनार रे ॥ रा० ॥ ॥ २३ ॥ क० ॥ शक्रवचन अणमानतो रे, देव एक कहे एम रे ॥ रा० ॥ क० ॥ पूणीथी नगर चंपाइयुं रे, ते मानुं कहो केम रे ॥ रा० ॥ २४ ॥ क० ॥ रूप धरी ग्लान साधुनुं रे, रतनपुर उद्यान रे ॥ रा० ॥ क० ॥ वेसारी ते साधुनें रे, कूट धरी मन ध्यान रे ॥ रा० ॥ २५ ॥ क० ॥ रूप बीजुं वली साधुनुं रे, करी जाये पुरमांह रे ॥ रा० ॥ क० ॥ मुनिवसतियें आवतो रे, मनमां धरी उत्साह रे ॥ रा० ॥ २६ ॥ क० ॥ बीजे खंमें बीजी थई रे, ढाल प्रथम अधिकार रे ॥रा०॥क०॥ पद्मविजय क हे सांनलो रे, मुनिदृढता अधिकार रे ॥रा० ॥ २७ ॥ क० ॥ सर्वगाथा॥७३ ॥

ता प्रतें ॥ ला० ॥ ला० ॥ ब्राह्मण थाको एह ॥ ७ ॥ कुं० ॥ बेसारो रथ
ऊपरें ॥ ला० ॥ ला० ॥ सुणी बेसारे नार ॥ कुं० ॥ अनुक्रमें पहोता
ते गाममां ॥ ला० ॥ ला० ॥ स्नान करे वली आहार ॥ ए ॥ कुं० ॥ य
क्ष तणे देउल जइ ॥ ला० ॥ ला० ॥ सूतो संध्याकाल ॥ कुं० ॥ पांमव पु
तें आवीया ॥ ला० ॥ ला० ॥ जाएयो वसुदेव काल ॥ १० ॥ कुं० ॥ खेद
लहे सहु यादवा ॥ ला० ॥ ला० ॥ करे आक्रंद पोकार ॥ कुं० ॥ हा वसु
देव तुं किहां गयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तुं अमचो आधार ॥ ११ ॥ कुं० ॥
समुद्रविजय बहु विलपता ॥ला० ॥ ला० ॥ किहां मुऊ लागुं पाप ॥कुं०॥
लोक वचनथी राखीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ घरमां कहीने आप ॥ १२॥कुं०॥
तुम मुख क्यारें देखशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ करे मृत्युनां काम ॥ कुं० ॥ वात
सुणी वसुदेवजी ॥ ला० ॥ ला० ॥ थिर मन थाये ताम ॥ १३ ॥ कुं० ॥ वि
जय खेटकपुरें आवियो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तिहां सुग्रीव छे राय ॥ कुं० ॥
श्यामा विजयसेना धुवा ॥ ला० ॥ ला०॥ रूप कलानो ठाय ॥ १४॥कुं० ॥
तेह कलाथी जिंतीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ परणे तिहां दोय नार ॥ कुं० ॥
सुख नोगवतां तेहशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ देवपरें अति सार ॥ १५ ॥ कुं० ॥
नामें अक्रूर नंदन थयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ विजयसेनाने तेह ॥ कुं० ॥ते प
ण वसुदेव सारिखो ॥ ला० ॥ ला० ॥ मूके प्रद्युम्न गेह ॥ १६ ॥ कुं० ॥ घो
र अटवीमांही गयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तरपा लागी तास ॥ कुं०॥ पोहतो
सरतीरें जिसे ॥ ला० ॥ ला० ॥ आव्यो गज तस पास ॥ १७ ॥ कुं० ॥
विंध्याचल पर्वत समो ॥ ला० ॥ ला०॥ चढीयो तस शिर तेह ॥ कुं० ॥ खे
द पमाडी गजप्रतें ॥ ला० ॥ ला० ॥ बेठो शिर करी देह ॥ १८ ॥ कुं० ॥
अर्चिमाली पवनंजयो.॥ला०॥ ला० ॥ विद्याधर ए दोय ॥कुं०॥ देखी वसु
देव क्रीडतो ॥ ला० ॥ ला० ॥ तेह हरी गया सोय ॥ १ए ॥ कुं० ॥ कुंजरा
वर्त्त उद्यानमां ॥ ला० ॥ ला० ॥ मूक्यो आणी त्यांही ॥ कुं० ॥ विद्याधर
नरपति नलो.॥ ला० ॥ ला० ॥ अशनिवेग वसे ज्यांही ॥ २० ॥ कुं० ॥ श्या
मा नामें कन्या नली ॥ ला० ॥ ला० ॥ परणावे तेह राय ॥ कुं० ॥ सुख
नोगवे संसारनां ॥ ला० ॥ ला० ॥ दंपती काल गमाय ॥ २१कुं० ॥ एकदि
न वीण वजावतां ॥ ला० ॥ ला० ॥ तूठो वसुदेव तास ॥ कुं० ॥ माग तुं
वर मुऊ पासथी ॥ ला० ॥ ला० ॥ तव कहे ते सुविलास ॥ २२ ॥ कुं० ॥

तुम्ह विरह मुऊ मत होजो ॥ ला० ॥ ला० ॥ पूछे कारण तास ॥कुं०॥ तव श्यामा कहे एणि परें ॥ ला० ॥ ला० ॥ सांनलो धरि उल्लास ॥ २३॥कुं०॥ किन्नर गीतपुरी नली ॥ ला० ॥ ला० ॥ गिरि वैताढ्यमां सार ॥ कुं० ॥ अर्चिमाली तिहां राजियो ॥ ला० ॥ला०॥ तेहने दोय कुमार ॥२४॥कुं०॥ ज्वलन अशनिवेग नामथी ॥ ला० ॥ ला० ॥ ज्वलनवेग ठवे राज्य ॥ कुं०॥ अर्चिमाली व्रत आदर्युं ॥ ला० ॥ ला० ॥ साधे आतमकाज ॥कुं०॥२५॥ अंगारक तस सुत उपनो ॥ ला० ॥ला०॥ ज्वलननी विमला नारि ॥कुं०॥ अशनिवेगनी हुं धुवा ॥ला०॥ ला० ॥ सुप्रजा मात मलार ॥कुं० ॥ २६ ॥ अशनिवेग जाइ प्रतें ॥ ला० ॥ ला० ॥ ज्वलनवेग ठवे राज ॥ कुं० ॥ देवलोक ते पामीया ॥ ला० ॥ ला०॥ नूपति थयो मुऊ ताय ॥२७॥कुं०॥ राज्य ग्रहे विद्या बलें ॥ ला० ॥ ला० ॥ अंगारक नत्रीज ॥ कुं० ॥ अशनिवेग अष्टापदें ॥ ला० ॥ ला० ॥ आवे मन धरि खीज ॥ २८ ॥ कुं० ॥ चार णमुनि तिहां पेखीयो ॥ ला० ॥ ला० ॥ पूछे प्रश्न उदार ॥ कुं० ॥ राज्य थ शे मुऊ के नहिं ॥ ला० ॥ ला० ॥ मुनि बोले तिणि वार ॥ २९ ॥ कुं० ॥ तुऊ पुत्री श्यामापति ॥ ला० ॥ ला० ॥ गज जीत्याथी जाण ॥ कुं० ॥ तास प्रनावथकी होशे ॥ ला० ॥ ला० ॥ हरख्यो मुनिवर वाण ॥ ३० ॥ कुं० ॥ नगर वसावी मुऊ पिता ॥ ला० ॥ ला० ॥ मुनिवचनें इहां राय ॥ कुं० ॥ विद्याधर दोय मोकले ॥ ला० ॥ ला० ॥ जलावर्त्ते नित राय ॥ ३१ ॥ कुं० ॥ देखी गज ऊपर चढ्यो ॥ ला० ॥ ला० ॥ आण्या तुम इण वार ॥ कुं० ॥ मुऊ परणावी वेगशुं ॥ ला० ॥ ला० ॥ श्यामा नामें नार ॥ ३२ ॥ कुं० ॥ बीजे खंमें सातमी ॥ला०॥ला०॥ ढाल प्रथम अधिकार॥ कुं० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी ॥ ला० ॥ ला० ॥ होवे जयजयकार ॥३३॥ कुं० ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्यामा कहे सुण स्वामीजी, पुण्यवंत शिरदार ॥ तुम्हने घात करे र खे, ते अंगार कुमार ॥ १ ॥ धरणेंइं विद्याधरें, कीधो ले आचार ॥ अतीत काल बहु उपरें, सांनलजो निर्धार ॥२॥ जिनवर चैत्यनी ढुकडां, नारी त था मुनिपास ॥ मारे विद्या तेहनी, होवे सर्व निराश ॥ ३ ॥ ते कारण तु म्ह वीनवुं, विरह म थाजो स्वाम ॥ एकाकी तुम्ह पापीयो, रखे हणे को इ ठाम ॥ ४ ॥ वाणी तेहनी सांनली, अंगीकरे वसुदेव ॥ काल विनोद

प्रवहण नांग्युं त्यांही ॥ १ ॥ पुण्यसंयोगें आवियुं, फलक एक मुज हाथ ॥ सात दिवस सायर नम्यो, पण ते फलकनी साथ ॥ २ ॥ पाम्यो पार सायर तणो, राजपुरें वली जाय ॥ तेह नगर उद्यानमां, आश्रम एक शुन जाय ॥ ३ ॥ दिनकरप्रन नामें वसे, परिव्राजक अनिराम ॥ शांत दांत घणुं देखीयें, धर्मतणुं मानुं धाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ तेह त्रिदंमी देखी मुज, कहे सांनल कहुं वात हुं तुज ॥ बाबू मान ले ॥ ए आंकणी ॥ तुं केम डुःखीयो एवडो आज, तुं थाइश महोटो माहाराज ॥ १ ॥ बा० ॥ तेरा डुःख में खम्या न जाय, मेरा मनमें आरति थाय ॥ बा० ॥ गुरुकी हम हे ऐसी शीख, जपो अलख उर नावकी नीख ॥ २ ॥ बा० ॥ कंथा पहेरुं लगावुं विनूति, परडुःखीये डुःखीयो सुण पूत ॥ बा० ॥ जगकुं सुख तब हमकुं सुख, जग डुःखीयो तब हमकुं डुःख ॥ ३ ॥ बा० ॥ मायामें सहु जग लपटाय, हम तो नित्य निरंजन ध्याय ॥बा०॥ वात कहे बे तेरी जेह, तुज देखी मुज थरहरे देह ॥ ४ ॥ बा० ॥ तव प्रणमी कहे चारुदत्त, पाउली जेटली थइ निज वत्त ॥ बा० ॥ चारुदत्तनां सांनली वयण, अव धूत आंसुं नरियां नयण ॥ ५ ॥ बा०॥ रे वत्स तुं हवे धीरो थाय, धीरजें सवि दोलत मले आय ॥ बा० ॥ तें धन अर्थी हे सुण बहोत, धन दे वरावुं आव तुं पहोत ॥ ६ ॥ बा० ॥ तेरे घरकी दासी होय, जखमी ते म करियें तुं जोय ॥ बा० ॥ ते सुणी चाल्यो चारुदत्त, जोनीने होय बहु लुं सत्त ॥ ७ ॥ बा० ॥ बीजे दिन एक अटवीमांही, पहोतो मन धरतो उबाही ॥ बा० ॥ तिहां एक पर्वतमांहे जाय, निवडशिला उघाडे पाय ॥ ८ ॥ बा० ॥ डुर्गपाताल नामें बिल तेह, तेहमां पेगे त्रिदंमी जेह ॥ बा० ॥ नमतां नमतां दीठो कूप, रस थानक महा दारुण रूप ॥९॥बा०॥ चार हाथनो ते विस्तार, मानुंनरकतणुं ए द्वार ॥ बा० ॥ तुंबडुं आपी कहे मुज एम, सुण कहुं वत्स धरी तुज प्रेम ॥ १० ॥ बा० ॥ एहमां रस नरीने तुं आव, एम कही मंचिकामांही ताव ॥बा०॥ रज्जु जाली मोकल्यो त्यांहि, मेखला दीठी में तेह मांहि ॥ ११ ॥ बा० ॥ तिहां रस नरीयो दीठो जोर, लेतां वारे कोइ तिणे गोर ॥ बा० ॥ चारुदत्त ले माहरुं नाम,

मोकल्यो जगवंतें ए गाम ॥ १२ ॥ बा० ॥ शें मुजने तुं करे निषेध, मह्वारे ए रसशुं छे वेध ॥ बा० ॥ ते पण कहे सुण मह्वारी वात, वणिकने धनवां छक हुं थात ॥ १३ ॥ बा० ॥ एह त्रिदंमीये नाख्यो मुज, सुण वली आ गल जांखुं तुज ॥ बा० ॥ रसमां मत तुं बोले हाथ, कोहीने थाशे ते का थ ॥ १४ ॥ बा० ॥ जरीने आपुं तुजने एह, पण मत बोलजे ताह्वरी देह ॥ बा० ॥ तव में तुंबडुं आप्युं तास, रस जरी आप्यो मुजनें खास ॥ १५ बा० ॥ मांची हेठें ते बांध्युं तुंब, रज्जु हलावी पाडी बुंब ॥ बा० ॥ खेंची काढे तापस ताम, कूपने तटें आव्यो हुं जाम ॥ १६ ॥ बा० ॥ मागे तुं बडुं माह्वरी पास, तव शेही लोजी लह्यो तास ॥ बा० ॥ में रस ढोली नाख्यो सार, नाखी दीधो मुज तिवार ॥ १७ ॥ बा० ॥ तेह अकारण बंधू ताम, कहे मत कर तुं खेद ए गाम ॥ बा०॥ रसमां तो नथी पडीयो अत्र, रोगनी उत्पत्ति थाये यत्र ॥ १८ ॥ बा० ॥ बीजो नहिं उपाय ते को य, निकलवानो सुण कहुं तोय ॥ बा० ॥ गोधा जब आवे इण गाम, ते हने पूंछडे वलगजे ताम ॥ १९ ॥ बा० ॥ तव लग तुं इहां रहे शुजध्या न, करी पंच परमेष्ठीनुं ज्ञान ॥ बा० ॥ तास वचनें हुं लह्यो आनंद, तेह पंचत्व लह्यो सुखकंद ॥२०॥बा०॥ जीषण शब्द सुण्यो एकदिन्न, तव बीहिनो आकुल थयो मन्न ॥ बा० ॥ संजारी ते पुरुषनुं वयण, गोधा जाणी निश्चय नयण ॥ २१ ॥ बा० ॥ पान करीनें पाछी जाय, पूंछडे वलग्यो हुं तिण गाय ॥ बा० ॥ गाय पूंछडे वलगे गोवाल, तेम वलग्यो हुं अति सुकुमाल ॥ २२ ॥ बा० ॥ नरकमांहिथी निकले जेम, अथवा गर्जावासथी तेम ॥ बा० ॥ देखी जीव लोकने बहार, नवो जनम एणें अवतार ॥२३॥बा०॥ मूकी दीधुं पूंछडुं जाम, मूर्छा आवी मुजने ताम ॥ बा० ॥ पडियो जूमि वली लाधुं चेत, जेंसो एक धायो डुःख देत ॥ २४ ॥ बा० ॥ एक शिला उपर चढयो रंग, तेह शिला चाले निजश्रृंग ॥ ब० ॥ अजगर वनजेंसाने खाय, तव नाशी गयो तिहांथी पलाय ॥ २५ ॥ बा० ॥ अटवी अंतें पा म्यो गाम, तिहां मुज माउल मित्रनुं धाम ॥ बा० ॥ डुःखनी श्रेणि लही में तत्र, किम कही शकियें ते डुःख अत्र ॥ २६ ॥ बा० ॥ बीजे खंमें बार मी ढाल, पहेले अधिकारें ए रसाल ॥ बा० ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे पुण्यें जगीश ॥ २७ ॥ बा० ॥ सर्वगाथा ॥ ४१० ॥

कलाकलापी पूर्ण ए, देखी विस्मित थाय ॥ तेह लेवा गइ जेटले, अ चरिज होय तिण ठाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ मालीकेरें बागमां दो नारिंग पक्के रे लो, अहो दो नारिंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥ जाये तेहने झालवा, तव तेह कलापी रे लो ॥ अहो तव० ॥ गरुडपरें ऊडी गयो, निज खंध आरोपी रे लो ॥ अहो निज० ॥ १ ॥ केडें वसुदेव दोडीया, पण नारी न लही रे लो ॥ अहो प०॥ रात रही को इ थानकें, चाव्यो ते सवही रे लो ॥ अ० ॥ २ ॥ दक्षिण दिशि जातां थकां, गिरितट नामें नयरी रे लो ॥ अ० ॥ वेदध्वनि महोटी सुणी, पूछे तिहां शौरी रे लो ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदपाठ किणे कारणें, करे लोक ए हरखें रे लो ॥ अ० ॥ तव दशग्रीव ब्राह्मण कहे, इण नयरीयें निरखे रे लो ॥ अ० ॥ ४ ॥ सुरदेव ब्राह्मण अछे, एह ग्रामनो स्वामी रें लो ॥ अ० ॥ क्षत्रियाणी तस नारजा, जेहने सुता पामी रे लो ॥ अ० ॥ ५ ॥ वेदनी जाण ते कन्यका, देखी तस तातजी रे लो ॥ अ० ॥ ज्ञानीने पूछे तव कहे, इणि परें सुणो वातजी रे लो ॥ अ० ॥ ६ ॥ वेदथी जींतशे एहने,ते पर णशे नारी रे लो ॥ अ० ॥ तेहने जीतवा कारणें, बीजां काम निवारी रे लो ॥ अ० ॥७॥ वेद अभ्यास करे सदु, ब्रह्मदत्तनी पासें रे लो ॥ अ० ॥ तेह सुणी हर्षित थयो, करतो सुविलासें रे लो ॥ अ० ॥ ८ ॥ ब्राह्मण रूप धरी करी,गया ब्रह्मदत्त पासें रे लो ॥ अ० ॥ स्कंदिलनामें ब्राह्मणो, गौतम गोत्रवासें रे लो ॥ अ० ॥ ए ॥ वेद भणावो मुझने, तव ब्रह्मदत्त भांखे रे लो ॥ अ० ॥ आर्य अनार्य बे भेदथी, आचारिज दाखे रे लो ॥ अ० ॥ १० ॥ तेहनी उत्पत्ति सांभलो, आर्यवेद तो कीधा रे लो ॥ अ० ॥ भरत चक्रीयें जाणजो, तेह जग प्रसिद्धा रे लो ॥ अ० ॥ ११ ॥ वेद अनारज उपना, तेहनी सुणो वात रे लो ॥ अ० ॥ चारण युगल पुरें वसे, अयोधन नृप ख्यात रे लो ॥ अ० ॥ १२ ॥ सुलसा नामें वर सुता, मांमे स्वयंवरा मंमप रे लो ॥ अ० ॥ तव तस माता रोवती, देखी ते अजंप रे लो ॥ अ० ॥ १३ ॥ पूछे वात ते मातने, तव कहे तस का में रे लो ॥ अ० ॥ तहारा तातनो भाणेजो, मधुपिंगल नामें रे लो ॥ अ० ॥ १४ ॥ वरवो तुझने ते घटे, बीजाने वरतां रे लो ॥ अ० ॥ मुझ

ने दुःख बहु उपजे, तिणे रुदन ते करतां रे लो ॥ अ० ॥ १५ ॥ तव क हे सांजलो मातजी, बीजो नहिं परणुं रे लो ॥ अ० ॥ एह वात करतां थकां, थयुं एम तस हरणुं रे लो ॥ अ० ॥ १६ ॥ चेटी सगरराजा तणी, ग्रानी वात ते जाणी रे लो ॥ अ० ॥ सगर रायनी आगलें, मं दोदरीयें वखाणी रे लो ॥ अ० ॥ १७ ॥ सगरराय पण तिणे समे, उत्कट महा बलियो रे लो ॥ अ० ॥ काढी मुकाव्यो तिहांथकी, मनमां खलजलीयो रे लो ॥ अ० ॥ १८ ॥ बलीया आदमी जे करे, ते सघलुं गाजे रे लो ॥ अ० ॥ जयजयकार सहु कहे, उपर तूर वाजे रे लो ॥अ०॥ ॥ १ए ॥ गलीया आदमी जे करे, ते सघलुं वाय रे लो ॥ अ० ॥ कोइ व चन माने नहिं, गडदा पाटू खाय रे लो ॥अ०॥२०॥ बलीयो जानु नरपति, काढी मूक्यो तेह रे लो ॥ अ० ॥ मधुपिंगल मन चिंतवे, जुउ शुं करे ए ह रे लो ॥ अ० ॥ २१ ॥ विष्णुराय सुत हुं जलो, अजोधननो जाणेज रे लो ॥ अ० ॥ सोमवंशमां उपनो, दीपतो ले तेज रे लो ॥ अ० ॥ २२ ॥ सूर्यवंशी ए नारी ले, मुऊने घटे देवी रे लो ॥ अ० ॥ तो पण मुऊ अप मानियो, ए वात ते कहेवी रे लो ॥ अ० ॥ २३ ॥ एणि परें द्वेष धरी करी, थयो तपसी बाल रे लो ॥ अ० ॥ काल करीने उपनो, देवता महा काल रे लो ॥ अ० ॥ २४ ॥ परमाधामी उपनो, अति ते विकराल रे लो ॥ अ० ॥ साठ सहस्र सुर अधिपति, माहापापनो ढाल रे लो ॥अ०॥२५॥ चिंते मनमां देवता, सगरादिक राजा रे लो ॥ अ० ॥ दुःख पामे तिम हुं करुं, नवि रहे जेम ताजा रे लो ॥ अ० ॥ २६ ॥ शुक्तिमती नयरी जली, तिहां हुउ विवाद रे लो ॥ अ० ॥ यज्ञ पशुना नांखीया, पर्वतें ते विषाद रे लो ॥ अ० ॥ २७ ॥ लोकें काढी मूकीयो, तस पासें आवे रे लो ॥ अ०॥ तेह देवता इम कहे, एक वात सुहावे रे लो ॥ अ० ॥ २८ ॥ खीरकदंब क ताहरो, अध्यापक रूडो रे लो ॥ अ० ॥ हुं पण तेहनो शिष्य हुं, लोकें कह्यो तुऊ कूडो रे लो ॥ अ० ॥ २ए ॥ ते सांजलीने आवियो, ताहरो प क्ष थापुं रे लो ॥ अ० ॥ तेहवो उपाय करुं हवे, तुऊ जस आरोपुं रे लो ॥ अ० ॥ ३० ॥ एम कहीने देवता, विकुर्वे मारी रे लो ॥ अ० ॥ विविध रोग करे लोकने, एणि परें मन धारी रे लो ॥ अ० ॥ ३१ ॥ पर्वत यज्ञ करावतो, सहु लोकने त्यारें रे लो ॥ अ० ॥ रोग विलय जाये तिहां, देव

माया धारे रे लो ॥ अ० ॥ ३२ ॥ पर्वतपासें आवी करी, करे यज्ञ ते राजा रे लो ॥ अ० ॥ थलचर खेचर जीवना, वधथी थाये साजा रे लो ॥ अ० ॥ ३३ ॥ सगररायनो पण करे, परिवार ते मांदो रे लो ॥ अ० ॥ अंतेउर परिजन सवे, बहु रोगें फांदो रे लो ॥ अ० ॥ ३४ ॥ एक हजार ने आठ ते, करे यज्ञ उदारा रे लो ॥ अ० ॥ बहु धन तिहां खरचावियुं, जेम मेघनी धारा रे लो ॥ अ० ॥ ३५ ॥ जीवनो वध तिहां बहु थयो, कहेतां नावे पार रे लो ॥ अ० ॥ ब्राह्मणने संतोषिया, देइ दान उदार रे लो ॥ अ० ॥ ३६ ॥ ब्राह्मण पण सहु लोभिया, प्रशंसा करे तेहनी रे लो ॥ अ० ॥ नाम दिवाकर राजीयो,करे यज्ञनी श्रेणी रे लो ॥ अ०॥ ३७ ॥ तिण अवसर नारद ऋषि,लेइ जाये ते पशुआ रे लो ॥ अ० ॥ जाणे देव ते वातडी, देखी वात विरसुआ रे लो ॥ अ० ॥ ३८ ॥ पडिमा ऋषभजिनंदनी, थापे मनोहारी रे लो ॥ अ० ॥ विघन विघातनें कारणें, मंगलसुखकारी रे लो ॥ अ० ॥ ३९ ॥ देखाडे ते विमानने, एणि परें कहे सुणजो रे लो ॥ अ० ॥ मरण लहे जे यज्ञमां, देवता थाये मुणज्यो रे लो ॥ अ०॥४०॥ लोक प्रवाद थयो तिहां, यज्ञथी सुर थाये रे लो ॥अ०॥ ते दिनथी मांभी करी, गोमेधादि कराय रे लो ॥ अ० ॥ ४१ ॥ स्वर्गहेतु जाणी करी, सगर नें सुलसा रे लो ॥ अ० ॥ होमाणां ते यज्ञमां, पामे दुःख विलसा रे लो ॥ अ० ॥ ४२ ॥ एणि परें पर्वतथी वली, मधुपिंगल बीजो रे लो ॥ अ० ॥ तेम पिप्पलाद ते जाणीयें, अनारय खीज्यो रे लो ॥ अ० ॥ ४३ ॥ इणि परें वेद अनार्यनी, उत्पत्ति मन आणो रे लो ॥अ०॥ परण्यो विद्याधर सुता, नारद तेणें ठाणो रे लो ॥ अ० ॥ ४४ ॥ तेहना वंशमां ए थई, सोमश्री अभिरामा रे लो ॥ अ० ॥ ते कारण सहु अन्यसे, जीत्याना भामा रे लो ॥ अ० ॥ ४५ ॥ आर्य अनार्य दोये भणुं, तव तेह भणावे रे लो ॥ अ० ॥ अनुक्रमें जीती कुमरीने, तस पितु परणावे रे लो ॥ अ० ॥ ४६ ॥ तिहां सुख भर लीला करे, बीजे खंमें रसाल रे लो ॥ अ० ॥ बीजे अधिकारें कही, पद्में बीजी ढाल रे लो ॥ अ० ॥४७॥

॥ दोहा ॥

॥ एकदिन रमवाने गयो, ते उद्यान मकार ॥ इंद्रशर्मा नामें तिहां,देखे त्यां इंद्रजाल ॥ १ ॥ कहे वसुदेवजी तेहने, विद्या आप तुं मुक ॥ ते कहे

वातो सुणजो, नमिवंशें थयो राजा ॥ नामे पुलस्तनो मेघनाद सुत, जस पख बिहु ळे साजा ॥ २५ ॥ म्हें० ॥ सुनूम चक्री तास जमाई, दिव्य शस्त्र दियां तेहनें ॥ तेह शस्त्रनां नाम सुणो तुम्हें, नामें अर्थ ळे जेहने ॥ २६ ॥ ॥म्हें०॥ १ बंजसीर २ आग्नेय ळे बीजुं,३ दारुण ४ माहिंद जाणो ॥ ५ ज मदंम ६ ईशान७ वायव नामें,८थंजोमोक्ष मन आणो ॥२७॥म्हें०॥एशल्यु ध्दरण ने १० व्रणरोहण वली, ११ जसंयण जस नाम ॥ १२ लोक हरण वली १३ ळेदन जीजण, १४ सर्वछेद १५ गुणकाम ॥ २८ ॥ म्हें० ॥ बीजां पण बहु शस्त्र ते आपे, श्वशुरनो तेह जमाइ ॥ दोय श्रेणिनी लखमी आ पी, पूरवपुण्य कमाई ॥ २९ ॥म्हें० ॥ तेहने वंशें रावण राजा, वलीअ बि जीषण सारो ॥ तेह बिजीशणवंशें उपनो, विद्युद्वेग पियु महारो ॥ ३० ॥ म्हें० ॥ कुलक्रमागत आव्यां एह ते, तुमने सफलां थाशे ॥ जाग्य रहित अम्हने सवि विफलां, ळे अम्ह घरमां वासे ॥ ३१ ॥ म्हें० ॥ जाग्य होये तो सफलां थाये, नहिं तो आपने मारे ॥ जुउ प्रतिवासुदेवने मारे, जे पो तें चक्रने धारे ॥ ३२ ॥ म्हें० ॥ एम कहीने शस्त्र ग्रहीने, विधि पूर्वक ते साधे ॥ पुण्यें सिद्धि थाये सहु जगमां, देव परें आराधे ॥ ३३ ॥ म्हें० ॥ पुण्यथ की श्रीशांति जिणंदें,एक जवपद दोय पाम्यां ॥ तेम कुंथु अर नाथने जाणो, पुण्यप्रकर्षे ए जाम्या ॥ ३४ ॥ म्हें० ॥ जुउ मरीचि श्रीऋषजजनो पोत्रो, बा प ते चक्री जास ॥ वासुदेव चक्री जिनवरपद, ए सवि पुण्यप्रकाश ॥ ३५॥ म्हें० ॥ वासुदेवनी पदवी नांही, पण वासुदेव सरीखो ॥ त्रण खंमनो जे थयो जोक्ता, कोणिक नृप तुम्हें परखो ॥ ३६ ॥ म्हें० ॥ वली कुमारपाल संप्रति राजा, पुण्य अतुल जेणें कीधां ॥ चक्री वासुदेवने बल देवा, पु ण्यथकी सहु सीधा ॥ ३७ ॥ म्हें० ॥ पुण्य होय तो सघलुं सीजे, नहिं तो उलटुं खीजे ॥ गांगो तेली पुण्यप्रजावें, राजसजा जय लीजें ॥ ३८॥म्हें०॥ बीजे खंमें बीजे अधिकारें, पांचमी ढाल गणीजें ॥ पद्मविजय कहे श्रोताने घर, मंगल चार जणीजें ॥ ३९ ॥ म्हें० ॥ सर्वगाथा ॥ २०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार मंगल घर घर हुवे, पुण्य होय जो आप ॥ नहिं तो फुलमाला तणो, करमां प्रगटे साप ॥ १ ॥ ऊंधुं ते सवलुं हुवे, पुण्य तणे परिमा ण ॥ गांगो तेली पुण्यथी, पाम्यो जयत निशान ॥ २ ॥

री, रूपवंत अतिरेक रे ॥ २ए ॥ क० ॥ तेह देवी हुं जाणजे, आगल सु
ण हवे वात रे ॥ स्वयंवरमंमप मांमीयो, बहुला राय आयात रे ॥ ३० ॥
क० ॥ पुत्रीयें न वखो को राजीयो, तव कोपें कलकलिया रे ॥ युद्ध करण
ने सामटा, राजा एकठा मलिया रे ॥३१॥ क० ॥ सान्निध में करी रायनी,
तव सवि नृप गया हारी रे ॥ तुऊ देखी पीडी घणुं, काममांहे तेह घारी
रे ॥ ३२ ॥ क० ॥ अठम करी आराधती, हुं पण थइ सुप्रसन्न रे ॥ में प्र
तिहार साथें कह्युं, पण न लह्युं तुऊ मन्न रे ॥३३ ॥ क० ॥ तुं एहने रे अं
गी करे, तव कहे श्रीवसुदेव रे ॥ संनारुं तुऊने जदा, तव आवजे ततखे
व रे ॥३४॥क०॥ अंगीकार करी ते गइ,बंधुमती घर मूकी रे ॥ अदृश्य थइ
हवे कुंमर जी, रात गइ ते विसुकी रे ॥ ३५ ॥ क० ॥ प्रात समे प्रतिहार
शुं, आयतनें वसुदेव रे ॥ आवे ते प्रियंगुसुंदरी, पाणिग्रहणने हेव रे ॥ ३६
॥ क० ॥ गंधर्व विवाहें परणिया, दिवस अढार ते थाय रे ॥ रायने वात
सकल कही, देवीदत्तवर राय रे ॥ ३७ ॥ क० ॥ इणि परें प्रतिहारें कह्युं,
तव जामातने लावे रे ॥ एणीपुत्र निजमंदिरें, सुखमां काल गमावे रे ॥
३८ ॥ क० ॥ नवमी ढाल सोहामणी, खंम बीजे अधिकार रे ॥ पद्मविजय
कहे सांनलो, सुणतां जयजयकार रे ॥ ३ए ॥ क० ॥ सर्वगाथा ॥ ३७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर वैताढ्यमां, गंधसमृद्ध पुर सार ॥ प्रनावती कन्यापिता,
गंधारपिंगल धार ॥ १ ॥ तेह प्रनावती कन्यका, नमती नमती आय ॥
सुवर्णाजन नयरें सुखें, क्रीडा करवा जाय ॥ २ ॥ देखे तिहां सोमश्रीप्रतें,
सखीपणां करे दोय ॥ पतिविरहो जाणी करी, कहे प्रनावती सोय ॥ ३ ॥
मनमां चिंता मत करे, आणुं तुऊ नरतार ॥ तव नीसासा नाखीने, सो
मश्री कहे तिणवार ॥ ४ ॥ वेगवती जेम आणीयो, तेम तुं आणीश आ
ज ॥ वांढो वष्टीयें कह्यो,ते कहे हुं वरराज ॥५॥ प्रनावती कहे सांनले,वेग
वती सम नांही ॥ दूध तक्र दोय ऊऊलां,महा अंतर ए मांही॥६॥ सावत्थि
नगरी जइ,आण्यो श्री वसुदेव ॥ रूपपरावर्त्तन करी, सुख नोगवे स्वयमेव ॥७॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ आज हुंतो अलजइ रे बहेनी ॥ ए देशी ॥ श्री वसुदेवजी रे स्वामी,
सुख नोगवता इछाकामी ॥श्री०॥ ए आंकणी ॥ जाणे मानस रे वेग, तव

णी, करें पूजा नक्ति ते अति घणी ॥ जिनप्रतिमानी करी अर्चा, वली गीत नाटक करे चर्चा ॥ १ ॥ त्रूटक ॥ मन धरी पूजे, पाप धूजे, श्रीवसु देवजी, इणि परें ॥ देखि पामे, हर्ष गामे, वली वली, स्तवना करे ॥ पुण्यवं तो, ए हसंतो, नक्ति करे, जिनवर तणी ॥ करे प्रजावना, जैनशासन, हुं पण पुण्य, तणो धणी ॥ २ ॥ एहवुं अद्नुत में लह्युं, इणि परें श्रीवसुदेवें कह्युं ॥ पूजा संपूरण करि चाल्यो, तव वसुदेवने तिहां नाल्यो ॥ ३॥ त्रू० ॥ चिंते चित्तमां, कुण ले ए, रूप अनुप, सुहामणो ॥ अमर खेचर, असुरमां हे, रूप नहिं, कहिं कामणो ॥ ४ ॥ हस्तसंज्ञायें तेडीयो, मन चिंते वसु देव नेडीयो ॥ हुं मनुजनें एह ते देव, एहनी जश्ने करवी सेव ॥ ५ ॥त्रू०॥ सेव करवी, आण धरवी, एम चिंतवी, ते गयो ॥ धनदनें एक, काम हुंतुं, तिणें आदर, बहु थयो ॥ ६ ॥ पूजा करी ते नली परें, तव बोले वसुदेव शुनस्वरें ॥ एक विनीत ते सहजथी पोतें, वली करी पूजा सहु जोतें ॥ ७ ॥ त्रू० ॥ सहू जोतें, हाथ जोडी, मान मोडी,ने कहे ॥ करो आ णा, स्वामी मुऊने, करुं कारज, गह गहे ॥ ८ ॥ कहे वैश्रमण सुणो तुमें, एक वात कहुं तुमने अमें ॥ करो दूतपणुं अमारुं, कारय थाशे वली तुमारुं ॥ ए ॥ त्रू० ॥ तुमथी अमारुं, काम थाशे, जाउ हरिचंद, नृप घरे ॥ कनकवतीने, जइं नांखो, अमें कहियें, तिणि परें ॥ १० ॥ तव निज थानक जइ करी, मूके अलंकार ते मन धरी ॥ दूतनेज उचित जे हो य, महेलां वस्त्र पहेरे सोय ॥ ११ ॥ त्रू० ॥ सोय महेलां, वस्त्र देखी, धन द नांखे, सांनलो ॥ आमंबरें सहु, लोक पूजे, तुं केम आव्यो, श्यामलो ॥ १२ ॥ यतः ॥ आमंबरोहि सर्वेषां, मान्यो जगति वर्त्तते ॥ आमंबरेण ही नानां, कोपि नाख्यत्प्रियं वचः ॥ १ ॥ शौरी कहे सुणो स्वामीजी, नहिं महेलां वस्त्र कामजी ॥ दूतने तो वचन ते सार, तेतो मुऊने ले आधार ॥ १३ ॥ त्रू० ॥ आधार ले एम, कहे नांखी, ढाल चोथी, ए नली ॥ गुरु उत्तम, विजयसार्थे, पद्मविजयें ए, कही वली ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥१२७॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्ति तुऊने होयजो, धनद कहे जाउ त्यांहि ॥ तव चाल्या ऊता वला, हरिचंड गृह ज्यांहि ॥ १ ॥ हय गय रह नड बहु मल्या, रोक्युं राय नुं द्वार ॥ पेशीने को नवि शके, थइ अदृश्य तिणि वार ॥ २ ॥ चाल्यो

वायुनी परें, अप्रतिहत गति जास ॥ अंजनसिद्ध योगी परें, आव्यो अंत आवास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ फूंबखडुं फूंबी रह्युं, फूंब ते माजिम राती ॥ संयमराय फूंबखडुं ॥ ए देशी ॥ पहेला घरमां देखतो, बहु परिकरें करि रुद्ध ॥ वसुदेव चमकतो ॥ चित्रामण जस हाथमां, इंद्रनील तल बद्ध ॥ १ ॥ व० ॥ कांति मनोहर जे हनी, निर्मल जल जिहां वाव ॥ वसु० ॥ भ्रम मनमां आवें घणो, देखी मनने भाव ॥ व० ॥ २ ॥ दिव्याभरण धरि करी, रंभानो ज्युं वृंद ॥ व० ॥ रूपवती सरिखी वयें, देखे मुख ज्युं चंद ॥ व० ॥ ३ ॥ आगल चाल्यो अनुक्रमें, बीजा घरमां जाम ॥ व० ॥ मणिमय थंभे सोहती, पांचाली जुवे ताम ॥ व० ॥ ४ ॥ त्रीजुं घर जब देखीयुं, त्रिभुवनमां अद्भुत ॥ व० ॥ उज्ज्वल गोक्षीर सारिखुं, देखे धनदनो दूत ॥व०॥५॥ पेसे ऐरावत जिस्यो, क्षीरसमुद्रमां सार ॥ व० ॥ देखे तिहां नारी घणी, दिव्य आभरणनी धार ॥ व० ॥ ६ ॥ माये नहिं देवलोकमां, तिण आवी मानुं आंही ॥व०॥ चिंते मनमां ए किस्युं, इंद्रजाल के नांही ॥व०॥७॥ चोथे कक्षांतरें गयो, जलकुट्टिम तिहां जोय ॥व०॥ बहुलतरंग जिहां अछे, चक्रवाक युग होय ॥व०॥८॥ हंस प्रमुख क्रीडा करे, वदन जुवे बहु नार ॥व०॥ दर्प्पणनुं कारज नहिं, निर्मल एहवुं वार ॥ व० ॥९॥ सारिका शुक मंगल कहे, बहुदासी जन जब ॥व०॥ गीत नाटक होय अति घणां, देखे वसुदेव तब ॥व०॥१०॥ पांचमा घरमां हे गयो, मरकत कुट्टिम खास ॥ व० ॥ देवलोकनुं विमान ज्युं, शोभे अति सुविलास ॥ व० ॥ ११ ॥ मोतीनी माला घणी, वली विद्रुमनी माल ॥ व० ॥ चामर ढलके चिहुं दिशें, ते पण अतिहि विशाल ॥ १२ ॥ व० ॥ मानुं मायायें कर्यो, ए सवि वात बनाव ॥ व० ॥ वेश अलंकृत थइ घणुं, दासी ते पुतली दाव ॥ व० ॥ १३ ॥ हवे छठा घरमां गयो, पद्म कुट्टिम तिहां होय ॥ व० ॥ पद्म सरोवरनी परें, पद्मसमूह सह जोय ॥ व० ॥ १४ ॥ मणिनां पात्र देखे तिहां, देव संबंधी तेह ॥ देव संबधी वस्त्रने, देखे तिहां धरि नेह ॥ व० ॥ १५ ॥ करमजी राग अंशुक भलां, पहेर्यां छे तिहां नार ॥ व० ॥ संध्यामूर्त्ति धरी करी, मानुं आवी इण ठार ॥ व०॥ १६ ॥ चमकी चतुर ते चालीयो, सातमा घरमांहे मोद

वचन विलास ॥ अचरिज एक ते ऊपन्युं, ते सुणजो उल्लास ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ इणि अवसर एकहाथीयो, उज्ज्वलवर्ण शरीर लाल रे ॥ आवी राय राणी प्रतें, खंधें धरे शौंडीर लाल रे ॥ १ ॥ दान तणां फल देखजो ॥ ए आंकणी ॥ चोक फेर ते फेरवे, लहे अचरिज सवि लोक लाल रे ॥ पुष्पप्रमुखें पूजा करे, लोक तणा थो कें थोक लाल रे ॥ दा० ॥ २ ॥ राज द्वारें आवी करी, उतारे ते दोय लाल रे ॥ जइ आलान मूलें रह्यो, वृष्टि कुसुमरत्न होय लाल रे ॥ दा० ॥ ३ ॥ रा य उतारे आरती, करी पूजा सत्कार लाल रे ॥ चंदन प्रमुख विलेपियां, ग जमुख आगल सार लाल रे ॥ दा० ॥४॥ मास पूरण थइ अन्यदा, शुभ जोग ने शुभ वार लाल रे ॥ मेघघटा विद्युत परें, प्रसवे पुत्री उदार लाल रे॥दा०॥५॥ श्रीवत्स ज्युं वक्षस्थलें, माहापुरुषने होय लाल रे ॥ तेम भाले शोभे घ णुं, सहेजे तिलक ते जोय लाल रे ॥ दा० ॥ ६ ॥ तास जनम प्रभावथी, सहु राजा शिरदार लाल रे ॥ भीमनिसीम ते विक्रमें, तेज प्रताप भंडार ला ल रे ॥ दा० ॥ ७ ॥ स्वप्न संभारी राय ते, दवथी दंती आयात लाल रे ॥ दवदंती अभिधा हवे, कुंभिन भूपति तास लाल रे ॥ दा० ॥ ८ ॥ कन कनी मुद्रिका ऊपरें, रत्न जडित जेम होय लाल रे ॥ तेम द्युति शोभे ए हनी, करे प्रशंस सहु कोय लाल रे ॥ दा० ॥ ए ॥ दिन दिन वधती ते हवे, स्वास सुगंधित तास लाल रे ॥ मात शोक्य पण वाहली, पुण्य प्रबल छे जास लाल रे ॥ दा० ॥ १० ॥ पाय नेउर रणझण करे, पद चंक्रमणें तेह लाल रे ॥ लखमी परें क्रीडा करे, तिणें दीपावे गेह लाल रे ॥ दा० ॥ ११ ॥ आठ वरसनी सा थइ, भणवा मूके तास लाल रे ॥ साक्षी मात्र गुरुने करी, करती कला अभ्यास लाल रे ॥ दा० ॥ १२ ॥ जेम आदर्शमां संक्रमे, प्रतिबिंब परें थाय लाल रे ॥ कर्म पयडी मुख शास्त्रनी, पारंगामी कहेवाय लाल रे ॥ दा० ॥ १३ ॥ स्याद्वाद शै ली भली, जिनधर्मे मति होय लाल रे ॥ पंडित तेहवो जग नहिं, आवी जिंते कोय लाल रे ॥ दा० ॥ १४ ॥ कलासायर ते कुंवरी, वाग्वेश्वरी परें जेह लाल रे ॥ तात पासें आवे हवे, कलाचारय सह तेह लाल रे ॥ दा० ॥ १५ ॥ निजकला कौशल पणुं, देखावे तेह तात लाल रे ॥ तात

घणुं हर्षित थयो, देखी एहवी वात लाल रे ॥ दा० ॥ १६ ॥ एक लख एक सहस्त्र दिये, पाउकने दीनार लाल रे ॥ शासनदेवता नारीनें, जिन प्रतिमा दिये सार लाल रे ॥ दा० ॥ १७ ॥ कहे दवदंतीने एहवुं, शोलमा श्रीजिन शांति लाल रे ॥ नावी जिन प्रतिमा अहे,पूजो धरी मनखांत लाल रे ॥दा०॥१८॥ इम कही अदृश्य ते थइ,प्रतिमा लेई तेह लाल रे ॥ हर्षि त वदनें ते नमी, तुरत आवे निजगेह लाल रे ॥ दा० ॥ १९॥ सखीयोमां रमतीथकी, यौवन पावन पामि लाल रे ॥ पर्वते लावण्यजल तणी, मद न खेलणनुं गाम लाल रे ॥दा०॥२०॥ त्रीजे अधिकारें कहे, बीजे खंमें ढाल लाल रे ॥ दशमी उत्तमविजयनो, पद्मविजय सुविशाल लाल रे ॥दा०॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ एकदिन दवदंती पिता, देखी यौवन बाल ॥ तस विवाहने कारणें, करे ते सघले नाल ॥ १ ॥ पण तस सरिखो नवि जड्यो, चिंतातुर ते रा य ॥ वरस अढारनी सा थई, पण तस वर नवि पाय ॥ २ ॥ कन्या म होटी घर थई, तस स्वयंवर ते युक्त ॥ कोइ पुरुष एम सांनली, आवी राय ने उक्त ॥ ३ ॥ स्वयंवर मंमप मांमियो, बहु राजा आवंत ॥ तरुणवयी ब हुराज सुत, रूढिवंत गुणवंत ॥ ४ ॥ निषधराय पण आवियो, कौशलदेश अधीप ॥ नल कुबेर सुत साथ लही, हर्ष लही अति खिप्प ॥ ५॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ देशी माखीना गीतनी ॥ जे जे आव्या राजवी, दीये सहुने सत्का र ॥ राजन जी ॥ पालकनाम विमान ज्युं,मंमप कीध उदार ॥ राजन जी ॥ वात सुणो विवाहनी, वात कहां लां, हर्ष धरां लां, जाणो पुण्यनो खेल ॥ राजन जी ॥ वात० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मांचा मांमया अति नला, मानुं देवविमान ॥ राजन जी ॥ शक्र सामानिकनी परें, दीपे तेह राजा न ॥ रा० ॥ वा० ॥ २ ॥ केइक कमलक्रीडा करे, कुसुमकंडुक केई सार ॥ ॥ रा० ॥ काम समान स्वरूपथी, दीपे तास देदार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ दवदंती आवी तिहां, वर वरवाने हेत ॥ रा० ॥ प्रतिहारी बहु दाखवे, रा य तणा संकेत ॥ रा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ पण मनमां कोई नवि रुच्यो, अ नुक्रमें स्तवतां तास ॥ रा० ॥ कोशलदेशनो नूपति, नामें निषध ते खास ॥ रा० ॥ वा० ॥ ५॥ एहनो सुत नल नामथी, माहाबलवंतो जेह ॥ रा०॥

कुबेर अनुज एहनो अहे, वर जाणी गुणगेह ॥रा०॥ वा० ॥ ६ ॥ वरमा ला तव कुंवरी, नल माहाबल गले थाप ॥ रा० ॥ वाणी थइ आकाशमां, वर वर्यो रूडो आप ॥ रा० ॥ वा० ॥ ७ ॥ धूमकेतु परें त्रीजो, कृष्णरा य कुमार ॥ रा० ॥ खड्ग लेइनें इम कहे, मूक मूक एह नार ॥रा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ घाली फोकट माल ए, दवदंतीयें तुझ ॥ रा० ॥ केम तुं परणे स हजमां, बलीया बेठा मुझ ॥ रा० ॥ वा० ॥ ए ॥ नीमसुता मूको हवे, नहिंतर करो संग्राम ॥ रा० ॥ कृष्णराय जीत्या विना, केम लेइ जाशो धाम ॥ रा० ॥ वा० ॥ १० ॥ तव नल मन हसतो कहे, खेद करे केम मूढ ॥रा०॥ दवदंतीयें मुझने वर्यो, केम न विचारे मूढ ॥ रा० ॥ वा०॥ ११ ॥ परनारीने इछतां, तुझने केम कल्याण ॥ रा० ॥ एम वार्यो पण नवि रह्यो, तव कर्युं खड्ग ते पाण ॥ रा० ॥ वा० ॥ १२ ॥ नल ते अन ल परें थयो, दीसे अति विकराल ॥ रा० ॥ नल ने कृष्ण राजा तणां, अ नीक ते थयां विसराल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ दवदंती मन चिंतवे, धि ग धिग मुझने आंही ॥ रा० ॥ क्षय थाये मुझ कारणें, पुण्यहीन हुं प्राही ॥ रा० ॥ वा० ॥ १४ ॥ जो हुं दृढ जिनशासनें, तो थाउ ए शांत॥रा०॥ जय थाये नल कुमरनो, दोय कटक सुख शात ॥ रा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ इ म कही कलश पाणी तणुं, लेई बांटे त्रण वार ॥ रा० ॥ कृष्णराय तव तेम थयो, जेम निर्वात अंगार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १६ ॥ शासनदेवी प्रजा वथी, कृष्णराय तरवार ॥ रा० ॥ पाकुं फल जेम डुमथकी, हेठी पडी तेणि वार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १७ ॥ कृष्णराय चिंते इस्युं, नहिं सामान्य ए कोय ॥रा०॥ एतो योग्य ले वंदवा, देव सान्निध्य जस होय ॥ रा० ॥ वा० ॥१८॥ करकज जोडी इम कहे, तुं मुझ वंदवा योग्य ॥ रा० ॥ इणि परें कृष्ण ते बोलतो, धरी मनमां शुन्न योग ॥रा०॥वा०॥१ए॥ करी विवाह महोछव ति हां, सहुने विसर्जे राय ॥ रा० ॥ हय गय रह नड बहु दीये, करमोचनने ताय ॥ रा० ॥ वा० ॥ २० ॥ गावे मंगल गोरडी, बांधे कंकण हाथ ॥ रा० ग्रह देवनी पूजा करे, निषध नीम दोय साथ ॥ रा० ॥ वा० ॥ २१ ॥ महा उत्सव करीने तिहां, करमोचन करी खांत ॥ रा० ॥ नीम विसर्जे निषध ने, पुत्र सहित नलि नांत ॥ रा० ॥ २२ ॥ वा० ॥ दवदंतीने शीखवे, मात पिता धरि नेह ॥ रा० ॥ आपदें पण तजीयें नहिं, गायापरें पतिदेह ॥

रा० ॥ वा० ॥ २३ ॥ लेइ आणा माय तायनी, रथमां बेसे तेह ॥ रा०॥ कोशला सन्मुख चालीयो, मनमां धरि निजगेह ॥ रा० ॥ वा० ॥ २४ ॥ जल आशय आवे जिहां, कर्दम शेष रहंत ॥ रा० ॥ धूलें गगन ते ढाइ युं, बीजी धरा मानुं हुंत ॥ रा० ॥ वा० ॥ २५ ॥ बीजे खंमें अति नली, कही त्रीजे अधिकार ॥ रा० ॥ ढाल अग्यारमी सांनलो, पद्म कहे सुख कार ॥ रा० ॥ वा० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ ३२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ मारग हवे इण अवसरें, अर्क अस्तंगत थाय ॥ तम व्याप्युं सहु लोकमां, तिहां नवि कांइ देखाय ॥ १ ॥ पण निजपुर जावा तणी, इछा अधिकी राय ॥ पण आलोक विना थया, परवश सघला नाय ॥ २ ॥ न वि स्थलनी मालिम पडे, जल पण नवि देखाय ॥ गर्त्तावृक्ष अलक्ष सहु, मानुं चौरिंद्रिय थाय ॥ ३ ॥ नल दवदंतीने कहे, नालतिलकथी आज ॥ सहुने अजुवालुं करो, ए महोटुं अम काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी रसीयानी ॥ दवदंती निजनाल प्रमार्जती, दूर थयो अंधकार ॥ राजेसर ॥ नालतिलक आदीत्य परें तपे, हुउ प्रकाश तिवार ॥ राजेसर ॥ १ ॥ पुण्यतणां फल देखो इणि परें ॥ ए आंकणी ॥ सहु सुखमां हवे आगल चालीया, तव मुनिवर तिहां दीठ ॥ रा० ॥ मेरु परें काउस्सग्ग मांहे रह्या, सहि उपसर्ग उक्किठ ॥ रा० ॥ पु० ॥ २ ॥ तव नल कुमर कहे निज तातने, करो दर्शन रुषिराज ॥रा० ॥ वाटमांही प्रसंगें फल थयुं, सारो आतमकाज ॥ रा० ॥ पु० ॥ ३ ॥ मदमात्तो करिवर निज गातनें, खणतो वृक्षनी त्रांत ॥ रा० ॥ तस मदगंधथी त्रमर ते आविया, पण मुनिवर अति शांत ॥ रा० ॥ पु० ॥ ४ ॥ पूरव पुण्यथी ए मुनि पामिया, तव ते निषिध राजान ॥ रा० ॥ पुत्र परिब्रद सहित सेवा करे, जंगम तीरथ मान ॥ रा० ॥ पु० ॥ ५ ॥ नल कुबेर बेहु त्रा त नमी तिहां, करि उपसर्ग ते दूर ॥ रा० ॥ करे प्रशंसा हर्ष धरी घणो, जाग्या पुण्यपमूर ॥ रा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ अनुक्रमें कौशला नयरीने ढूक डा, पहोता नल कहे ताम ॥ रा० ॥ दवदंती सुणी कोशला शोनती, जिनवर चैत्य उद्दाम ॥ रा० ॥ पु० ॥ ७ ॥ दवदंती चिंते धन्य हुं थइ,न

नथी रे, ते डुम नग रण एह रे ॥ पण नवि नल देखुं किहां रे, प्राणवल्ल न मुऊ जेह रे ॥ ७ ॥ द्यो० ॥ नवि देखे नल रायने रे, सुपन संजारे ताम रे ॥ अंब समो नल राजियो रे, राज्य फलादिक गाम रे ॥ ८ ॥ द्यो० ॥ राज्यनुं सुख फलस्वादजे रे, परिजन जाणो ते चंग रे ॥ वनहाथी मल्यो ते हने रे, उपाड्यो ते रंग रे ॥ ए ॥ द्यो० ॥ वृक्षथकी पडवुं थयुं रे, ते नल राय वियोग रे ॥ जाणुं ए सुपनें करी रे, डुर्जन पति संयोग रे ॥ १० ॥ द्यो० ॥ महोटे स्वर तिहां रोवती रे, कहे इणि परें मुख वाच रे ॥ आपद लहे नारी यदा रे, धीरज रहे किम साच रे ॥ ११ ॥ द्यो० ॥ स्वामी केम मुऊने तजी रे, नार नणी थइ तुऊ रे ॥ थाउ प्रसन्न वन देवता रे, स्वामी देखाडो मुऊ रे ॥ १२ ॥ द्यो० ॥ धरती मात विवर दीयो रे, पेसुं धरती मांही रे ॥ नाथ विना नवि रही शकुं रे, नवि पामुं सुख क्यांही रे ॥ १३ ॥ द्यो० ॥ आंसू धारा रेडती रे, सींचे वननां रूंख रे ॥ जल थल आतप ढांहिडे रे, नवि पामे कहिं सुख रे ॥ १४ ॥ द्यो० ॥ अटवीमां नमतां थकां रे अक्रूर देखे ताम रे ॥ वस्त्र अंचलें हरखे तदा रे, चिंते मनमां आम रे ॥ १५ ॥ द्यो० ॥ पियु मन सरोवर हंसली रे, निश्चय डुं हजी आज रे ॥ नहिंतर केम लखे अक्रूरा रे, मुऊ पति नल माहाराज रे ॥ १६ ॥ द्यो० ॥ वांची चिंते एहवुं रे, जाउं तातने गेह रे ॥ नाथ वचन ए मानवुं रे, वैद्यें कह्युं मन जेह रे ॥ १७ ॥ द्यो० ॥ वटमारग चाली हवे रे, जोती अक्रूर तेह रे ॥ जाणे नल पासें अबे रे, अक्रूर तेह गुणगेह रे ॥ १८ ॥ द्यो० ॥ वाघ उठे खावा घणा रे, दीसे नयंकर रूप रे ॥ पासें नवि आवी शके रे, पासें शील अनूप रे ॥ १ए ॥ द्यो० ॥ फणिधर मणिधर मोटका रे, देखी उपजे त्रास रे ॥ पण नवि आवे ढूकडा रे, शील अचल जस पास रे ॥ २० ॥ द्यो० ॥ मद झरता मयंगल घणा रे, दीसे जे अति क्रूर रे ॥ सिंह परें नावे ढूकडा रे, जेहने शील सनूर रे ॥ २१ ॥ द्यो० ॥ इत्यादिक उपइव घणा रे, मारग जातां थाय रे ॥ तेहने सहु विलयें गयां रे, जेहने शील सखाय रे ॥ २२ ॥ द्यो० ॥ केल विंधाय कंथेरथी रे, तेम रुधिरें झरे पाय रे ॥ दव बीहीनी जिम हाथणी रे, शीघ्र थई तेम जाय रे ॥ २३ ॥ द्यो० ॥ मारगें साथ मल्यो हवे रे, महारिखें नरपूर रे ॥ देखीने हर्षित थई रे, जिम तरंग जलपूर रे ॥ २४ ॥ द्यो० ॥ पन्नरमी बीजा खंममां रे, ढाल त्रीजे अधिकार रे ॥ पद्मविजय

कहे शीलथी रे, होवे जयजयकार रे ॥ २५ ॥ यो० ॥ सर्वगाथा ॥ ४६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साथमांहे जेली थई, तव आव्या तिहां चोर ॥ रूंध्यो आवी साथ ने, करता ते अति सोर ॥ १ ॥ बीक होये धनवंतने, निर्धनने शी बीक ॥ बीक साचजापक जणी, जिम जांखुं हुं अलीक ॥ २ ॥ चिंता व्रतवंता जणी, पासन्नो निरन्नीक ॥ शीलवंत बीये घणुं, नवि जाय नारी नजीक ॥ ३ ॥ जाय होय तेहनुं सदा, नवि होय तस शुं जाय ॥ देवपणुं हारी करी, जुउ एकेंद्रिय थाय ॥ ४ ॥ तेमाटें ए लोकने, लागी महोटी बीक ॥ आमा अव ला नासता, आव्या चोर नजीक ॥ ५ ॥ दवदंती कहे सांजलो, न करो बीक लगार ॥ कुलदेवी वाणी परें, सहु सांजले तिण वार ॥ ६ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ ऊउ कलालण जर घडो हे, दारुडारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥ मुफ बेगां केम लूंटशो हे, इम कहे दवदंती नार ॥ पण नवि जाये तसकरा हे, तव कीधो हुंकार ॥ १ ॥ रायजादी बोले वचन रसाल ॥ ए टेक ॥ तव नाठा ते तसकरा हे, बधिर थयुं सवि वन्न ॥ तेह साथना सहु जना हे, चिंते इणि परें मन्न ॥ २ ॥ रा० ॥ आपणने पुण्ये करी हे, आवी कोइ वन देवि ॥ चोरथकी राख्या इणे हे, हुंकारे ततखेव ॥ ३ ॥ रा० ॥ प्रणमी सा थैप वीनवे हे, केम रणमां फरो मात ॥ कोण तमें छो ते कहो हे,तव कही सघली वात ॥ ४ ॥ रा० ॥ सार्थप कहे कर जोडीने हे, नलनारी अम मा य ॥ तस्करथी राख्या वली हे, तिणे तुमें जीवित दाय ॥ ५ ॥ रा० ॥ करी आश्वास राखी घरे हे, देवीपरें आराध ॥ वर्षा तिण टाणे थई हे, वरसे वारि अगाध ॥ ६ ॥ रा० ॥ त्रण रात्रि वरष्यो तिहां हे, विरम्यो मेघ ति वार ॥ साथ मूकी आगल गई हे, दवदंती मनोहार ॥ ७ ॥ रा० ॥ नल वियोगना दिवसथी हे, चौथ नक्त करे नीत ॥ मंद मंद जातां थकां हे, दे खे एक ते नीत ॥ ८ ॥ रा० ॥ राक्षस एक दीठो तिहां हे, यम नृपति मा नुं पूत ॥ श्याम अमावास्या परें हे, काजल परें जेम नूत ॥ ए ॥ रा० ॥ खाउं खाउं करतो थको हे, शेषनाग परें तेह ॥ नारी धैर्य धरी कहे हे,आपुं मारी देह ॥१०॥रा०॥ पण एक माहरी वातडी हे, सांजल तुं थिर थाय ॥ जन्म्या ते मरवा जणी हे, तेहमां बीक न कांय ॥ ११ ॥ रा० ॥ कर्म क

॥ १६ ॥ ना० ॥ तेंहनो पिंगल दास हुं जाणो, पण मुऊ व्यसननी टेव ॥ खात्र खणीने वसंतना घरनो, कोश ह्यो ततखेव ॥ १७ ॥ ना० ॥ नाठो ते धन लेई वेगें, प्राण त्राणने काजें ॥ वाटे चोरें लूंब्यो मुऊने, पापी पापें दाजे ॥ १८ ॥ ना० ॥ इहां आवी राजाने सेव्यो, पण ऊमेति नवि नाठी ॥ दूध ग्रहण टेवे मांजारी, नवि देखे शिर लाठी ॥ १९ ॥ ना० ॥ एक दिन चंड्वती देवीनो, दीठो करंमक रूडो ॥ लेवाने उजमाल थयो हुं, चोरी व्यसन छे नूंमों ॥ २० ॥ ना० ॥ पकडीने बांध्यो कोटवालें, जातां तुमने दीठां ॥ देखी तुमने मुऊ पूरवनां, पाप कस्यां ते नीठां ॥ २१ ॥ना०॥ बीजे खंमें वीशमी ढालें, त्रीजे ए अधिकार ॥ उत्तमविजयनो पद्मविजय कहे, शीलथी जयजयकार ॥ २२ ॥ ना० ॥ सर्वगाथा ॥ ६२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोर कहे वलि सांजलो, तापसपुरनी वात ॥ जे दिनथी मूकी गया, तापसपुर तुमें मात ॥ १ ॥ सार्थवाह ते दिनथकी, नोजन छंमे मात ॥ आचारिज मुख बहु मली, दे प्रतिबोध विख्यात ॥ २॥ सात दिवस नूख्यो रह्यो, नुंजे आठमे दिन्न ॥ लइ नेटणुं एक दिन गयो, कुबेरने आसन्न ॥३ ॥ कुबेर तूठो तेहने, तापस पूरनुं राज्य ॥ छत्रादिक आपे नलां, निज सामंत करि साज ॥ ४ ॥ वसंत श्रीशेखर दीयुं, नाम ते बीजुं सार ॥ वाजंते वाजे करी, आव्यो निजपुर ठार ॥ ५ ॥ दवदंती कहे चोरने, ल्यो दीक्षा माहानाग ॥ चोर कहे आणा करुं, मात धरी तुम राग ॥ ६ ॥ मुनिवर बे आव्या तिहां, आहार गवेषण काज ॥ प्रतिलानीने इम कहे, सुणो स्वामी माहाराज ॥ ७॥ योग्य पुरुष देखो तुमें, तो द्यो स्वामी दीख ॥ जोग्य जाणी हवे मुनिवरु, लेई तेहनी शीख ॥८ ॥ देहरामां जइ तेहवे, दीक्षा आपे तास ॥ मुनिवर चिचरंता गया, अन्यगाम सुखवास ॥ ९ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ सतिय सुनड़ा ॥ ए देशी ॥ नीमराय हवे सांनली, सखि हाख्या नल ते राय ॥ परदेशें नमतां थकां, सखि किहां किण ठामें जाय ॥ १ ॥ एह वात ते अति ऊःखनी थइ ए ॥ ए आंकणी ॥ जीवे के नथी जीवतो, सखी खबर नहिं तस कोय ॥ पुष्पदंती ते सांनली, सखि रुदन ते तेहने होय ॥ एह० ॥ २ ॥ आतुरपणुं थयुं नारीने, सखि अश्रु नवि होय दूर ॥ पुष्प

दंती रोवे घणुं, सखि करे विलाप तें नूर ॥ एह० ॥ ३ ॥ हरिमित्र रायें मोकल्यो, सखि ते खोलणने काज ॥ एक बटुक घणुं रूयडो, सखि अच लपुरें आव्यो साज ॥ एह० ॥ ४ ॥ पूछे चंद्रजशा हवे, सखि क्षेम कुशल नी वात ॥ ते कहे कुशल ते सहु अहे, सखि पण एक सुणो अवदात ॥ एह० ॥ ५ ॥ नल नैमीनी चिंता घणी, सखि द्यूत प्रमुख कही वात ॥ श्रवणें सांजली नवि शके, सखि दुःख धरे बहु गात ॥ एह० ॥६॥ करे वि लाप ते अति घणा, सखि नूख्यो बहुउं तेह ॥ आरतियां सहु देखीने, स खि मागे न जोजन जेह ॥ एह० ॥ ७ ॥ नूख अति जन दुःख दीये,सखि नूख न राखे लाज ॥ नूखथकी सूझे नहिं, सखि घरमां पण कांहि काज ॥ एह० ॥ ८ ॥ नाचे कूदे अन्नथकी, सखि अन्न विना सवि दीन ॥ अन्न विना ए देहडी, सखि पण नवि थाये पीन ॥ एह० ॥ ए ॥ शब्द शास्त्र जणतां थकां, सखि काव्यमांहे मन जाय ॥ काव्य पठंतां गीतनी, सखि होंश घणी मन थाय ॥ एह० ॥ १० ॥ गीत सुणतां जीवने, सखि ना रीमांही मन जाय ॥ नारीविलास जागे वली, सखि लागे नूख जे ताय ॥ एह० ॥ ११ ॥ यतः॥ पेट कपटकी कोट करावही, पेट प्रसाद मही सब गाही ॥ पेट घरोघर टूक मगावहीं,पेट प्रसादपें जार गहाइ ॥ पेट सटें नट शीश कटावहीं,पेट प्रसादें लहे दुःख जाइ ॥ उर देव तजो उर पेट नजो,पेट समो परमेसर नांही ॥ १ ॥ मूकी ते स्थानक हवे, सखि बहुउं चाल्यो जाय ॥ पहोतो दानशाला हवे, सखि जोज्य चिंतामन थाय ॥ एह० ॥ १२॥ जोजन अर्थे उपविशे, सखि दवदंती तव देख ॥ उलखी नीमसुता खरी,सखि मानुं चंद्रनी लेख ॥ वात ते अति सुखनी थइ ॥ ए आंकणी॥१३॥ पाय पडे हर्षित थइ, सखि बटुउं जांखे एम ॥ नूख तो सहु वीसरी, गइ, सखि तुऊ अवस्था ए केम ॥ एह० ॥१४॥ दीठी जीवती तुऊ प्रतें, सखि सघलुं थयुं कल्याण ॥ चंद्रजसाने जइ कहुं, सखी तुऊ घर सवि मंमाण ॥ एह०॥१५॥ चंद्रयशा आवी करी,सखि आलिंगन करे तास ॥ धिक पडो इहां मुऊने, सखि नहिं उपयोग ए जास ॥ एह० ॥ १६ ॥ तें किम मूक्यो नल प्रति,सखि किम मूकी तुऊ एह ॥ ऊगे सूर्य पश्चिमें,सखि पण शीलखंम न देह ॥ एह० ॥ १७ ॥ ताहरे नाल तिलक हतुं, सखि तेह गयुं किहां तुऊ ॥ तव परमार्जे नालने, सखि अजुआलुं थयुं सुऊ ॥ एह० ॥ १८ ॥

२३ ॥ आ नवमांहे थाशे सि६, एतो जगमां ले परसि६ ॥ मो० ॥ तीर्थंकर महाविदेहमांही, विमलनामें विचरंता त्यांही ॥ मो० ॥ २४ ॥ इंद्र सहित वंदनने काज, पहोता अमें सांजल महाराज ॥ मो० ॥ लोकालोक प्रकाशक तेह, केवलज्ञान दर्शनधर जेह ॥ मो० ॥ २५ ॥ घातीकर्म गयां क्षय जास, नोगवे आतम ऋद्धि विलास ॥ मो० ॥ जगत जीवने करे उपगार, देशना वरसे अमृत धार ॥ मो० ॥ २६ ॥ क्षायिक नावें प्रगटी ऋ६, आयुक्षयें लहशे जे सि६ ॥ मो० ॥ तेहना मुखथी सांजली वात, नां खुं तुजने ए अवदात ॥ मो० ॥ २७ ॥ कुबेर अदृश्य एम कही थाय, नोग नोगवे ससरा घर ताय ॥ मो० ॥ बीजे खंमें त्रीजो अधिकार, पूरण हुउ थयो जयजयकार ॥ मो० ॥ २८ ॥ पणवीश ढाल कही एह मांही, क्षमा विजय जिनसान्निधि आंही ॥ मो० ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयनो बाल, पद्मविजय कहे रंगरसाल ॥ मो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ७८१ ॥ इति श्रीमन्महानाष्यादिप्रकरणोक्तन्यायवेत्तारः । वाङ्मयोपनिषद्ज्ञातारः उत्तमविजयास्तेषां चरणकजनृंगतुल्येन पद्मविजयेन विरचिते प्राकृतप्रबंधे सुरासुरवंदिते नेमिनेमि चरित्रे कनकवतीपरिणयनतत्पूर्वनववर्णननामक द्वितीयखंमस्य तृतीयोऽधिकारः समाप्तः॥ प्रथमाधिकारे गाथा ॥४८४॥ द्वितीयाधिकारे गाथा ॥ ४०४ ॥ तृतीयाधिकारे गाथा ॥ ७८१ ॥ सर्व गाथा ॥ १६६९ ॥ सर्व ढाल ॥ ४९॥

॥ अथ द्वितीय खंमस्य चतुर्थाधिकारः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ समरुं सदा, संनव सुख दातार ॥ बीजा खंम तणो कहुं, हवे चोथो अधिकार ॥ १ ॥ थोडो पण रूडो घणुं, सुणतां आनंद थाय ॥ अमृतना एक लवथकी, ज्वर षट मासनो जाय ॥ २ ॥ गजथी पंचानन लघु, पण नेदे गजवग्ग ॥ अष्टापदसिंहथी लघु, पण देवरावे मग्ग ॥ ३ ॥ दीवो पण अति नानडो, टाले बहु अंधकार ॥ वज्रलघुनेदें गिरि, उपध रोग विकार ॥ ४ ॥ लहुडो पण दोहडो कहे, लोक उखाणो न्याय ॥ म्हारे पण आवी मल्यो, ए उखाणो आय ॥ ५ ॥ ते माटे सज थइ सुणो, ए अधिकार उल्लाही ॥ श्रोता सुणतां देखीने, वक्ता रीजें

जी, मुऊने नोलव्यो ॥ हवे करीयें किश्यो उपाय जी, इम मन चोलव्यो ॥१०॥ इण अवसरें नद्दिल नयरें जी, नाग ते व्यवहारी ॥ सुलसा नामें तस नारी जी, श्रावक व्रतधार ॥ अयमंता रूषियें नांख्युं जी, ए निंडं नारी ॥ हरिणगमेषी आराध्यो जी, तन्मय थइ प्यारी ॥ ११ ॥ जब तु ष्टमान थयो तेह जी, तव सुलसा मागे ॥ मुऊ आपो पुत्र ते स्वामी जी, चित्तशुं धरी रागें ॥ तव बोले देवता तेह जी, सांजल रे बाइ ॥ देव कीना पुत्र ते देशुं जी, तुऊने हुं लाइ ॥ १२ ॥ जे कंसें माग्यो तेह जी, मारणने काजें ॥ इम कही ऋतुवंती साथें जी, देव करे साजे ॥ बेहुयें प्र सव्या पुत्र जी, साथें तेहमां ॥ मृतबालक सुलसा पामे जी, हवे जु उ एहमां ॥ १३ ॥ लेइ देवकी गर्न ते आप्या जी, सुलसाने सारा ॥ सुलसा गर्न ते मूक्या जी, देवकीने न्यारा ॥ ते आपे कंसने गर्न जी, मृ तबालक देखी ॥ शिला उपर पठाडे जी, तेहने उवेखी ॥ १४ ॥ सुलसाने घर ते वधता जी, पुत्रपरें पाले ॥ तस नाम अनीक जस बीजा जी, अ नंतसेन नाले ॥ वली अजितसेन निहतारि जी, देवजसा नाम ॥ छठा शत्रुसेन ते जाणो जी, रूपकला धाम ॥१५॥ ऋतुस्नान कर्युं देवकीयें जी, एक दिन सुविलासें ॥ एह सात सुपन ते देखे जी, मनने उल्लासें ॥ सिंह सूर्य अग्नि ध्वज जाणो जी, वली एकगज राजे ॥ वली पद्म सरोवर छठे जी, देव विमान छाजे ॥ १६ ॥ देखे ते रजनी अंतें जी, गंगदत्त रूडो ॥ चवी शुक्रथ की ते आयो जी, सूचत नहिं कूडो ॥ श्रावण वदि आठम जायो जी, दे व सान्निध करे ॥ मूक्या हता जे रखवाला जी, तस निद्रा धरे ॥ १७॥ जेम विष खाईने सुता जी, तेम उंघी गया ॥ ए पुण्य प्रबलनो जोरो जी, देव पहें थया ॥ तेडी वसुदेवने नांखे जी, कंस ते पापियो ॥ कूपमांही आपण फांसी जी, दोर ते कापीयो ॥१८॥ सहु पुत्रने एह तो मारे जी, शुं करीयें हवे ॥ जइ नंदगोकुलमां मूको जी, पुत्रए तो रहेवे ॥ रूडुं रुडुं ए म नांखे जी, सुत निज कर लेइ ॥ देवछत्र करे शिर तास जी, चामर करे केइ ॥ १ए ॥ करे मंगल दीवा आठ जी, मारग अजुआले ॥ देवता तिहां द्वार उघाडे जी, पण को नवि नाले ॥ देखे उग्रसेन ते राय जी, पूले इणिपरें ॥ शुं अचरिज एह उदारें जी, कहे रह्या पंजरें ॥ २० ॥ तुऊ वयरी हणशे जेह जी, ते एह जाय छे ॥ मत कोइ आगल तुमें कहेजो

जी, तस महिमाय ले ॥ हवे नंदगोपाल घरे पहतो जी, तस घर ति ण समे ॥ पुत्री प्रसवे ते जशोदा जी, नारी अति प्रेमें ॥ २१ ॥ तस पुत्री लेइ आपे जी, पुत्र ते आपनो ॥ जस पुण्य प्रबल होय पोतें जी, चारो न पापनो ॥ त्रीजे खंमें पहेले अधिकारें जी, ढाल बीजी कही ॥ मुनिप द्मविजय मनरंगें जी, नविजनें सर्दही ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवकीने पुत्री दीयें, श्रीवसुदेवजी आय ॥ पूछे रक्षक पुरुष ते, क हो आव्युं तुम कांय ॥ १ ॥ देखावे तव ते धुया, कंस धुणावे शीश ॥ एह गरज मुज मारशे, नारीमात्र ते कीश ॥ २ ॥ एहने मारे शुं होये, नाक कान करि लेद ॥ देवकीने पाछी दीये, देखीने स्त्रीवेद ॥ ३ ॥ अंग कृश माटें हवे, कृश बोलावे नाम ॥ देव घणा सान्निध करे, नंदगोवालने धाम ॥ ४ ॥ देवकी कहे वसुदेवने, जाउं जोवा पुत्त ॥ कहे वसुदेवजी सांभलो, एक अमारुं उत्त ॥ ५ ॥ सहसा जातां जाणशे, कंस तुमारी वात ॥ कोइ कारण उद्देशिने, जावुं जुगतुं थात ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ गोवालरुआं चारती, आहिरनो अवतार ॥ ए देशी ॥ बहु नारीशुं प रवरी, गोकुल पूजवा जाय ॥ मनना मोहनीया ॥ अनुक्रमें पहोती देवकी, जिहां जशोदा धाय ॥ मनना मोहनीया ॥ १ ॥ श्रीवछे उर सोहतुं, नीलकमल सम काय ॥ मन० ॥ लक्षण लक्षित देहडी, देखी आणंद थाय ॥ ॥ मन० ॥ २ ॥ मन चिंते इम देवकी, हुं पापी शिरदार ॥ मन० ॥ एह वा पुत्र वियोगथी, हुं रहुं नित घरबार ॥ मन० ॥ ३ ॥ धवरावी पण न वि शकुं, आव्या कीधां पाप ॥ मन० ॥ धन्य जशोदा एहने, एह रमाडे आ प ॥ मन० ॥ ४ ॥ इम गोकुल नित पूजवा, मिष करी जाये तेह ॥ म० ॥ पुत्र रमाडी मोदशुं, आवे ते निज गेह ॥ म० ॥ ५ ॥ शूर्पक विद्याधर त णी, आवे पुत्रा दोय ॥ मन० ॥ विषमिश्रित थण आपती, कृष्णमुखें ते पलोय ॥ मन० ॥ ६ ॥ शकट रच्युं जव मारवा, तव तिहां आवी देव ॥ मन० ॥ ते शकटें हणी तेहने, करतां कृष्णनी सेव ॥ मन० ॥ ७ ॥ नंद जशोदाने कहे, देखी अचरिज तेह ॥ मन० ॥ शूनो नवि मूको तुमें, पुत्र ते गुणनुं गेह ॥ मन० ॥ ८ ॥ ढलतो मूकी घृत घडो, पण नवि जा

उक्यांही ॥ मन० ॥ आलिंगे ते पुत्रने, मनमां धरी उछाही ॥ मन० ॥ ॥ ए ॥ पण चपलाइ अतिघणी, बल करी नाशी जाय ॥ मन० ॥ उदर दामें करी बांधती, उखला साथें माय ॥ मन० ॥ दामोदर नामज थयुं, ते दिनथी परसिद्ध ॥ मन० ॥ शूर्पकसुत तिहां आवियो, जस बहु विद्या सिद्ध ॥ मन० ॥ ११ ॥ अर्जुन वृक्ष विकुर्व्वीने, जमल परस्पर थाप ॥ ॥ मन० ॥ उखलथी तिहां लावियो, हणवा मांझे आप ॥ मन० ॥ १२ ॥ तिणे समे आवी देवता, भांज्यो अर्जुन रुंख ॥ मन० ॥ जमलार्जुन उन्मूलिआ, दूर कस्युं ते दुःख ॥ मन० ॥ १३ ॥ आवे तिहां गोपांगना, उर अंके शिर धारी ॥ मन० ॥ रात दिवस नवि वेगली, रहे ते गोपनी नारी ॥ मन० ॥ १४ ॥ दूध दहीं लूंटी लीये, कृष्ण ते चपल अपार ॥मन०॥ महियारी पासेंथकी, घृत लेइ जाय किंवार ॥ मन० ॥ १५ ॥ पण स्नेहें वारे नहीं, कौतुकथी ते नार ॥ मन० ॥ करे प्रहार ढोली दीये, तेह दधि दधिसार ॥ मन० ॥ १६ ॥ उलंजो दीये नंदने, आवी गोपनी नार ॥ ॥ मन० ॥ पण घरे राखी नवि शके, देखी सुत गुण धार ॥ मन० ॥ १७ ॥ दिन दिन बलथी वाधतो, वात सुणे वसुदेव ॥ मन० ॥ विद्याधरी खेचर तणी, तेह मुवां ततखेव॥मन०॥१८॥मन चिंते वसुदेवजी,गोप्यो पण न गोपाय॥म० बल देखे जो एहनुं, कंस ते करशे अपाय ॥ मन० ॥ १९ ॥ तेडावी बल देवने, शीखामण देइ तास ॥ मन० ॥ कृष्णरक्षाने कारणें, मूके तेहनी पास ॥ मन० ॥ २० ॥ दश धनु उंचा ते बिहु, सुंदर जस आकार ॥म०॥ काम मूकी घरनां सहु, जुवे अनिमेष विकार ॥ मन० ॥ २१ ॥ बलदेवनी पासें जणे, कृष्ण कला भंमार ॥ मन० ॥ कला बहोंत्तेर पारंगमी, कृष्ण ते पुण्य अपार ॥ मन० ॥ २२ ॥ कोइ कालें मित्रज होये, आचारय कोइ काल ॥ मन० ॥ न खमे ते एक एकनो, विरह ते कृष्ण संभाल ॥म०॥२३॥ पुष्ठ ग्रहे वृषभज तणुं, बलवंतो माहावीर ॥म०॥ देखी तस बलरामजी, थाये उदासीन धीर ॥ मन० ॥ २४ ॥ त्रीजी त्रीजा खंमनी, ढाल प्रथम अधिकार ॥ मन० ॥ गुरु उत्तम किरपाथकी, पद्मने जयजयकार ॥म०॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ केडें बहु गोपांगना, मन्मथ प्रेरी जाय ॥ ज्युं भ्रमरी कज ऊपरें, चोक फेर लपटाय ॥ १ ॥ गाय दुहे गोपांगना, मन श्रीकृष्णनी पास ॥ भा

जन विनुं देतुं डुहे, खबर ते न पडे तास ॥ २ ॥ दधि मथतां करे वात डी, घृत तपावतां तास ॥ जमतां बेठां ऊठतां, कृष्ण तणे मन पास ॥३॥ गीत गाय नाटक करे, सिंडुवारादिक दाम ॥ गुंथी स्वयंवरनी परें, थापे कंठ उद्दाम ॥ ४ ॥ जेह तेह प्रकारथी, ध्यावे कृष्ण मनमांहि ॥ दूध दहिं घृत लूंटतो, तिहां पण कृष्ण उछाहि ॥ ५ ॥ गोपी उलंनो दिये, देखी ए हवी वात ॥ तुं तो आव्यो किहांथकी, जिणे अम लूंटी जात ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ तुंतो किहांनो रसीयो रे ॥ मारा नंदना वाला ॥ मारग आवी वसीयो रे ॥ मारा नंदन वाला ॥ ए देशी ॥ गोपी कहे इम वातो रे ॥ मह्रारा नंदना वाल्हा ॥ अमने लूंटी जातो रे ॥मा०॥ मानुं ते किहांनो दाणी रे ॥मा०॥ दहिंनी दोणी ताणी ॥ मा० ॥ १ ॥ तुं ते किहांनो ठाकर रे ॥ मा० ॥ बांधे अमशुं वाकर रे ॥ मा० ॥ तुं ते किहांनो ठेगे रे ॥ मा० ॥ अम डुःख देवा बेठो रे ॥मा० ॥ २ ॥ तुफने केणे मान्यो रे ॥ मा० ॥ अम दधि लूंटवा आण्यो रे ॥ मा० ॥ तुं ते किहांनो स्वामी रे ॥मा०॥ अमची दोणी नामी रे ॥मा०॥३॥ जो तुफ कंस ते जाणे रे ॥ मा० ॥ तो तुफ शिक्षा दाणे रे ॥ मा० ॥ अमने मत तुमें छेडो रे ॥ मा० ॥ केम पकडो अम केडो रे ॥मा०॥ ४ ॥ नंदने जइ जव कहेशे रे ॥ मा० ॥ नंद ते ठबको देशे रे ॥मा०॥ गोपी इणि परें नासे रे ॥ मा० ॥ मनने गमे ते आसे रे ॥ मा० ॥५ ॥ आवी रामने नांखे रे ॥ मा० ॥ अमें कहुं तुमची साखें रे ॥ मा० ॥ दीठां हरतो चित्तडुं रे ॥ मा० ॥ एहवुं अमने हितडुं रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ अणदीठां जाय प्राण रे ॥ मा० ॥ कृष्ण ते काजें वाण रे ॥ मा०॥ मोरली वजावे कान्ह जी रे ॥ मा० ॥ अमची हरतो शान जी रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम उलंनो रामने रे ॥ मा० ॥ फोडे अमचा ठामने रे ॥ मा० ॥ इम क्रीडा करतां गयां रे ॥ मा० ॥ बहु दिन आणे सहु मया रे ॥मा०॥ ८ ॥ शौरीपुर हवे जाणो रे ॥ मा० ॥ समुड्विजय तस राणो रे ॥ मा० ॥ घरमां सुख नोगवतां रे ॥ मा० ॥ मणिदीवा फलफलता रे ॥ मा० ॥ ए ॥ रूडी मोतीमाला रे ॥ मा० ॥ लटके चोक विशाला रे ॥ मा० ॥ कृष्णागरु जिहां दाफे रे ॥ मा० ॥ गंध ते आवें जाफे रे ॥ मा० ॥ १० ॥ कुसुम तणा तिहां ढगला रे ॥ मा०॥ रमणिक थानक सघला रे ॥ मा० ॥ मह्रोटी शय्या ऊडी रे ॥ मा० ॥

कोमल माखण रूडी रे ॥ मा० ॥ ११ ॥ सूती शय्या रातें रे ॥ मा० ॥ शिवादेवी सुखशातें रे ॥ मा० ॥ पाछली रातें देखे रे ॥ मा० ॥ चौद सुपन मन हरखे रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ चौदं तो गजराज रे ॥ मा० ॥ बीजे वृषभ समाज रे ॥मा०॥ सिंह लांगुल उछालतो रे ॥ मा० ॥ त्रीजे सुपन सोहावतो रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ लखमी फूलमाला भली रे ॥ मा० ॥ चंद्रकला अति निर्मली रे ॥ मा० ॥ दिनकर ध्वज ते सोहतो रे ॥मा०॥ कनककलश मन मोहतो रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ पद्मसरोवर जाणीयें रे ॥ ॥ मा० ॥ सागर मनमां आणीयें रे ॥ मा० ॥ वली विमान ते बारमे रे ॥ मा० ॥ रत्नराशि कही तेरमे रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ धूमरहित अग्नि कही रे ॥ मा० ॥ चौदमे सुपनें राणी लही रे ॥ मा० ॥ जागी पीयु पासें जइ रे ॥ मा० ॥ भांखे सुपनां ते सइ रे ॥ मा० ॥ १६ ॥ चोथी त्रीजा खंभनी रे ॥ मा० ॥ ढाल ते रंग अखंभनी रे ॥ मा० ॥ पहेले अधिकारें कही रे ॥ मा० ॥ पद्मविजय भवि सर्दही रे ॥मा०॥१७॥ सर्वगाथा१२०॥

॥ दोहा ॥

॥ समुद्रविजय राजा कहे, सुपन तणुं फल रोक ॥ सुत होशे शुभलक्षणो, कुलदीपक गतशोक ॥ १ ॥ तेह सुणी हर्षित थइ, तेह शिवादेवि नार ॥ राजा पण प्रमुदित थया, समुद्रविजय तिण वार ॥ २ ॥ मंत्रि सामंतें परवस्यो, बेठो सभा मझार ॥ पूछे कौष्टुक निमित्तीयो, जाव कहे इम सार ॥ ३ ॥ इण अवसर चारण मुनि, शमतावंत महंत ॥ तपतापित जस देहडी, आव्या ते गुणवंत ॥ ४ ॥ तव राजा ऊभो थइ, आपे आसन तास ॥ प्रणमी परिगल भावशुं, बेठा मुनिनी पास ॥५॥ राय निमित्तियो बिहु जणां, करकज जोडी जाम ॥ पूछे सुपन विचार ते, मुनिवर भांखे ताम॥६॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नारी ते पीयुजीने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ मुनिवर भांखे इणि परें हो राज, आठ प्रकारें निमित्त ॥ वारि मोरा साहिबा ॥ अंग सुपन स्वर जाणीयें हो राज, उत्पाद चोथुं चित्त ॥ वा० ॥ १ ॥ अंतरिक्ष भौम ने वली हो राज, व्यंजन लक्षण एह ॥ वा० ॥ तेहमां सुपन निमित्त कह्युं हो राज, सुख दुःख आपे देह ॥ वा० ॥ २ ॥ बहोंतेर सुपनां भांखीयां हो राज, हीणां तेहमां त्रीश ॥ वा० ॥ बहेंतालीश उत्तम कह्यां हो राज, तेह

कारीयो ॥ ६ ॥ जि० ॥ कुनय कुसंग कुवास, हास मत्सर नग दारणो ॥ जि० ॥ जनम जरा रोग शोग, मरण मोहरिपु वारणो ॥ ७ ॥ जि० ॥ सायर सम गंभीर, नव विरहो मुझ आपीयें ॥ जि० ॥ सेवक जाणी स्वामी, सांसारिक डुःख कापियें ॥ ८ ॥ जि० ॥ स्तवना करे सुर राय, प्रणमे पाय जिनेसरु ॥ जि० ॥ जननी पासें आवी, मूके तेह सुरेसरु ॥ ए ॥ जि० ॥ रतन सुवर्ण निधान, पूरे जिनवर धामनें ॥ जि० ॥ संहरी ते प्रतिबिंब, पाम्या सहु निज गामने ॥ १० ॥ जि० ॥ जनम मोछव विस्तार, जंबू पन्नत्तिथी जाणजो ॥ जि० ॥ लेश मात्र ते अत्र, भविजन मनमां आणजो ॥ ११ ॥ जि० ॥ हुउं जाम प्रभात, सहस किरण जब ऊगीयो ॥ जि० ॥ दासी जइ नरराय, पुत्र जनमथी वधावियो ॥ १२ ॥ जि० ॥ तद्यथा ॥ तो पियं वइय नामेण चेडीतया, पीण थण वट्टथोलंत मुत्तालया ॥ रय समुक्खित्तपय रणिरमंजीरया, ल्हसिय धम्मिल्ल तहखिसिय उत्तरियया ॥ हरिसरो मंचविंचइय वर तणुलया, सेय जल बिंडुरेदंत मुहपंकया ॥ नर वर पुत्तजम्मेण वद्धावए, सोवि चेडिए बहु दविणु दावावए ॥ मंतिपुरविद्ध सव्वे विसद्धावए, गुरुयवद्धावणं पुरिपय दावणं ॥ १ ॥ जि० ॥ दासी पणुं करे दूर, समुद्रविजय हवे राजीयो ॥ जि० ॥ इंद्रपूजित जोइ तेह, मोछव करे जग गाजीयो ॥ १३ ॥ जि० ॥ पइ गेह पयट्टिय चारुमहं, चंदणरस सित्तसमग्गयहं ॥ पुर रमणि पवित्तिय मंगलयं, वर नट्ट तुट्ट बहु हार लयं ॥ बंदीयण बिहिय कोलाहलयं, दीसंत विचित्त कुकहलयं ॥ नच्चाविय वहुजण बाहुलयं, डुंडुहि वरपूरिय दिसीवलयं ॥ घरि धरिणी बद्धरुतोरणयं, परिघुम्मिरवामण दासणयं ॥ परितुठ भमिर बहुमग्गणयं ॥ अन्य चाल ॥ पवि संत अरकवत्तयं, हीरंतसीसवत्थयं ॥ वजंत भेरीभाणयं, दिजंत भूरि दाणयं ॥ निबद्ध हट्टसोहयं, सुचंत महुरगेययं ॥ भुजंतविविह भोजयं, पिजंत भूरिदाणयं ॥ सोहिऊ माण चारयं, मुचंतबंदिचारयं ॥ करसोक दंमवज्जियं, सुवस्स कलस सज्जियं ॥ २ ॥ जि० ॥ बारमे दिन हवे राय, मोछव महोटा तिहां करी ॥ जि० ॥ नाम ठवे नर नाह, गरभ सुपन मनमां धरी ॥ १४ ॥ जि० ॥ रिष्टरत्न मयी नेम, सुपन मांही देख्या थकी ॥ जि० ॥ अपमंगल थयां दूर, अथवा इष्ट अरिवकी ॥ १५ ॥ जि० ॥ अरिष्टनां फलसम श्याम, नाम अरिष्ट नेमी क

खुं ॥ जि० ॥ सुर नर सेवित तेह, उपगारें विग्रह धखुं ॥ १६ ॥ जि० ॥ जिम गिरिमां तरु ढोड, बीजनो चंद वधे यथा ॥ जि० ॥ रमता नेमि जिणंद, तेह मुणिंद वधे तथा ॥ १७ ॥ जि० ॥ समुद्रविजय घर एम, जनम सुणे वसुदेवजी ॥ जि० ॥ मोत्सव मथुरामांहि, करता ते ततखेव जी ॥ १८ ॥ जि० ॥ नरपति एक दिन कंस ते डुष्ट, पहोतो वसुदेवने घरे ॥ न० ॥ कन्या देखी ने ते भिन्न, मनमां चिंते इणिपरें ॥ १ए ॥ न० ॥ करतो अतिहि विकल्प, देह प्रकंप थयो तिहां ॥ न० ॥ पूछे घर जइ मित्त, वात कहे मुऊने इहां ॥ २० ॥ न० ॥ देवकी सातमो गर्न, मुनियें वध जणी मुऊ कह्यो ॥ न० ॥ मुनि वच थयुं अलीक, के बलथी ए रिपु लह्यो ॥ २१ ॥ न० ॥ अथवा थयो फेरफार, तव नैमित्तियो बोलियो ॥ न० ॥ अलीक न होय वचन्न, मुनि वच किणही न रोलीयो ॥ २२ ॥ न० ॥ तुऊ रिपु जीवतो आज, पण तुऊ खबर न किहां अले ॥ न० ॥ एक उपाय सुण तुऊ, वली बीजो नांखिश पलें ॥ २३ ॥ न० ॥ अरिष्ट वृषन्न तुऊ डुष्ट, महाबल दर्प घणो धरे ॥ न० ॥ तीखा जेहनां शृंग, जीव घणानो वध करे ॥ २४ ॥ न० ॥ घोटक केशी नाम, बलीयो तुऊ घर बांधीयो ॥ न० ॥ गर्दन्न पुष्ट शरीर, मेघ दारुण पण सांधियो ॥ २५ ॥ न० ॥ वृंदारक वनमांहि, बूटा मूको एहने ॥ न० ॥ वध करशे जे आवि, जाणजे वयरी तेहने ॥ २६ ॥ न० ॥ सुण हवे बीजो उपाय, सारंग धनुष ताहरे घरे ॥ न० ॥ पूजाये नित जेह, आरोपण जे तस करे ॥ २७ ॥ न० ॥ ज्ञानीयें कह्युं एम, कोइ न आरोपी शके ॥ न० ॥ नरत अरधनो स्वामि, ते एहनी आग ल टके ॥ २८ ॥ न० ॥ कालीय दमे नागीण, चाणूर मल्लनो वधकरु ॥ न० ॥ पद्मोत्तर ने चंपक, हणशे हाथी नरवरु ॥ २ए ॥ न० ॥ विसर्जे रे निमित्त, ते सांजली चित्त खलन्नव्यो ॥ न० ॥ निश्चय करवा तेह, कंस चिंते अहो किम बव्यो ॥ ३० ॥ न० ॥ न लहे हवे रति क्यांहि, निद्रा पण सुखें न वि करे ॥ न० ॥ सुख नवि वेदे तेह, कारण विनु कोपज धरे ॥ ३१ ॥ न० ॥ सातमी त्रीजे खंम, ढाल ते नांखी मनोहरु ॥ न० ॥ उत्तमविजयनो शिष्य, पद्मविजय कहे सुखकरु ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ २३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखमां निद्रा नवि करे, करे ते कोप अपार ॥ अपमाने मंत्रि प्रमुख,

दंभे प्रजा तिवार ॥ १ ॥वलगा व्यंतरनी परें, अंतेउर पुर सर्व ॥ विरक्त थ युं मन तेहनुं, जाणुं गयो तस गर्व ॥ २ ॥ निज परहित ते नवि लहे, कार्याऽकार्य विचार ॥ मरण समीपें जेहने, सूझ न तास लगार ॥ ३ ॥ राम कृष्ण क्रीडा करे, रह्या ते गोकुलमांही ॥ बूटा ते सहु मूकिया, कंसें तिण समे त्यांही ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ प्रभुने बोलडीये ॥ ए देशी ॥ वृषभ ते हवे इणि अवसरें,मानुं काल भमंतो एह रे ॥ आव्यो बलीयो गोकुलमां, मदवंती जेहनी देह ॥ सांभलो वातडीयां॥ नासे नासे रे सहु इण गाण ॥ सां० ॥ हाको हाको रे कोइ नर जाण ॥ सां० ॥ मागो मागो रे आपुं दाण ॥ सां० ॥ भांगे भांगे रे अम घर घाण ॥ सां० ॥ पड्यां पड्यां रे बहु भंगाण ॥ सां० ॥ आवे आवे रे नहिं तिणे टाण ॥सां०॥ सुझे सुझे रे नहिं को काण ॥सां० ॥१॥ ए आंकणी ॥ शिंगें भांगे भाजनां कांइ, त्रोडे मेडी माल रे ॥ घृतभाजन ने भांजतो ते, दीसंतो विकराल ॥ सां० ॥ २ ॥ भांजे भाजन दूधनां कांइ, वलि दधि केरां ठाम रे ॥ गोपी जन बहु त्रासवे तिहां,नासवे गायनो ग्राम ॥ सां० ॥ ३ ॥ गोपी नासे दश दिशे कांइ, क्रोध चढ्या गोवाल रे ॥ लेइ लकुटने उठीया तस, मारणने ततकाल ॥सां०॥४॥ मदमाता मयगल परें कांइ, न गणे तेह लगार रे ॥ कृष्ण कृष्ण रामरामजी सहु, भांखे इम तिणि वार ॥ सां० ॥ ५ ॥ असमंजस ते देखीनें हवे, नंद तणो ते बाल रे ॥ साहमो धावे तिण समे, सहु वारे बाल गोपाल ॥ सां० ॥ ६ ॥ काम नथी घर गायनुं, वली द्रव्य तणुं इणि वार रे ॥ मत जावो तुम्हें कृष्णजी इम, वृद्ध वारे वारं वार ॥ सां० ॥ ७ ॥ कोटि शिला उपाडशे जे, तस ए कहेतां मात रे ॥ जुद्ध कर्यो बहु भंगथी लेइ, पुच्छ नमाडे गात ॥ सां०॥८॥ मुष्टि मारे कूखमां जेम, पाम्यो निधनने बाल रे ॥ जय जय शब्द करतां थकां सहु, गोपीजन तेणे ताल ॥ सां० ॥ ए ॥ हृदयें भीडे कृष्णने करे, आलिंगन वारं वार रे ॥ राग देखाडें परपरें तिहां, गोपी हर्ष अपार ॥ सां० ॥ १० ॥ क्रीडा करतां कृष्णने कांइ, कंसनो केशी किशोर रे ॥ तेह कीनाशनी सारिखो आव्यो, बीजे दिन तिणे ठोर ॥ सां० ॥ ११ ॥ लंबोदर दामोदरें कांइ, दीठो दाढ विकराल रे ॥ भीषण हेषारव करे मारे, गाय

तणां बहु बाल ॥ सां० ॥ १२ ॥ उष्ट्र जाली फाले तिहां तस, करतो द्वि धा नाग रे ॥ जीरण वस्त्र तणी परें सहु, नांखे धन्य महानाग ॥ सां० ॥ १३ ॥ वृंदारक वने एक दिने, गया कृष्ण तथा बलदेव रे ॥ जमुना न दी तीरें रहे करे, दंश ए नागनी टेव ॥ सां० ॥ १४ ॥ दृष्टिविष ते नाग ने कांइ, कृष्ण ते काढे बार रे ॥ जलक्रीडा सुखें शिशु करे,. धरी आणंद अंग अपार ॥ सां० ॥ १५ ॥ मेष ने खंर एकदिन हणे,ते बलदेवने वली का न्ह रे ॥ वात ते कंसें सांनली, तव नाठी तेहनी शान ॥ सां० ॥ १६ ॥ निश्चय करवा कंसडो, ते पडह वजावे त्यांहि रे ॥ धनुष सनामां मूकीयुं, तस पूजा तणे उत्साह ॥ सां० ॥ १७ ॥ एह धनुष आरोपतो, जे देखुं न जरें अत्र रे ॥ सत्यनामा मुझ बहेनडी, परणावुं नहिं उंबुत्र ॥ सां० ॥ १८ ॥ अरधुं राज ते आपशुं इम, मोहव मांमयो राय रे ॥ सामंत रा य प्रमुख घणां तिहां, उत्साही सहु आय ॥ सां० ॥१९॥ नंदन मदनवेगा तणो ते, श्री वसुदेवनो पूत रे ॥ शौरीपुरथी सांनली ते, आवे धरी आकू त ॥ सां० ॥ २०॥ बलदेवनी पासें रह्या ते, नंद गोठमां रात रे ॥ आणा लही बलदेवनी ते, कृष्णने लेई जात ॥ सां० ॥ २१ ॥ रथवरमां ते बेसि ने जाय, मारग चाल्या दोय रे ॥ शाखा वलगी वट तणी कांइ, रथ ते उं चो सोय ॥ सां० ॥ २२ ॥ अनाधृष्ट कुंअर तिहां नवि, मुकावी शके तेह रे ॥ कृष्णें वड ते नांजीयो महा, बलीयो धरत सनेह ॥ सां०॥ २३ ॥ दे खी नुजबल तेहवुं मन, हरख्यो तेह कुमार रे ॥ पहोता चापघरे हवे,ति हां देखे चाप ने नार ॥ सां० ॥ २४ ॥ देखत विंधाणी घणुं लाग्यां, काम बाण ते नार रे ॥ मांहो मांहे देखतां कांइ, उपन्यो हर्ष अपार ॥सां०॥२५॥ देव अधिष्ठित चाप ते नवि, लेइ शके अनाधृष्ट रे ॥ लेवा जाये दृष्टिथी प ण,पडीयो ते नूपृष्ठ ॥ सां० ॥ २६ ॥ सत्यनामा हंसती तदा, तव कृष्णें खम्युं नवि जाय रे ॥ लीलायें लेइ तेहने,आरोपे चाप ते ठाय ॥ सां०॥२७॥ बहु राजा बलिया मल्या ते, हरख्या देखी तास रे ॥ नारी विशेषें हरखती कांइ, देखी पुण्य विलास ॥सां०॥२८॥ त्रीजे खंमें आठमी कही,ढाल प्रथम अधिकार रे ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी कांइ, होवे जयजयकार ॥ सां०॥२९॥

॥ दोहा ॥

॥ अनाधृष्ट कुंअर हवे, कृष्ण लेइ निज नाय ॥ पहोतो तात तणे घरे,

ड ॥ ६ ॥ यतः ॥ कुलकोडीमान ॥ एगा कोडाकोडी,सत्ताणवइं च सयसह स्साइं॥ पणासं च सहस्सा, कुलकोडीणं मुणेयव्वा ॥१॥दोहो॥ उग्रसेन मु ख राजवी,समुद्रविजय नूपाल ॥अष्टादश कुल कोडिशुं,चाल्या पुण्य विशाल॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज, दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥ सोम क दूतें हो राज, वात सुणावी हो राज, जरासंधें पावी रे, कोपें ते अ ति कलकल्या ॥ कालकुमरने हो राज, मोकले राजा हो राज, साथें सा जा रे, पांचशें कुमरने मोकल्या ॥ १ ॥ करत प्रतिज्ञा हो राज, कालकु मार हो राज, लावुं हार रे, पेगो जो होय अग्रिमां ॥ बहु बल साथें हो राज, जातां तेहने हो राज, तेहवे बेहुने रे, अंतर नवि तेह रानमां ॥२॥ अरध नरतनी हो राज, देवीयें जाएयुं हो राज, मनमां आएयुं रे, परवत एक विकुर्वीयो ॥ उंचो पहोलो हो राज, एक दूवारी हो राज, आवी धा रे रे, बहु चय बलती ज्वलतियो ॥ ३ ॥ शिबिर ते देखे हो राज, हस्ति तुरंग हो राज, देखें चंग रे, शूना थांने बांधीया ॥ केइक बलतो हो राज, प्रहरण निरखे हो राज, पाखर परखे रे, गाम गाम ते सांधिया ॥ ४ ॥ एक चय पासें हो राज, वृद्ध ते नारी हो राज, वरवेश धारी रे, करुण स्वरें रोतीथकी ॥ काल ते पूछे हो राज, रोवे शाने हो राज, तव ते का नें रे, संजलावे इणि परें वकी ॥ ५ ॥ जरासंध नयथी हो राज, यादव ना गा हो राज, सांजली घागा रे, बलथी काल ते आवतो ॥ नाशी न शकी या हो राज, पेगा ए चयमां हो राज, कूयकर घरमां रे, पुत्र कलत्र ज न दाझतो ॥ ६ ॥ कृष्ण ने राम हो राज, जादव बीजा हो राज, अहि मिझा रे, बलीया ए चयमां वली ॥ तिणें हुं रोवुं हो राज, हुं पण मरशुं हो राज, होम ते करशुं रे, देह तणो ते कलकली ॥ ७ ॥ इम कही पे वी हो राज, चयमां सहसा हो राज, देखी तहसा रे, कालादिक कुमर हवें ॥ चिंते एम हो राज, में तो पतिज्ञा हो राज, एहवी कन्या रे, लावुं जिहां होयें सवे ॥८॥ इम कही पेगो हो राज, चयमां तेह हो राज, बा जी देह रे, कीधी राख ते तिहां कणे ॥ गइ तिहां राति हो राज, विहाणुं विहायुं हो राज, कांय न पायुं रे, यादव राय प्रमुख जिणें ॥ ए ॥ देविविलास हो राज, ते सहु देखी हो राज, तेह उवेखी रे, मनमां इणि

परें चिंतवे ॥ देवता पक्षमां हो राज, एहने शुं कहीयें हो राज, एहथी म रीयें रे, करतां एहशुं कैतवें ॥ १० ॥ पुण्य ते खूटे हो राज, सहु पलटा य हो राज, बुद्धि पण जायें रे, होय प्रतिकूल सहु आपणा ॥ दैव जो थाय हो राज, तेहथी दूरें हो राज, होय अधूरे रे, पुण्यें नवि होय बाप ना ॥ ११ ॥ राम केशवनो हो राज, अभिनव पुण्यो हो राज, थाय छे शून्यो रे, अम्ह स्वामीनुं संप्रति ॥ माटें करवुं हो राज, जुद्ध ते साथें हो राज, लेवा बाथें रे, अंगार सुणो नृपति ॥ १२ ॥ जइने 'कहीयें हो रा ज, चिंति वलिया हो राज, ते घणुं बलीया रे, पण गलीया थया सहु तिहां ॥ कही सहु वात हो राज, मगधनो स्वामी हो राज, मस्तक नामी रे, रोवे कहे शुं थयुं इहां ॥ १३ ॥ पडीयो धरणी हो राज, चेतन वली यो हो राज, बहु टलवलीयो रे, परिजन सहित ते सांभली ॥ कंसने काल हो राज, मूआ ते साले हो राज, वा जिम हाले रे, इछित वात ते नवि मली ॥ १४ ॥ सुखमां जातां हो राज, वात ते सुणतां हो राज, तेहज लहेता रे, प्रत्यय कोष्ठक निमित्तियो ॥ पूजी चाल्यो हो राज,मुनिवर मलीयो हो राज, तेतो बलीयो रे, चारण ते चारित्रीयो ॥ १५ ॥ कहेइम वाणी हो राज, समुद्रविजयने हो राज, नमिजिनवरने रे, हरिसेन च क्रीने इणि परें ॥ जिणवर थाशे हो राज, तुमचो पुत्त हो राज,इणिपरें उ त रे,नाम अरिष्ठनेम तुम्ह घरे ॥१६॥ राम ने कृष्ण हो राज, नवमा जाणो हो राज, मनमां आणो रे, बलदेवनें वासुदेव ए ॥ इम सुणी हरख्या हो राज,रैवतपासें हो राज, कीधा उल्लासें रे,सन्निवेश ततखेव ए ॥१७॥ कोडी अढार हो राज,कुल तिहां रहेतां हो राज,श्रेयता सहेतां रे,शुभ दिवसें एक दिन हवे ॥ प्रसवे पुत्त हो राज,सत्य ते भामा हो राज,भामरभामा रे,भानु नाम उरनुं ठवे ॥१८॥ त्रीजे खंमें हो राज,प्रथम अधिकारें हो राज,मनमां धारे रे,बारमी ढाल सोहामणी ॥ गुरु उत्तमनो हो राज, पद्म ते भांखे हो राज, जोए चाखे रे, होंश ते होय तेहने घणी ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ उत्तम दिवस जोइ करी, नाही हवे गोविंद ॥ करी सायर पूजा वली, अष्ठम करे सुखकंद ॥ १ ॥ लवणाधिप आराधीयो, त्रीजा दिननी रात ॥ आसन कंप्युं देवनुं, जाणी कृष्णनी वात ॥ २ ॥ आवी देव ते थानकें, रतन

ढगलो ॥ सु० ॥ १७ ॥ कृष्ण बेठा सहु यादवमांही, सर्वसजामां दुःखीया ॥ सु० ॥ नारद आवी तेहने पूछे, केम तमें दुःखीया न सुखीया ॥ सु० ॥ १८ ॥ कृष्ण कहे रुक्मिणी सुत हरीयो, मुऊ करथी करी बलने ॥सु०॥ जो शुद्धि जाणो तो तुमें नांखो, जश्यें बहु लेश बलनें ॥ सु० ॥ १९ ॥ बो ले नारद सुणो दामोदर, अयमत्तो महाज्ञानी ॥ सु० ॥ तेहतो मोक्ष प धाख्या हमणां, चिद् अमृत थया पानी ॥ सु० ॥ २० ॥ पूछुं जश सीमंधर जिनने, विचरे संशय हरता ॥ सु० ॥ नारद प्रभु पासें हवे आव्या, जिन ने नति ते करता ॥ सु० ॥ २१ ॥ पूछे रुक्मिणीनो सुत किहां छे, तव प्रभु सघलुं नासे ॥ सु० ॥ नारद पूछे धूमकेतुने, वैर ते शे अन्यासें ॥सु०॥ २२॥ केवलज्ञानी जिनवर नांखे, पूरवजवनी वातो ॥ सु० ॥ नारद सुणे इहां नविजन सुणजो, उत्तम ए अवदातो ॥ सु० ॥ २३ ॥ त्रीजे खंमें बीजे अ धिकारें, नांखी ए त्रीजी ढाल ॥ सु० ॥ उत्तमविजयना पद्मविजयने, हो वे मंगलमाल ॥ सु० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ए३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबुद्वीपना जरतमां, मगध देश शालिग्राम ॥ उपवन अति सोहाम णुं, अछे मनोरम नाम ॥ १ ॥ ते उद्यानतो अधिपति, यक्षसुमन अनि धान ॥ सोमदेव द्विजनामथी, वसे ते पुरमां जाण ॥ २ ॥ पुत्र थया दो य तेहने, अग्निजूति वायुजूति ॥ वेद अर्थ पंमित बहु, पाम्या यौवनजूति ॥ ३ ॥ नंदीवर्द्धन नामथी, तेह उद्यान मझार ॥ आचारय पाउधारिया, प्रणमे लोक अपार ॥ ४ ॥ द्विजसुत बेहु अमरप नथा, आव्या सूरीश्वर पास ॥ कोलाहल उपदेशमां, करतां देखे तास ॥ ५ ॥ सत्यनाम सूरी त णो, शिष्य ते बोल्यो ताम ॥ जेंसापरें किम थाउ हो, आवो कहुं हुं आम ॥६॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ चंद्रानन चतुर सुजाण, धातकीखंमें रे ॥ ए देशी ॥ किम जेंसा जां खी आज, वर्त्तीया अमने रे ॥ तव सत्य कहे मुनि साच, नांखुं तुमने रे ॥ एक जेंसो वनमां जोर, मदथी मातो रे ॥ एक दिन जल पीवा काज, सरमां जातो रे ॥ १ ॥ मांही पेशी महोलुं नीर, पीवुं दोहिलुं रे ॥ बीजा ने तो अंतराय, करवुं सोहिलुं रे ॥ जो हो तुम्हें पंमित आज, अम्हने नासो रे ॥ आव्या तुम्हें किहांथी अत्र, तेह प्रकासो रे ॥ २ ॥ जेम हंस

सनामां काक, दीसे तेहवा रे ॥ अज्ञानें आवृत देह, उत्तर देवा रे ॥ मुख नीचुं करी रह्या जाम, मुनिवर बोल्या रे ॥ तुम्हें पूरवजव शीआज, मांस ना लोल्या रे ॥ ३ ॥ एक दिन एक खेतरमांहि, कलबी मूकी रे ॥ रङ्कु प्रमुख सविरात, मतिथी चूकी रे ॥ हवे आवी तेह शीयाल, करडी खाधा रे ॥ तिहांथी मरी ब्राह्मण दोय, करता बाधा रे ॥ ४ ॥ हवे हालिक करीने काल, स्नुपासुत जायो रे ॥ जातिसमरण हवे तास, करमें आयो रे ॥ पुत्रनी वधू माता थाय, ए केम सहीयें रे ॥ इम चिंती मूंगो तेह, दिनथी लहियें रे ॥ ५ ॥ नवि मानो तेडो तास, अमची पासें रे ॥ सहु मलीने तेडी तास, लावे रासे रे ॥ कहे मुनिवर सांजल वात, नवमां नमतां रे ॥ सहु मात पिता ने पुत्र, कलत्रपणे रमता रे ॥ ६ ॥ एक एक अनंती वार, नवस्थिति एहवी रे ॥ केम मूकपणुं कखुं आज, लङ्का केहवी रे ॥ तव प्रणमी मुनिना पाय, नांखे वाणी रे ॥ तुमची कीर्त्ति जगमांहि, सत्य गवाणी रे ॥ ७ ॥ स्वामी कही साची वात, सघली माहरी रे ॥ माहरी मति स्वामी आज, तुम्हें उद्धारी रे ॥ लीये दीक्षा सुणी तेह वाणि, बहु जन बूज्या रे ॥ हालिक बुज्यो द्विजदोय, मोहमां मूंज्या रे ॥८॥ हवे हांसी करे सहु लोक, घर लागें पहोता रे ॥ पण वेर नराणुं तेह, मुनिशुं रहेता रे ॥ हणवाने आव्या तेह, यामिनीमांहि रे ॥ यक्षें थंनाव्या तेह, करि उच्चाहि रे ॥ ए ॥ विहाणें सहु देखे लोक, करत निश्चंजा रे ॥ तस मात पिता करे पोक, जीवन वंजा रे ॥ तव बोल्यो थइ प्रत्यक्ष, यक्ष ते वाणी रे ॥ मुनि वध करनारा एह, थंन्या जाणी रे ॥ १० ॥ जो दीक्षा ले तो आज, मूकुं एहने रे ॥ तव बोल्या पुक्कर वात, एह सहु केहने रे ॥ अम श्रावक थाशुं शुद्ध, इम सुणी मूक्या रे ॥ तस मात पिता हवे जैन, धर्मथी चूक्या रे ॥११॥ अग्निनूति वायुनूति, काल करीने रे ॥ षट पल्य आयु सौधर्म, कल्प वरीने रे ॥ गजपुरमां अर्हद्दास, वणिकनें बेटा रे ॥ पूर्ण नद्र मणिजद्र, नाम धर्मे सेटा रे ॥ १२ ॥ तिहां मुनिवर मलीया सार, महेंद्र नामें रे ॥ तस पूछे मननी वात, संशय गमें रे ॥ शुनी ने ए चंमाल, देखी नेह रे ॥ आवे ले कारण कांय, नांखो तेह रे ॥ १३ ॥ कहे मुनिवर पूरव नाम, अग्नि ने वाय रे ॥ सोमदेव तुमारो तात, अनिला माय रे ॥ तुम तात मरी थयो राय, जितशत्रु नाम रे ॥ परदारा रस तास, बहुलो

काम रे ॥ १४ ॥ तुऊ माता मरीने तेह, सोमनूति विप्र रे ॥ तस रुक्मिणी नामें नाम, हुई ते क्षिप्र रे ॥ जितशत्रुयें दीठी नार, निजघर लावे रे ॥ मरी त्रण पल्योपम आय, नारक थावे रे ॥ १५ ॥ तिहांथी वली हरण थाय, घाय लहीने रे ॥ श्रेष्ठिसुत वली गज थाय, कर्म बहीने रे ॥ जाति समरण वली पामी, तिहांथी चविने रे ॥ वैमानिक सुर त्रण पल्य, आय मविने रे ॥ १६ ॥ चवि तिहांथी थयो चंमाल, एह ते दीसे रे ॥ रुक्मिणी नव नमी शुनी एह,देखी हींसे रे ॥ ते तो पूरणनऽ, जाति संनारी रे ॥ चंमालशुनी प्रतिबोध, दीये तिणवारी रे ॥ १७ ॥ वैराग्य लही चंमाल, अणसण मास रे ॥ पाली नंदीसर द्वीप, सुर थयो खास रे ॥ हवे शुनी अणसण पाली, शंखपुरीमां रे ॥ सुदर्शना राजनी धूय, रूप धूरीमां रे ॥ १८ ॥ मुनि महेंऽ आव्या फेर, पूछे तास रे ॥ पूर्ण नऽ माणिनऽ वात, बोध्या जास रे ॥ पूर्णनऽ मणिनऽ तास, वली कह्यो बोध रे ॥ लेऽ दीक्षा गऽ देवलोक, करती शोध रे ॥ १९ ॥ पूर्णनऽ माणिनऽ दोय, सोहमदेव रे ॥ श्रावकव्रत पूरे नाव, कीधी सेव रे ॥ हथिणाउर नगरें राय, विष्वक्सेन रे ॥ मधुकैटन नामें दोय, शुनधर्मेण रे ॥ २० ॥ वटपुरमां थयो राजा न, कनकप्रन नामें रे ॥ बहुनव नविनंदी देव, पुण्यें जामे रे ॥ बहुनव नमी नारी देव, हवे ते राणी रे ॥ थऽ चंऽाना ऽण नाम, जगमां जाणी रे ॥ २१ ॥ विष्वक्सेन थापे राज्य, मधु निज सुतने रे ॥ कैटन युवराज्यें थापी, थऽ गुणयुतने रे ॥ लेऽ दीक्षा गयो देवलोक, हवे मधुराय रे ॥ त्रण नुवनमां जसने कीर्त्ति, जास गवाय रे ॥ २२ ॥ एक नीमपल्लि पति तास, देशने लूसे रे ॥ मधु चढीयो हणवा तास, बहोले रोषें रे ॥ वटपुरें कनकप्रनराय, मारग मलीयो रे ॥ करी पूजाने सत्कार, हेजें हलीयो रे ॥ २३ ॥ त्रीजे खंमें ढाल, चोथी नांखी रे ॥ एह बीजे अधिकार, चित्तमां राखी रे ॥ गुरु उत्तमविजयनी सेव, मुऊने लाधी रे ॥ कहे पद्मविजय नली नात, उद्यम साधी रे ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नोजन कनकप्रनने घरें,करे ते मधु राजान ॥ चंऽाना नारी सहित, प्रानृतनुं करे दान ॥ १ ॥ मधुनें प्रणमी नारी ते, गऽ अंतेउरमांहि ॥ कामातुर मधु नृप थयो, चाल्यो जीतण त्यांहि ॥ २ ॥ जीतीने पाछो वल्यो,

आव्यो वटपुर तेह ॥ मागे चंद्राना प्रतें, पण नवि आपे एह ॥ ३ ॥ जो ब्रह्मांम त्रूटी पडे,नारि दीधी केम जाय ॥ एक हाणी हांसुं वली, सदु जन मांहे थाय ॥ ४ ॥ नवि दीधी ते कारणें, बलथी ते लेइ जाय ॥ कनकप्रन मूर्छित थयो, श्वासोश्वास न माय ॥ ५ ॥ चेत लहीने आरडे, करे विलाप अनेक ॥ मदमाता घेला परें, थयो कनक अतिरेक ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ दीठी हो प्रनु, दीठी जगगुरु तुज ॥ ए देशी ॥ राजा हो हवे राजा चंद्राना पास, जावे हो हवे जावे तव पूछे इस्युं रे ॥ आव्या हो हवे आव्या तुम्हें बहु काल, कारण हो प्रनु कारण नांखो तुम्हें किस्युं रे ॥ १ ॥ राजा हो हवे राजा बोले ताम,शिक्षा हो अमें शिक्षा देवाने रह्या रे ॥ परस्त्री हो वली परस्त्री वंछे तास, नांखे हो राणी नांखे ते पूज्यज कह्या रे ॥ २ ॥ बोले हो तव बोले मधुनृप एम,नांख्या हो राणी नांख्या दुष्ट ते ग्रंथमां रे ॥ राणी हो तव राणी कहे तुं विचारी, न्याय हो प्रनु न्याय शिरोमणि पंथमां रे ॥ ३ ॥ सांजली हो राय सांजली लाज्यो तेह, देखे हो तिहां देखे इणि अवसर इस्यो रे ॥ गातो हो नृप गातो नाचतो राह,स्वामी हो तिहां स्वामी चंद्राना मति खस्यो रे ॥ ४ ॥ मिंनें हो तेह मिंनें परिवृत दीठ,चिंतवे हो तवचिंतवे चंद्राना तिहां रे ॥ माहरे हो एह माहरे वियोगें एम, पामे हो जुउ पामे दुःख धिग मुज इहां रे ॥ ५ ॥ मधुने हो तिहां मधुने देखावे तास,ते पण हो लह्यो ते पण पश्चात्तापने रे ॥ धुंधुं हो सुत धुंधुने थापी राज, कैटन हो युत कैटन युत व्रत थापिने रे ॥ ६ ॥ विमल हो गुरु विमलवाहननी पास, तप तपी हो बिहु तप तपी द्वादश अंग नण्यां रे ॥ अनशन हो करि अनशन महा शुक्रें थाय, देव हो रूडा देव सामानिकपणें मुण्या रे ॥ ७ ॥ कनक हो प्रन कनकप्रन सही दुःख, धूम हो केतु धूमकेतु ज्योतिष थयो रे ॥ सांनखुं हो तस सांनखुं पूरव वैर, गलीयो हो तेह गलीयो दुःख देइ नवि नयो रे ॥ ८ ॥ चविने हो तेह चविने तापस थाय, देवता हो वली देवता वैमानिक नलो रे ॥ तिहां पण हो तेह तिहां पण महा ऋद्धिवंत, देई हो दुःख देई नवि शक्यो एकलो रे ॥ ९ ॥ चविने हो वली चवीने नम्यो संसार, कर्में हो थयो कर्में धूमकेतु वली रे ॥ इण समे हो तेह इणसमे मधुनो जीव, शुक्रथी हो हवे शुक्रथी रुक्मिणीउरें वली रे ॥ १० ॥ पूरव हो तेह पूरव वै

कहे एहवी वात, कनकमाला कहे सांभलो ॥ ५ ॥ नहिं तुं माहरो पूत, हुं ताहरी माता नहिं ॥ जाण तुं मुऊ आकूत, तव बोले कुंअर सही ॥६॥ विद्या आपो मुऊ, कहेशो तिम करशुं पछे ॥ आपुं विद्या तुऊ, तव कुंअर बोले अछे ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ पारिजातकनुं फूल स्वरगथी ॥ ए देशी ॥ पद्युम्न कहे सुण वात, तुं माहरी ते मुऊने पहेलो पाल्यो ॥ वली प्रज्ञप्ति गौरी विद्या, आपी मुऊने लाल्यो ॥ १ ॥ ना जो के नहिं जो के, जाणो मन आणो ॥ नारे माता नहिं करुं जोग तुऊ साथें रे ॥ नहिं करुं नहिं करुं माहरी माता, हवे गुरुणी मुऊ हुइ रे ॥ ए आंकणी ॥ पुर बाहिर गयो कुमर ते जाम, तव ते अंग विदारी ॥ पूछे पति तव जांखे एहवुं, तुऊ पुत्रे इम कारी ॥नाजो० ॥२॥ करे प्रहार प्रद्युम्नने जइने, तव ते साहमो थाय ॥ मरण लह्या बहु पुत्र शंबरना, क्रोधें देह जराय ॥ नाजो० ॥ ३ ॥ शंबरने प्रद्युम्न ते जांखे, कनकमाला तणी जेह ॥ वात सुणी थिर थइ तिणे हरखी, आलिंगे तस देह ॥ नाजो० ॥ ४ ॥ पश्चत्ताप करे मन बहुलो, नारद ऋषि तव आव्यो ॥ नारदने उलखावे प्रज्ञप्ति, तव तेहने मन जाव्यो ॥ नाजो० ॥५॥ पूजी कहे नारदने वात,कनकमाला तणी जाइ ॥ तव नारद बोले सुण माहरी, वात ते मनमां लाइ ॥ नाजो० ॥ ६ ॥ सीमंधरजीयें जाख्युं तेह, सघलुं तस संजलावी ॥ कहे ताहरी माताने पण छे, ते सुण वात ते गावी ॥नाजो०॥ ७ ॥ पुत्रविवाहें केश ते आपे,आगल थाये जेहनो ॥ ते जामानो सुत जानु छे, थाये विवाह ते एहनो ॥ नाजो० ॥ ८ ॥ एक तो केशनुं दान ने बीजुं, वियोग पड्यो ताहरो जेह ॥ ते रोगें पीडीत तुज माता,मरणने लहेशे तेह ॥नाजो०॥९॥ प्रज्ञप्तियें विमान विकूर्वि बेशी हवे तेहमांहि ॥ नारदने पद्युम्न दोय चाल्या, द्वारिका जणी उछाही ॥ नाजो० ॥ १० ॥ नारद कहे ए द्वारिका ताहरी, धनदें रतने पूरी ॥ प्रद्युम्न कहे विमानने ठावो, करुं आश्चर्य इण पूरी ॥ नाजो० ॥ ११ ॥ जोजो केइ जइयें कें, वहेला के वारु ॥ के वाल्हा माहरा आवो शुज दीदारू रे ॥ ए आंकणी ॥ जानुनी कन्या उपाडी, मूकी नारद पासें ॥ नारद कहे बाला मत बीजे, कृष्णनो सुत सुविलासें ॥ जो० ॥ १२ ॥ वानरनुं एक रूप करीने, एक वानर

देखीने जइने नामाने कहे रे ॥ १२ ॥ नामा कहे जितशत्रुने इम वाणी जो, तुम्ह पुत्री परणावो अम्ह सुतने नली रे ॥ जितशत्रु कहे परणावुं हुं ताम जो, हाथ जाली तुम्हें लेइ जावो अम्हें मोकली रे ॥ १३ ॥ इम सुणी नामा तेडण आवे तास जो, तव तिहां सांब कुमार विचारे एहवुं रे ॥ लोक सहु देखो मुऊ सांबनुं रूप जो, नामा देखो रूप ते कन्या जेहवुं रे ॥ १४ ॥ हाथ जाली तेडी जाय सांबने नारी जो, नर नारी सहु विस्मय पामे तिणे समे रे ॥ कर जाले बीजी कन्यानो आप जो, आप तणो कर आपे नीरु हाथमें रे ॥ १५ ॥ परणी वासभुवनमां जावे जाम जो, तव भृकुटी करी सांब कहे जा वेगलो रे ॥ जइ संजलावे नामाने ते वात जो, ए तो आव्यो सांब ते मानुं मयगलो रे ॥ १६ ॥ नामा कहे कोणें तेड्यो तुऊने ज जो, तव कहे तुम्हें तेड्यो ने परणाव्यो वली रे ॥ साखी सघला द्वारिकावासी लोक जो, लोकें पण तस साख नरी आवी मली रे ॥ १७ ॥ कृष्णें पण आवीने सघली नार जो, सहु साखें परणावी सांब कुमारने रे ॥ एक दिन श्रीवसुदेवनी पासें तेह जो, आवे रमता रमता नमसाकारने रे ॥ १८ ॥ सांब कहे बहु काल नम्या तुम्हें बाहार जो, बहु नारी परण्या तेहमां अचरिज किशुं रे ॥ ताम वेगां कन्या शत परण्या स्वामी जो, अंतर जाणो तुम्हने अमविचें इस्युं रे ॥ १९ ॥ कहे वसुदेव तुं कूपमंडूकनी तुल्य जो, काढी मूक्यो ने बलथी तुं आवियो रे ॥ देश भ्रमण करतां मुऊने बहु मान जो, समुद्रविजय करीने घर तेडी लावीयो रे ॥ २० ॥ पामी ते अपमान ने प्रणमे पाय जो, स्वामी में अज्ञानपणें इम नांखीयुं रे ॥ म हारो ए अपराध ते खमजो स्वामी जो, फरी नहिं नांखुं जेह अम्हें तुम्ह दाखीयुं रे ॥ २१ ॥ त्रीजे खंमें ने त्रीजे अधिकार जो, त्रीजी ढाल ते नांखी एह मनोहरु रे ॥ पंमित उत्तमविजयनो शिष्य कहंत जो, पद्मविजय इम नविका सुणजो गुणधरु रे ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यवनद्वीपथी इण समे, बहु व्यापारी लोक ॥ आव्या करियाणां नरी, दाम करे तस रोक ॥ १ ॥ वेची करियाणां सवे, राजगृहें ते जाय ॥ रत्न कंबलने वेचवा, लाज अधिक इछाय ॥ २ ॥ शीत ऊष्ण हरता सदा, श्लक्ष्ण रोम होय तास ॥ जीवजसा ते देखीने, मूल्य करे तस पास ॥ ३ ॥ व्या

पारी रोवे घणुं, अमचुं महा अनाग ॥ द्वारिका मूकी आवीया, बहुला ला नने राग ॥ ४ ॥ जीवजसा पूछे तदा, द्वारिका नयरी कोण ॥ राजा पण तिहां कोण छे, तव बोले ते वयण ॥ ५ ॥ देवें कीधी द्वारिका, तिहां कृष्ण माहाराय ॥ तव रोती नारी कहे, जीवे यडुसमुदाय ॥ ६ ॥ तेह जरासंधें सुण्युं, काल कंसनुं वेर ॥ संजारी सेनापति, तेडी कहे इणि पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ लाल पीयारीनो साहिबो रे ॥ ए देशी ॥ मंत्री मोरा रे ॥ अर्धनरत ना सहु राजवी रे, तेडो मूकीनें दूत राज ॥ जइयें यादव उपरें रे, हणीयें वसुदेव पूत राज॥ १॥ पुण्य प्रमाणें सहु नीपजे रे ॥ ए आंकणी॥मं०॥ बहु मंत्रीश्वर वारता रे, चलितगलित मति तेह राज ॥ दक्षिण जानु उपाड तां रे, ठीक करे जे संदेह राज रे ॥ पु० ॥ २ ॥मं०॥ श्याम बिल्लाडी आ डी फरी रे, चढतां गजवर खंध राज ॥ त्रूटो हार सोहामणो रे, पडियो मु कुट शिरबंध राज ॥ पु० ॥ ३ ॥ मं० ॥ तूरशब्द विरसो हुवे रे, वाजे प्रचं म वाय राज ॥ जेहथी उद्वेग उपजे रे, कांकरी उमे ते गाय राज ॥ पु० ॥ ४ ॥ मं० ॥ छत्र ध्वजा दंम नांगीयां रे, हय नड रथ ने तुरंग राज ॥ बहु सैन्यें तेह परवर्यो रे, रथना होय तिहां नंग राज ॥ पु० ॥ ५ ॥ मं० ॥ मूत्र पुरीष अंतर नहिं रे, रुधिर विरस पडे त्यांहि राज ॥ विरसशिवा तिहां बोलती रे, गर्दन नूंके ते राहि राज ॥ पु० ॥ ६ ॥ मं० ॥ वाम नयन फरक्युं तिसे रे, शकुन निमित्त इम वारे राज ॥ मति ज्यारें खशी जे हनी रे, अवलुं मनमांहि धारे राज ॥ पु० ॥ ७ मं० ॥ ॥ नारद आवीने कृष्णने रे, वात सवे संजलावे राज ॥ नेरी सुघोषा घंटापरें रे, कृष्णजी ति हां वजडावे राज ॥ पु० ॥ ८ ॥ मं० ॥ देव परें सहु राजवी रे, नेला या दव थाय राज ॥ उग्रसेनादि बलिया घणुं रे, दश दशार्ह वलि राय राज ॥ पु० ॥ ए॥ मं० ॥ समुद्रविजय तस सुत आविया रे, महानेमि सत्य नेमि राज ॥ दृढनेमि रथनेमिजी रे, अरिहा अरिष्टनेमि राज ॥ पु०॥१०॥मं०॥ जयसेन ने महाजय जला रे, तेजसेन जयमेघ राज ॥ चित्रक गौतम जाणी यें रे, श्वफल्क गाजे ज्युं मेघ राज ॥पु०॥११॥मं०॥ अर्थ ने शिवनंदन रूय डा रे, माहारथ विष्णुकसेन राज ॥ अड सुत संयुत आविया रे, अक्रो न नाम बहुसेन राज ॥ पु० ॥ १२ ॥ मं० ॥ पण सुत स्तिमित ते आ

विया रे, सागर षट् सुत लेय राज ॥ हिमवान त्रण पुत्रथी रे, अचल ते सग एय राज ॥ पु० ॥ १३ ॥ मं० ॥ पांच पुत्रशुं आवीया रे, धरुणनामें महाराय राज ॥ पूरण चउ सुत तेडीने रे, अनिचंद्र षटसुत आय राज ॥ पु० ॥ १४ ॥ मं० ॥ श्रीवसुदेवजी आवीया रे, बहु सुतने परिवारें राज ॥ अक्रूर नें क्रूरनामथी रे, ज्वलन अशनिवेग धारे राज ॥पु० ॥१५॥मं० ॥ वायुवेग अमितगतिजी रे, महेंद्रगति वली नाम राज ॥ सिद्धारथ दारु रूयडा रे, सुदारु वीर्यधाम राज ॥ पु० ॥ १६ ॥मं०॥ सिंह ने मतंगज सुत भला रे, नारद ने मरुदेव राज ॥ सुमित्र कपिल बलीया घणुं रे, पद्मकुमुद आदें देव राज ॥ पु० ॥ १७ ॥ मं० ॥ अश्वसेन पुंड्रनामथी रे,रत्नगर्भ अभिधान राज ॥ वज्रबाहु बाहुभृत वली रे, महाबलीया सहु जान राज ॥ पु० ॥ १८ ॥ मं० ॥ चंद्रकांत शशिप्रभ सुणो रे, वेगवान वायुवेग राज ॥ अनाधृष्ट दृढमुष्टिजी रे, हिममुष्टि अति तेग राज ॥ पु० ॥ १९ मं० ॥ बंधुषेण सिंहसेन जी रे,युधिष्ठिर ए नाम राज ॥ शिलायुध ने गंधार वली रे, पिंगल आवे रणकाम राज ॥ पु० ॥ २० ॥ मं० ॥ जराकुमर बाल्हिक कह्या रे, सुमुख ने दुर्मुख जाण राज ॥ राम ते रोहिणी कूखना रे, माहाबलिया गुणखाण राज ॥ पु०. ॥ २१ ॥ मं० ॥ वज्रदंष्ट्र अमितप्रभ रे, रामना बहु आवे पूत राज ॥ मुख्यतणां अभिधा सुणो रे, उल्मूक निषध ते भूत राज ॥ पु० ॥ २२ ॥मं०॥ प्रकृत द्युति चारुदत्त ध्रुव रे, शत्रु मदन ने वली पीठ राज ॥ श्रीध्वज नंदन चित्र रूयडा रे, श्रीमान दशरथ इठ राज ॥ पु० ॥ २३ ॥ मं०॥ देवानंद ने नंदजी रे, विपृथु शांत कुमार राज ॥ पृथु ने शतधनु नामथी रे, नरदेव माहाधनुसार राज ॥पु० ॥ २४ ॥ मं० ॥ दृढधनु आदि आवे घणा रे, ए बलदेव कुमार राज ॥ कृष्णना सुत हवे सांभलो रे, भानु ने भामर धार राज ॥ पु० ॥२५॥मं०॥ महाभानु अनुभानुजी रे, बृहध्वज सुविदित्त राज ॥ अग्निशिख विष्णु संजयो रे, अकंपित शुभवित्त राज ॥ पु० ॥ २६ ॥ मं० ॥ महासेन उदधि गौतम वली रे, सुधर्म ने वली धिर राज ॥ प्रसेनजित सूरय चंद्रजी रे,वर्मा ने वली गंभीर राज ॥ पु० ॥२७॥ मं० ॥ चारुक कृष्णक कृष्णना रे, सुचारु देवदत्त राज ॥ भरत ने शंख प्रद्युम्नजी रे, सांब प्रमुखजी आयात राज ॥ पु० ॥ २८ ॥ मं० ॥ विष्णुपुत्र सहसागमे रे, उग्रसेन राजान राज ॥

सुणजो हर्ष अपार ॥ १ मूक्या नेमी जिनवरें, कुंभ अरिना राय ॥ जरा संध सुत थापियो, सहदेवने पितु ठाय ॥२॥ शौर्यपुरें महानेमजी, समुद्र विजय सुत थाप ॥ हिरण्यनाभ कोशल ठवे, कृष्णजी हर्षे आप ॥ ३ ॥ धर नामें मथुरा ठवे, उग्रसेन सुत सार ॥ मातली निजथानक गयो, प्रणमी नेम कुमार ॥ ४ ॥ खेचरी एक आवी कहे, जीत्या श्रीवसुदेव ॥ नारद मुखथी सांभली, नवमा तुम्हें वासुदेव ॥ ५ ॥ एम कहे आव्या तुरत, सांब प्रद्युम्नने ताम ॥ परणावी बहु कन्यका, कीधां उत्तम काम ॥ ६ ॥ जीवजसा अग्नि भखे, हय गय रह भड कोश ॥ नीत वधे गोविंदने, वधते परम संतोष ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ श्रीधर्मजिणंद दयाल जी, धर्मतणो दाता ॥ ए देशी ॥ श्रीनेमिजिनेश्वर आगें जी ॥ हर्षथी अति माता ॥ सहु कूदे नाचवा लागे जी ॥ पामी जगत्राता॥सहु परमाणंद ते पामे जी ॥ ह०॥ आणंदपुर वसे तिणे ठामें जी ॥ पा० ॥ १ ॥ जिन भुवनमांही मनोहार जी ॥ ह० ॥ तिहां तीर्थ प्रसिद्ध थयुं सार जी ॥ पा० ॥ हरि साधवा चाल्या देश जी ॥ ह० ॥ भरतार्द्धमां आणि निवेश जी ॥पा०॥२॥ साथें सोल सहस राजान जी ॥ह०॥ बहु खेचरपतिशुं कान जी ॥ पा० ॥ जिहां कोटि शिला सन्निवेश जी ॥ह०॥ तिहां आवे भरतार्द्धेश जी ॥ पा० ॥ ३ ॥ तेह उंचीने विस्तार जी ॥ ह०॥ योजन परिमाण श्रीकार जी ॥ पा० ॥ सुरसमूह आश्रितशुं हाली जी ॥ ह० ॥ तस बल परीक्षा करे चाली जी ॥ पा० ॥ ४ ॥ तिहां पहेला वासुदेव आवी जी ॥ ह० ॥ धरे वामभुजाग्रें ठावी जी ॥ पा० ॥ बीजा वासुदेव शिरें लावे जी ॥ ह० ॥ त्रीजा कंठ देशें ठावे जी ॥ पा० ॥ ५ ॥ वक्षस्थलें चोथा जाणो जी ॥ ह० ॥ हृदयें पंचम मन आणो जी ॥ पा० ॥ लावे छठा केडने देशें जी ॥ ह० ॥ सातमा उरु लगें सुविशेषें जी ॥पा० ॥ ॥ ६ ॥ ढिंचण लगें आठमा सार जी ॥ ह०॥ नवमा चउ अंगुल धार जी ॥ पा० ॥ अवसर्प्पिणीयें बल प्रांहि जी ॥ ह० ॥ सहु नरनां घटतां यांही जी ॥ पा० ॥ ७ ॥ जय जय तिहां शब्द प्रयुंजे जी ॥ ह० ॥ सुर असुर सहु हरि पूजे जी ॥पा०॥ खटमासमां त्रण खंम साधी जी ॥ह०॥ पगडी पुण्य पूरव लाधी जी ॥पा०॥८॥ द्वारिका नयरीमां आव्या जी ॥ ह०॥ बहु

मोछव कौतुक नाख्या जी ॥पा०॥ सहु जादव निज निज गामें जी ॥ह०॥
थापे हरि माहागुण कामें जी ॥पा०॥९॥ शुन दिवसें शुन मुहूरतें जी ॥ह०
सहु आवे निज निज सत्तें जी ॥पा०॥ सिंहासनें थापी कान जी ॥ह०॥
वली बलदेवने बहु मान जी ॥पा०॥१०॥ अनिषेक करे मन रंगें जी ॥ह०॥
सुर सान्निधें जादव संगें जी ॥पा०॥ सोल सहस मली राजान जी ॥ह०॥
मंगल जय जय तिणे थान जी ॥ पा० ॥ ११ ॥ गंगा मागधनां पाणी जी
॥ ह० ॥ देवता ते थानक आणी जी ॥ पा० ॥ मणि कनंकना कलश ते
नरिया जी ॥ ह० ॥ अनिषेक करे परवरिया जी ॥ पा० ॥ १२ ॥ सोल स
हस ते गोविंद परणे जी ॥ ह० ॥ आठ सहस करे बलि शरणे जी ॥पा०॥
जादवना कुमरने आपे जी ॥ ह० ॥ शेष आठ सहस निन्न थापे जी ॥पा०
॥ १३ ॥ करे विवाह मोछव नारे जी ॥ ह० ॥ हवे विसर्जे सहुने त्यारें
जी ॥ पा० ॥ दशार्ह ते दश बलदेव जी ॥ ह० ॥ शोल सहस राजान व
ली देव जी ॥ पा०॥१४॥ साडा त्रण कोडी कुमार जी ॥ह०॥ प्रद्युम्न प्रमु
ख वली सार जी ॥ पा० ॥ सांब प्रमुख ते साठ हजार जी ॥ ह० ॥ डुर्दां
त महा जोधार जी ॥ पा० ॥ १५ ॥ वीरसेन प्रमुख वली जेह जी ॥ह०॥
एकवीश सहस कह्या तेह जी ॥ पा० ॥ बीजा पण केइ हजार जी ॥ह०॥
पाले कृष्णनी आणा सार जी ॥ पा० ॥ १६ ॥ करे क्रीडा नव नव रंगें
जी ॥ ह० ॥ बहु कौतुकें अति उछरंगें जी ॥ पा० ॥ कानन आराम उद्या
न जी ॥ ह० ॥ सरिता सर वावि ने थान जी ॥ पा० ॥ १७ ॥ क्रीडापर
वर्ते विचरंता जी ॥ ह० ॥ निजनारी सहित सुखवंता जी ॥ पा० ॥ सुरलो
कमां सुरपरें जाणो जी ॥ह०॥ गयो काल न जाणे तिण ठाणो जी ॥पा०॥
॥ १८ ॥ हवे समुद्रविजय शिवा देवी जी ॥ ह० ॥ सहुनी वात देखी एह
वी जी ॥ पा० ॥ कहे नेमि कुंवरने वाणी जी ॥ ह०॥ नारी परणो एक गु
ण खाणी जी ॥ पा० ॥ १९॥ अम पूरो मनोरथ पूत जी ॥ ह० ॥ सफलुं
यौवन नारी जुत्त जी ॥ पा० ॥ त्रण ज्ञानी नव उदवेगी जी ॥ ह० ॥ कहे
नेमि जिणंद वैरागी जी ॥ पा० ॥ २० ॥ कन्या जब योग्य ते लहीयें जी
॥ ह० ॥ तव परणुं एम अमें कहीयें जी ॥ पा० ॥ ए नारी नरगनी बारी
जी ॥ ह० ॥ डुहफल नववननी क्यारी जी ॥ पा०॥२१॥ जे मूरख लोकें
सेवी जी ॥ ह० ॥ सुणो माता तुमें शिवादेवी जी ॥ पा० ॥ बोलवुं घटे ए

हश्युं नांही जी ॥ ह० ॥ कहे बालगोपाल एम आहिं जी ॥ पा० ॥ २२ ॥ यतः ॥ ईयर महिला न रुच्चइ, सुंदर महिलाण नब्रि संपत्ति ॥ एमेव विरइ परिव,ढ्ढिएहिं दियहा गमिषंति ॥ १ ॥ इम विनयें गंनीर कही वाणी जी, ॥ ह० ॥ नारी प्रतिषेधे मन आणी जी ॥पा०॥ जितमार कुमार श्रीनेम जी ॥ ह०॥ माय ताय समजावे एम जी ॥पा०॥२३॥ त्रीजे खंमें अधिकारें जी ॥ह०॥ चोथे ढाल प्रथम उदार जी ॥पा०॥ गुरु उत्तमविजयने संगें जी॥ ह०॥ कहे पद्मविजय मन रंगें जी ॥ पा० ॥ २४ ॥सर्व गाथा॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अपराजितथी इण समे, चवि जसमतीनो जीव ॥ उग्रसेन घर धारिणी, कूखें आव्यो खीव ॥ ॥ १ ॥ रूप लक्षण गुणथी नरी, प्रसवे पुत्री जाम ॥ राजिमती अनिधा ठवे, उग्रसेन नृप ताम ॥ २ ॥ पांमव थानक मोकले, कृष्णजी करि बहु मान ॥ इणसमे द्वारिकामां वसे, धनसेन अनिधान ॥ ३ ॥ कमला मेला नामथी, तेहने पुत्री एक ॥ ननसेनने आपे नली, रूपें रति अतिरेक ॥४॥ नारद नमता आविया, ते ननसेनने गेह ॥ ननसेन विवाह व्यग्रथी, नवि पूज्यो धरि नेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ स्वामी सीमंधर वीनती ॥ए देशी ॥ कलिप्रिय नारद उतपत्या, करवाने अनन्न रे ॥ सांब प्रिय मित्र घर आवियो, सागरचंद ढे जन्न रे॥ कलि० ॥ १ ॥ थइय ननोने पूछे इस्युं, तुमो जाउ गमो गम रे ॥ कोइक कौतुक पेखियुं, कहो अम तुमें स्वाम रे ॥ कलि० ॥ २ ॥ कहे रे नारद अमें पेखीयुं, अचरिज मनोहार रे॥ कमला मेला धनसेननी, धूया रूपनंमार रे ॥ कलि० ॥ ३ ॥ सांप्रत दीधी ननसेनने, गया कहीने आकाश रे ॥ सागर कमला मेला तणो, थयो रागी अति खास रे ॥ कलि० ॥ ४ ॥ नारद कमला मेला घरे, गया तव इम पूछे रे ॥ आश्चर्य कहो तब ते कहे, दीठा अचरिज दू ढे रे ॥ कलि० ॥ ५ ॥ रूपमां सागर चंदजी, कुरूपी ननसेन रे ॥ सागर रागी ते पण थइ, चढयुं मोहनुं घेन रे ॥ कलि० ॥ ६ ॥ नारद सागरने कहे, ताहरी रागी ढे तेह रे ॥ सागर विरहसागर पड्यो, दीये विरह दुःख देह रे ॥ कलि० ॥ ७ ॥ पीत मदिरा हवे सांब जी, आवे सागर पास रे ॥ हाथ जाली रे सागर तणो, बहु कुमर सुविलास रे ॥कलि०॥८॥

॥ १९॥ नारी लेइ निज साथें ए, उद्यानें सहु आवे ए, सोहावे ए, नव न व आभूषणथकी ए ॥ २० ॥ पण श्रीनेमिजिणंदने, मदन खोभावी नवि श के ए, धक्के ए, मारी काढ्यो मूलथी ए ॥ २१ ॥ कोकिल तिहां कूजित करे, वनपालक आवी भासे ए, विलासें ए, कृष्णजी वन फल फूलियो ए ॥२२॥ भिंभिम देवरावे तिहां, वनलक्ष्मी जोवा जाय ए, राय ए, सहुजन ऋद्धिशुं आवजो ए ॥ २३ ॥ ते सुणी सहुजन हलफल्यो, तरुणलोक मन हरखे ए, वरखे ए, मयण' ते बाण सडासडे ए ॥ २४॥ चोथे खंडें बीजी ए, ढाल प्र थम अधिकारें ए, प्यारें ए, पद्मविजय भांखी भली ए ॥२५॥सर्वगाथा॥७०॥

॥ दोहा ॥

॥ हय गय रह भड परिवर्यो, अंतेउर सहु साथ ॥ समुद्रविजय मुख राजनी, वली साथें नेम नाथ ॥१॥ सुर अनुत्तरथी अनंत गुण, रूपें नेम कुमार ॥ श्वेत छत्र धरते थकें, सोहे गुण श्रीकार ॥२॥ धवलतनु ने धव ल ध्वज,धवलछत्र शिर जास ॥ धवल जसे बलदेवजी, रथ चाले वाम पास ॥ ३ ॥ उल्मुकनाम सेनापति, भानु भामर अक्रूर ॥ सांब प्रद्युम्न सारण निसढ, पुंड्रप्रमुख वली भूर ॥४॥ भट कोटीथी परिवर्यो,हरि बलि नेमी ती न ॥ नगर नागरी देखती, करी कटाक्ष ते पीन ॥५॥ नजर ठरी जे ऊपरें, तास प्रशंसे तेह ॥ आवी वाद करे इस्यो, भांखे आप सनेह ॥६॥ कोइ प्रशं से कान्हने, कोइ प्रशंसे नेम ॥ कोइक श्रीबलदेवने, स्तवती धरती प्रेम॥७॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ तन मन कीधुं तुनें भेट ॥ म्हारा वाल्हा ॥ तन० ॥ ए देशी ॥ कानजी जावे उद्यान ॥ ए आंकणी ॥ रमवा चालो जाइएं वन मां,पडहथी थाये विन्नाण ॥ मारा वाल्हा ॥ क्रीडावसंतनी करवा चाल्या, बेसी निज निज यान ॥ मा० ॥ का० ॥१ ॥ तिहां मंदार ने दमणो मरु उ, कुंद चंदननां थान ॥ मा० ॥ जाइ जूई ने केतकी वेली, वली रुद्राक्षनां रान ॥ मा० ॥ का० ॥ २ ॥ पारिजात ने धातकी सल्लकी, रायण चूत अ मान ॥मा०॥ कोरिंट नें मंदार मनोहर, जोवे नेम बलि कान्ह ॥ मा० ॥ ॥ का० ॥ ३ ॥ रुखनी जाति न जगमां एहवी, न जडे तेह उद्यान ॥ ॥ मा० ॥ सहु जादव तिहां केलि करता, ज्युं नंदन सुर तान ॥ मा० ॥ ॥का०॥ ४ ॥ खाद्य खाये हसे खेले रंगें, केइ करे मद्यपान ॥ मा० ॥

हा ॥ कृष्णगुणहेतु इम जाणीयें, वली गुण कहुं केहा ॥ वा० ॥ २५ ॥ इम सखी वात करतां थकां, कही सातमी ढाल ॥ पद्म कहे सांजलो नविज ना, प्रभु चरित्र रसाल ॥ वा०॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ २२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजिमती इण अवसरें, मूके दीर्घ निसास ॥ तव सहियर पूछे इस्युं, करती कोडि विखास ॥१॥ आग्रह करी जब पूछीयुं, सा कहे तव सवि पाद ॥ दाहिण फुरके लोयणं, अपमंगल अविवाद ॥ २ ॥ हृदयमांहि ले दाय जिम, बुरीयें छेदे तेम ॥ जगअद्भुत जगवालहो, देखंतां प्रभु नेम ॥ ३ ॥ इम सुणीने सहियरो कहे, मत कहे एहवुं वयण ॥ अपमंगल दूरें गयां, सांजल रे अम वयण ॥४॥ निरुपम जोग तुमें जोगवो, निरुपम ने मनी संग ॥ विलंब नहिं एहमां हवे, करजो नवनव रंग ॥५॥ मनवल्लभ तुझ वालहो, ए आव्यो निरधार ॥ मत कायर था एहमां, एम जंपे सहु नार ॥ ६ ॥ इण अवसर जगतातजी, आगल चाले जाम ॥ परमेश्वर जिनजी सुणे, करुण दीन स्वर ताम ॥७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ नंद सलूणा नंदना रे लो ॥ ए देशी ॥ नेमजी कहे सुण सारथी रे लो, कुण रुवे छे दुःखजारथी रे लो ॥ केवल करुणाहेतु छे रे लो, तव सारथी इम कहेत छे रे लो ॥ १ ॥ केम पूछो प्रभु जाणता रे लो, तुम वि वाहें पशु आणता रे लो ॥ जादव जोजन कारणें रे लो, एह पशु संहा रणे रे लो ॥२॥ गाम नगरवासी तणा रे लो, गुफा पर्वत निकुंज घणा रे लो ॥ जलचर थलचर नजचरा रे लो, जीव घणा जेला कह्या रे लो ॥३॥ आणी बांध्या एहमां रे लो, नहीं श्वासोश्वास जेहमां रे लो ॥ निज निज जाषायें रडे रे लो, मरणना जयथी तडफडे रे लो ॥ ४ ॥ नेम कहे वेरा गीयो रे लो, रथ फेरो सोजागीयो रे लो ॥ जोऊं नजरें माहरी रे लो, एहनो नहिं कोइ वाहरी रे लो ॥ ५॥ मृग सूअर घणा रोऊडां रे लो, गामर स सला जेंसडा रे लो ॥ राशिबद्ध केइ पांजरे रे लो, बेडीबद्ध विनती करे रे लो ॥ ६ ॥ मोर तित्तर लावां घणां रे लो, पंखी लखो नवि जाये ग ण्यां रे लो ॥ गोह नकुल बहु रुंधिया रे लो, निर्दय पुरुषें वेधिया रे लो ॥७॥ शून्य ने संभ्रांत लोयणां रे लो, जीवितनी वांछा तणा रे लो ॥ प्रभु

॥ दोहा ॥

॥ लघुनाई जिन नेमनो, रहनेमी जस नाम ॥ राजिमती रागी करण, जाये नित तस धाम ॥ १ ॥ फल वस्त्रादिक मोकले, पण ते जाणे एम ॥ नेम स्नेहथी मोकले, देवर ए रहनेम ॥ २ ॥ शुद्ध हृदयथी ते लिये, प ण जाणे रहनेम ॥ फल वस्त्रादिक तो लिये, जो मुझ ऊपर प्रेम ॥ ३ ॥ हांसी करतां एकदा, कहे सुंदरी सुण वाण ॥ नारी रतन तुझ परिहरी, मुझ भ्राता ते अजाण ॥ ४ ॥ पण तुझ कांहि गयुं नथी, भोगव मुझशुं भोग ॥ फरि फरि यौवन दोहिलुं, दोहीलो ए संयोग ॥५॥ रहनेमी कामी तणो, राजिमती लही भाव ॥ धर्म कुशल धर्म वयणथी, पडिबोहे सद्भाव ॥ ६ ॥ पण नवि पडिबोही शकी, निजदेवर जिनभ्रात ॥ हवे बीजे दिन शुं करे, ते सुणजो अवदात ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ दे थाहरी मुझ पांखडी जी ॥ ए देशी ॥ एकदिन राजीमती सती जी, पीवे पय असराल ॥ रहनेमी आव्यो तदा जी, सा भांखे तिण ताल के ॥ १ ॥ देवर माह्या हो राज वारु, मारी वात सुणो सुखकारु ॥ ए आंक णी ॥ कनकथाल भावो तुमें जी, वमन करुं तेह मांही ॥ ते भाव्यो उता वलो जी, धरतो हर्ष उमाहि के ॥ दे० ॥ २ ॥ तेहमां वमन करी कहे जी, पान करो तुमें एह ॥ ते कहे केम हुं कूतरो जी, पान करुं नहिं रेह के ॥ दे० ॥ ३ ॥ सा कहे जो जाणो तुमें जी, तो मन करो विचार ॥ वमन क री मुझने गया जी, जिनवर नेम कुमार के ॥ दे० ॥ ४ ॥ दुःखखाणी जा णी अंगना जी, त्याग करी गया तेह ॥ ते पीवा इछो तुमें जी, मांस रुधिर भरी देह के ॥ दे० ॥ ५ ॥ तेहथी तुम सुख केम थशे जी, हो प्रभुना लघु भ्रात ॥ एह विमासो केम नहिं जी, एहथी नहिं सुख शात के ॥ दे० ॥६॥ कनककुंभी अशुचिभरी जी, कनकपिधान ते जाण ॥ बाहिर सुंदर देखीयें जी, माने सार अजाण के ॥ दे० ॥ ७ ॥ यतः ॥ सवैयो ॥ देह अचेतन, प्रेतदरी रज, रेत भरी, मल खेतकी क्यारी ॥ व्याधिकी पोट, अराधिकी उट, उपाधिकी झोट,समाधिसों न्यारी ॥ रे जीव देह, करै सुखहानि, इतो परि तो तोहिं, लागत प्यारी ॥ देह तो तोहि, तजैगी निदान पै, तुहि तजे न क्युं, देहकी यारी ॥ १ ॥ वीजचंचल जेम नेहलो जी, अथवा रंग प

॥ अथ चतुर्थखंमस्य द्वितीयोऽधिकारः प्रारन्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ जुगला धरम निवारणो, रुषनदेव नमि पाय ॥ बीजा ए अधिकारमां, मुनिवर गुण कहेंवाय ॥ १ ॥ इणि अवसर हवे पांमवा, नित द्रौपदी जे नार ॥ साथें केलि क्रीडा करे, माने सफल अवतार ॥ २ ॥ इण अवसर द्रौपदी घरे, नारद आव्या जाण ॥ मान न देवे द्रौपदी, रीष चढी तिण ठाण ॥ ३ ॥ उत्पत्तिया आकाशमां, धातकी नरतें जाय ॥ नाम अमरकं का नयर, जिहां पद्मोत्तर राय ॥ ४ ॥ ते पण स्त्रीनो लोलुपी, नारदने क हे एम ॥ मुऊ अंतेउर सारिखुं, कहीं हे के नहिं केम ॥ ५ ॥ रुषि कहे कू पमंमुक परें, नवि जाणे कांय वात ॥ पांमव घर द्रौपदी जेसी, त्रिजुवनमां न विख्यात ॥ ६ ॥ राय मित्र सुर मोकली, तेडावी ते नार ॥ पद्मोत्तर क हे सुंदरी, बीहिक न धरे लगार ॥ ७ ॥ मुऊशुं नोगव नोग तुं, द्रौपदी बोले ताम ॥ मासांतें कहेशो तिको, करशुं तुमचुं काम ॥ ८ ॥ द्रौपदी पण ते महासती,करे तपस्या सार ॥ हवे परनातें पांमवा,नवि देखे निज नार॥ए॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ एकवीशानी देशी ॥ हवे द्रौपदी रे, खोल करणने नीसखा ॥ देश न यरने रे, वनमां जोवा सहु मल्या॥नवि लाधी रे, शुद्धि कांइ द्रौपदी तणी॥ पांमव माता रे, आवी कहे कृष्णजी नणी ॥ १ ॥ त्रू० ॥ कहे कृष्णने द्रौप दी कोइ, देव दानव हरि गयो ॥ कृष्ण सुणीने थया शोकातुर, कुण नाइ वयरी थयो ॥ नारद मुख वली शोध लाधी, पांमव लेई साथ ए ॥ कृष्ण सायर तटी आराधी,मागध तीरथ नाथ ए ॥ २ ॥ढाल॥ तव सुस्थित रे,क हे सुणो नारायण तुमो ॥ द्रौपदीने रे, लावी आपुं तुमने अमो ॥ पद्मरा जा रे, नयर सहित नाखुं सायरें॥ कहे कृष्णजी रे, एह न करवुं मायरे ॥३॥त्रू०॥ जावुं माहरे तिहां तेणे तुमें,मारग आपो तिहां जइ ॥ जीती ते हने आवुं वहेलो,द्रौपदी साथें लइ ॥ ब रथ जावे मार्ग ते तो, आप्योतव हरि जाय ए ॥ जीते समरे तेह नरपति,द्रौपदी शरणें आय ए ॥४॥ढाल॥ मोरारीयें रे, मूक्यो तेहने जीवतो ॥ द्रौपदी लेई रे,वलीयो शंख वजावतो॥ मुनि सुव्रत रे, तिहां जिन कपिल नारायणो ॥ सुणीयो शंख रे, पूछे स्वामी

ए कुण तणो ॥ ५॥त्रू०॥ कहे प्रजुजी तुम समोवड, जंबूजरत वासुदेव ए॥ इत्यादिक सहु सुणी उम्मह्यो, मिलवाने नरदेव ए ॥. कहे जिनजी चक्री अरिहा, विष्णु पण न मले कदा ॥ इम सुण्युं पण हर्ष वाह्यो, आव्यो सागर तट तदा ॥६ ॥ ढाल ॥ शंख पूर्यो जी, कृष्णने कहे पावावलो ॥ शंख पूरीजी, कृष्ण कहे तुमें सांजलो ॥ दूर आव्या जी,एह वात तुमें मत कहो ॥ अठेरुं जी,शंख मल्या ते पण लहो ॥ ७ ॥ त्रू० ॥ लहो अठेरुं हवे तट जइ, कृष्ण पांमवने कहे ॥ तुमें गंगा पार पामो, जिहां तरंग महोटा वहे ॥ सुस्थित सुरने मली हुं पण, आवुं हुं वेगो वही ॥ गंगा पांमव तरी विचारे, कृष्ण बल जोइयें सही ॥ ८ ॥ ढाल॥ जोजन बासठ रे, एह तरंग वहे घणा ॥ केम आवशे रे, नारायण नावा विना ॥ एम चिंतवी रे,नावा नवि मूकी तिणे ॥ कंसारीय रे,कार्य करी आव्या तिहां कणे ॥९॥ त्रू० ॥ तिहां कणें आवी गंगा तरवा, एक हाथमां रथ धरी ॥ गंगामां परवेशीयें, एम विचार कस्यो हरी ॥ कृष्ण थाको चिंतवे अहो, पांमुसुत ब लीया घणा ॥ नावा विणु जुउ गंगा तरिया,करे कृष्ण विश्रामणा ॥१०॥ढाल॥ नदी तरीने रे, पांमव पासें आवीया ॥ पांमवें पण रे, व्यतिकर सर्व सुणा वीया ॥ सुणी कोप्यो रे,गोविंद गंगा कांठें ए ॥ रथ जांगे रे,लेइ लोहनी ला ठें ए ॥ ११ ॥ त्रू० ॥ जांगी रथने कहे इणि परें, हजी बल जोवुं अठे ॥ अपर कंका जीत कीधी,तेहथी बल कुण पठें ॥ जाउ डुष्टो माहरा मुखथी, एम कही द्वारिका गया ॥ पांमव पण निज नयर आव्या,मन सचिंता जा विया ॥ १२ ॥ढाल॥ कहे कुंतिने रे,कुंती पण वासुदेवने ॥ कहे सांजल रे, जरत अरध तुऊ सेवने ॥ माहरा सुत रे,कहे तुं किहां जइने रहे॥ कहे न रपति रे, तुऊ सुत दक्षिण दिशि गहे ॥ १३ ॥ त्रू० ॥ तिहां जइने उदधि कांठे, नवुं नगर निवास ए ॥ पांमु मथुरा नाम थापी, रहो सुख आवास ए ॥ कुंती पण जइ पुत्रने कहे, पांमवें तेम कीध ए ॥ बीजे अधिकारें ए पहेली, ढाल पद्म सुसिद्ध ए ॥ १४ ॥ त्रू० ॥ सर्व गाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन विचरंता प्रजु, नेमिनाथ जगवान ॥ आव्या बहु परिवार थी, जद्दिलपुर उद्यान ॥ १ ॥ सुलसा नाग पहेलां कह्या, तेहना जे खट पूत ॥ कन्या बत्रिश परणीया, प्रत्येकें बहु वित्त ॥ २ ॥ अनुक्रमें प्रजु दे

शना सुणी, चरमशरीरी तेह ॥ व्रत लेइ पूरव नण्या, द्वादशांग गुणगेह ॥ ३ ॥ ते प्रभु साथें विचरतां, तप तपता मुनिराय ॥ विहार करंता नेम जी, अनुक्रमें द्वारिका जाय ॥ ४ ॥ समवसर्या सहसावनें, हवे ते खटऋषि राय ॥ छठने पारणे पूछीने, दो दो गोचरी जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धन दिन वेला धन घडी तेह ॥ ए देशी ॥ बे बे रे मुनिवर गोचरी जाय, द्वारिकामां ईर्या समिति ते सोधता जी ॥ अनिकजसा ने अनंतसे न दोय,देवकीने घर जाय इंद्रिय रोधता जी ॥ १ ॥ देखी रे कृष्ण सरीखा ते साध, मोदकसिंह केसरीया रागथी जी ॥ पडिलाने देवकी ते ऋषि राय,माने रे मुनिवर आव्या नागथी जी ॥ २॥ ते ऋषि वहोरी जाये रे ताम, अजितसेन निहतारी आवीया जी ॥ ते पण तेमहीज वोहरी रे जाय, देवजस शत्रुसेन पाउ धारीया जी ॥३॥ देवकी रे संशय पामी ताम, पूछे रे कर जोडी ऋषिराय जी रे ॥ स्वामी रे शुं तुम दिशि मोह थाय, अथवा रे मुऊ मति मोह ते थाय जी रे ॥ ४ ॥ अथवा रे द्वारिकामां अन्न पान,दुःष्कर बे केम मुऊने ते कहो जी ॥ मुनि तव बोले नहिं कोइ वात, अमे रे सहोदर खट सरिखा लहो जी ॥ ५ ॥ दीक्षा रे लीधी प्रभुजीनी पास, फीरता रे गोचरी आव्या तुम घरे जी ॥ चिंते सा तिलसम तिल पण नांहि, केम रे ए देखुं नारायण परें जी ॥ ६ ॥ पूर्वे रे अयमत्ते रीखि राय, नांख्या रे अड सुत मुऊने जीवता जी ॥ जइने रे पूछे नेम जिणंद,नेमजी कहे सांभलियें तुऊ सुता जी ॥ ७ ॥ संशय भांख्यो सघलो रे तास, करती रे खेद देवकीने प्रभु कहे जी ॥ म करो रे खेद कह्यां कर्म जेह, पामे रे दुःख ते कर्मउदय लहे जी ॥ ८ ॥ पूर्व भवें तुमें शोक्यनां रत्न,लीधां ने दीधुं एक तो रोवतां जी ॥ सांभली निंदे दुरित ते आप,पहोता रे घर हवे पुत्रने वांछतां जी ॥ ए ॥ नारायण पूछे श्यो तुम शोक, सा कहे पुत्र न पाव्यो निज करें जी ॥ कहे रे कंसारि म करो खेद, पुत्र होशे तुम कर शुं तेणी परें जी ॥ १० ॥ देव आराध्यो आव्यो ते देव, सुर कहे कारण कहो तव हरि कहे जी ॥ वांछुं रे लघुभ्राता तव देव, बोले रे होशे पण दीक्षा लहे जी ॥ ११ ॥ अनुक्रमें प्रसव्यो पुत्र पवित्र, गजसु कमाल ते नामें वालहो जी ॥ बहु नृप कन्या परण्यो तेह, नवना

ग्यो ते महानाग ॥ उन्मारगें जातो तेम वाल्यो, जेम अंकुशें नाग ॥ अ० ॥ १० ॥ नोग तणी इछा छांमीने, प्रनुजी पास आलोवे ॥ पश्चात्ताप करंतो मुनिवर, कर्म कलंकने धोवे ॥ अ० ॥ ११ ॥ एक वरस छद्मस्थ रहीने, मुनिवर शुन्न परिणामें ॥ घाती करमनो घात करीने, केवलज्ञान ते पामे ॥ अ० ॥ १२ ॥ धन्य राजीमती धन्य ए रिखजी, जिणे साध्यां निजकाज ॥ विहार करे प्रनु अन्यदेशें वली, नव्यकमल दिनराज ॥ अ० ॥ १३ ॥ प्रनुजी धाउधाख्या फरी रैवत, पीतांबरें सुणी वात ॥ निजसुतने हरि इणि परें नांखे, प्रनु रैवत्त आयात ॥ अ० ॥ १४ ॥ जे प्रनुजीने पहेला वांदे, तेहने अश्व हुं आपुं ॥ तेहनें मानी धन धन नांखुं, हृदयमांही पण थापुं ॥ अ० ॥ १५ ॥ पालकनाम अनव्य ते ऊठी, रातने पाछले याम ॥ प्रनु वांदीनें इणि परें नांखे, थाजो साखी राम ॥ अ० ॥ १६ ॥ दूर थकी एम कहीने वलीयो, हवे जे सांब कुमार ॥ घरमां ऊठी नावथी वांदे, आदर नक्ति अपार ॥ अ० ॥ १७ ॥ हरि हवे परमेश्वरने पूछे, पहेला वांद्या केहणे ॥ जिम निर्णय करी अश्व अनोपम, आपुं हरखें तेहने ॥ अ० ॥ १८ ॥ प्रनु कहे इव्यथी पालकें वांद्या, नावथी सांब कुमारें ॥ जेह अनव्य प्राणी होय तेहने, आवे न नाव किवारें ॥ अ० ॥ १९ ॥ पालक काढी मूक्यो घरथी, सांबने अश्व ते आप्यो ॥ सांब उपर नारायणने बहु, हृदय प्रमोद ते व्याप्यो ॥ अ० ॥ २० ॥ चोथे खंमें बीजे अधिकारें, नांखी छठी ढाल ॥ ए अधिकार संपूरण हूउं, हूउं हर्ष विशाल ॥ अ० ॥ २१ ॥ क्षमाविजय जिनन्नक्ति अनोपम, उत्तम नविक रसाल ॥ पद्मविजय कहे बहुविध करतां, पामे मंगलमाल ॥ अ० ॥२२॥ सर्वगाथा १६५॥ इतिश्री द्रौपदीप्रत्याहरणगजसुकमालढंढणऋषिप्रमुखचरित्रवर्णनोनामा चतुर्थखंमे द्वितीयोधिकारः संपूर्णः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयाधिकार प्रारंनः ॥

॥ शारदगुरु जिनवर नमी, हवे त्रीजो अधिकार ॥ चोथा खंम तणो कहुं, सुणतां जयजयकार ॥ १ ॥ एक दिन नेम समोसस्था, करता नवि उपगार ॥ हरि सामग्री मोटिकी, वंदन करे तैयार ॥ २ ॥ तिण अवसर द्वारापुरी, दीठी घणुं उच्छिद्द ॥ यादव पण सुखीया घणुं, निजनयणें करी

वृंद रे, धन्य नांखे इम गोविंद रे ॥ क० ॥२०॥ राजीमती रुक्मिणी मुहा रे, धन्य जादवनी नीर ॥ गृहवास बांमीने जिणे, लीधो वर संजम नार रे, इम नावना नावे उदार रे, पण वेदननो नहिं पार रे, थयो वात प्रकोप प्रचार रे ॥ क० ॥ २१ ॥ ते डुःखमां वली सांनरी रे, द्वारिका नयरीनी रूद्धि ॥ सहस वरस मुजने थयां, पण एम मुज किणही न कीध रे, जेम द्वैपायनें डुःख दीध रे, हुं एकलमल परसिद्ध रे, पण ए डुःख देवा गिद्ध रे ॥ क० ॥ २२ ॥ जो देखुं हवे तेहने रे, तो क्षय आणुं तास ॥ तास उदरथी कुल सवे, काढुं पुर रूद्धि विलास रे, इम रौद्रध्यान अन्यास रे, तूटो तिहां आयुपास रे, मरी पोहता नरकावास रे ॥ क० ॥ २३ ॥ सोल वरस कुमरपणे रे, बपन वरस मंमलीक ॥ नवशें अठाविश जाणियें, वासुदेवपणे तह कीक रे, जिहां कर्म कर्यां तिहां ठीक रे, त्रीजी नरक डुःख बीहिक रे, पहोता तेहमां न अलीक रे ॥ क० ॥ २४ ॥ चोथे खंमें पूरण थई रे, प्रगट ए पांचमी ढाल ॥ पांच ढालें पूरो थयो, त्रीजो अधिकार रसाल रे, गुरु उत्तमविजय कृपाल रे, तस शिष्य पद्म कहे बाल रे, सुणतां होय मंगलमाल रे ॥क० ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥१५२॥ इतिश्रीमदुत्तमो०॥ द्वारिकादाहकृष्णावसानकीर्तन नामा चतुर्थखंमे तृतियोऽधिकारः ॥

॥ अथ चतुर्थखंमस्य चतुर्थाधिकार प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री अरिहंत उपगारीया, तिम सिद्धज नगवान ॥ सूरि वाचक मुनिवर नमुं, हैडे आणी ध्यान ॥ १ ॥ पद्मपत्र पुटमां नरी, जल लेइ आव्या राम ॥ अपशकुनें करी वारिया,स्वजना लेहता ताम ॥२॥ आव्या कृष्ण पोढ्या जिहां, ऊंघ्यां दीसे एह ॥ एम चिंती ऊना रहे, एक क्षण श्रीबल तेह ॥ ३ ॥ मुख ऊपर बहु मक्षिका, देखीने बलदेव ॥ वस्त्र दूर करिने जुवे, मृत जाण्या ततखेव ॥ ४ ॥ नेह घणो नाइ ऊपरें, हुआ जेम वज्रघात ॥ मूर्बा आवीने तिहां, कीधो पृथ्वीपात ॥ ५ ॥ शीतल वातादिकथकी, चेतन पाम्या जाम ॥ सिंहनाद मूके तिहां, माहानीम तव राम ॥६॥ श्वापद सहु कंप्या तिहां, पडे ते पर्वतशृंग ॥ राम कहे मुज नातनो, किण कर्यो गातर नंग ॥ ७ ॥ प्रगट थाउ ते पापीयो, जो होय सुनट सतेज ॥

सुप्त प्रमत्त बालक रुषि,स्त्री कुण हणे गतहेज ॥७॥ एम महोटे शब्दें करी, रोता जमे वनमांहि ॥ नवि दीठो हणनारने, पाठा आव्या त्यांहि ॥ए॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ श्या माटें साहेब सामुं न जूउं ॥ ए देशी ॥ श्या माटें बंधव मुखथी न बोलो, आलिंगन करी जासे ॥ मोरारी रे ॥ गुनह विना गोविंदजी इणि परें, नवि बोलो श्ये आशें ॥ कंसारी रे ॥ १ ॥ श्या० ॥ अच्युत ए दुःख में न ख माये, आ वनमां वनमाली ॥ मो० ॥ कृष्णविना जे क्षण एक जाये, वा त वरस सो वाली ॥ कं० ॥ २ ॥ श्या० ॥ लाव्यो पाव्यो विष्णु उलेख्यो, हाथे हरि हुलराव्यो ॥ मो० ॥ नाइ लघु पण गुण बहु जेहमां, किणे वि योग कराव्यो ॥ कं० ॥ ३ ॥ श्या० ॥ आगलथी बोलता इंद्रानुज, आज बोलाव्या न बोलो ॥ मो० ॥ दाधा ऊपर लूण न दीजें, वयण नारायण बोलो ॥ कं० ॥ ४ ॥ श्या० ॥ शारंगधर अम्ह सार करो ने,पुरुषोत्तम कहे वाउ ॥ मो० ॥ दामोदर तुमें मारी वेला, केम जनार्दन थाउ ॥ क० ॥ ॥ ५ ॥ श्या० ॥ पूरव प्रीति पीतांबर किहां गइ, विछुन वाणी प्रकासो ॥ ॥ मो० ॥ में अपराध न केशव कीधो, श्ये रूठा ते विमासो ॥ कं० ॥ ॥ ६ ॥ श्या० ॥ चतुर चतुर्भुज एम न कीजें, रुपणुं रामनी साथें ॥ ॥ मो० ॥ सोमसिंधु सोमदृष्टि जूउं, उगो तुमें यदुनाथ ॥ दैत्यारी रे ॥७॥ ॥ श्या० ॥ वार घणी मुझने जे लागी, तिणे न बोलो जगनाथ ॥ बाणीरी रे ॥ अज अपराध ते सघलो खमीयें,नही करुं फरि गोपीनाथ ॥ नरकारी रे ॥८॥श्या०॥ श्रीधर सूवानी नहिं वेला,सविता शोरी जाय ॥मो०॥ विश्व रूपी तुमें देवकीसूनु, केती अरज कराय ॥ कं० ॥ ए ॥ श्या० ॥ माधव मनमां आणी ऊगो, वासुदेव वैकुंठ ॥ मो० ॥ पद्मेशय पद्मनाभ विश्वंभर, मन नवि कीजें दुठ ॥ कं० ॥ १० ॥ श्या० ॥ श्रीवत्सधर एम रोतां, रात गइ उग्यो दिन्न ॥ मो० ॥ कहे रे वली मुकुंद सनातन, ऊगो मधुसूद न ॥ कं० ॥ ११ ॥ श्या० ॥ नवि ऊते ज्यारें शशिबिंड, तव पांमवायन मोही ॥ मो० ॥ वृषाकपि लीधा खंधोले, बलभद्र बलिया तोही ॥कं०॥ १२ ॥ ॥ श्या० ॥ वेधसकहेतां वन वन जमता, वहेता धरणीधर काय ॥ मो० ॥ पुष्प प्रमुख लावी विधुने अरचे, सुवर्ण बिंड जाय ॥ क० ॥१३॥ श्या०॥ ७ महिना लगें एम नित अरचे, हृषीकेश केरे रागें ॥ मो० ॥ एम न

मतां वर्षाकृतुसमयें, सिद्धारथ सुर जागे ॥ क० ॥ १४ ॥ श्या० ॥ बलदे वनो रथकार जे हुतो, तिणे जाएयुं उहिनाणें ॥ मो० ॥ तेह चिंते त्रिवि क्रमरागें, एम करे एह अन्नाणे ॥ क० ॥ १५ ॥ श्या० ॥ श्रीपतिमृतक वहे ए हलधर, माहारे प्रतिज्ञा एह ॥ मो०॥ आपदमां प्रतिबोध ते देवो, एम चिंतवि आवे तेह ॥ क० ॥ १६ ॥ श्या० ॥ एक पाषाण शकट विकू र्वी, पर्वतथी उतरंतो ॥ मो० ॥ कणबीनुं रूप करी तिहां बेठो, ते मुशली निरखंतो ॥ क० ॥ १७ ॥ श्या० ॥ समभूमि कांइ शकट ते भांग्युं, सांधवा बेठो तेह ॥ मो० ॥ बल बोले रे करे शुं मूरख, केम संधाये एह ॥ क० ॥ १८ ॥ श्या० ॥ तव ते बोल्यो सुणियें गदाग्रज, जुद्ध सहसें न हणीयो ॥ मो० ॥ ते विणु जुद्ध मुवो मुफ केशी, ते तें मन नवि गणीयो ॥ हलधा री रे ॥ १९ ॥ श्या० ॥ जीवशे जो शशिबिंदु ताहरो, तो ए शकट संधाशे ॥ ह० ॥ तव रूशी बलभद्र ते चाल्या, नवि मरे जिन एम भासे ॥ ह० ॥ २० ॥ श्या० ॥ पब्बर उपर पद्मिनी वावे, तव देवने बल बोले ॥ ह० ॥ पब्बर ऊ पर कज केम ऊगे, मूरख नहिं तुफ तोले ॥ ह० ॥ २१ ॥ श्या० ॥ देव क हे तुफ अनुज जो जीवे, तो ए कमल ते ऊगे ॥ ह० ॥ एम कह्ये रूठा ते हलधरजी, वली आगल जइ पूगे ॥ ह० ॥ २२ ॥ श्या० ॥ दाधो वृक्ष ते जलथी सींचे, बल देखी कहे तेहने ॥ ह० ॥ बलीया वृक्ष कहो किम ऊगे, तहारो आशय मुफ कहेने ॥ ह० ॥ २३ ॥ श्या० ॥ ते कहे विष्वक्सेन जो जीवे, तो ए वृक्ष ते फलशे ॥ ह० ॥ आगल जइ वली देव देखाडे, ते देखी बल वलशे ॥ ह० ॥ २४ ॥ श्या० ॥ गोपी रूप करी लेइ दूर्वा, गोशब वदनें देवे ॥ ह० ॥ बल कहे केम मुइ दूर्वा चरशे, तव ते देव ते कहेवे ॥ ह० ॥ २५ ॥ श्या० ॥ जो ए पूर्णपुरुष तुफ बांधव, जीवशे तो ए खाशे ॥ ह० ॥ ते सुणी श्री बलभद्र विचारे, शुं ए वात खरी थाशे ॥ ह० ॥ २६ ॥ श्या० ॥ चोथे खं में ने अधिकारें, बलभद्र प्रतिबोध लहेशे ॥ ह० ॥ पहेली ढाल पद्मविजयें कही, मंगलिक वात सुर कहेशे ॥ ह० ॥ २७ ॥ श्या० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इत्यादिक दृष्टांतथी, चिंतवे श्री बलभद्र ॥ केम सहुं ए भांखे इस्युं, मरण लह्या उपेंद्र ॥ १ ॥ इण अटवीमां को नहिं, दीसे माणस रूप ॥ एह पुरुष केम एकलो, कहेतो जिष्णु स्वरूप ॥ २ ॥ कोइक कारण देखी

यें, एम चिंते हलधार ॥ सुरवर ते परगट थइ, बोले वाणि तिवार ॥ ३ ॥ सिद्धारथ सारथि तणुं, रूप करी कहे एम ॥ तुम वंचनें हुं आवियो, प्र तिबोधनने प्रेम ॥ ४ ॥ जराकुमर बाणें करी, जलशय पाम्या काल ॥ जे प्रभु नेमे नांखीयुं,ते तुं वचन संभाल ॥ ५ ॥ इत्यादिक सवि सांभली, प्र तिबूज्या बलदेव ॥ ते सुरने कहे शुं करुं, गयो बन्धु दुःख देव ॥ ६ ॥ सुर कहे व्रत लेवुं घटे, तुमें जिन नेमना नाय ॥ सुणि एम सुर बल दाह दे, च क्रपाणिनी काय ॥ ७ ॥ विद्याधर मुनि नेमजी, मोकले जाणी नाव ॥ ब ल पण संजम आदरे, जे नवसायर नाव ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ लावो लावोने राज, मोंघां मूलां मोती ॥ ए देशी ॥ वंदो वंदो रे आ ज, एहवा मुनिवर वंदो ॥ मागी तुंगी पर्वत ऊपर,जइने पाप निकंदो ॥वं० ॥ १ ॥ तेह गिरी ऊपर तप करतां,सिद्धारथ रहे पासें ॥ एक दिन मासख मणने पारण, जाये गोचरी आसें ॥ वं० ॥ २ ॥ एक नारें दीठा ते मुनिव र, कामदेवने रूप ॥ कूवा कांठे ऊनी मोही, निरखे करि करि चूंप ॥ वं० ॥ ३ ॥ घटसाटें निजपुत्रने फांस्यो, मुनिवर पण ते देखी ॥ नारीने कहि बलभद्र वन चाल्या, गोचरी पण अवेखी ॥ वं० ॥ ४ ॥ धिग् मुज रूप अन र्थनुं कारण, नवि आवुं पुरमांही ॥ काष्ठहारादिक पासें लेशुं, निक्षा रहि ने त्यांही ॥ वं० ॥ ५ ॥ तिहां जइ दुःकर तप बहु करता, काष्ठहारादिक पासें ॥ निक्षा लइने पारणुं करता, एक कर्म क्षयनी आशें ॥ वं० ॥ ६ ॥ काष्ठाहारादिक जइ ते पुरमां, राजाने कहे वात ॥ एक पुरुष बलवंत तप स्वी, ए गिरि ऊपर ख्यात ॥ वं० ॥ ७ ॥ राजा चिंते शंका पाम्यो, राज्य इच्छा थकी मोहोशे ॥ ए तपनुं फल जाणुं निश्चें, राज्य लखमी मुज जोशे ॥ वं० ॥ ८ ॥ मारुं आगलथी एम चिंती, सेना लेइ चतुरंग ॥ बल विंट्या तव सिद्धारथ सुर, सान्निधि करे उछरंग ॥ वं० ॥ए॥ सिंहरूप तिहां महाभ यकारी, ते पण देखे अनेक ॥ देखी चमक्यो राजा प्रणम्यो, मुनिने धरिय विवेक ॥ वं० ॥ १० ॥ राजा निजस्थानक ते पहोतो, हवे बलने उपदेशे ॥ वाघ प्रमुख तिहां शांत थईने, मुनि पासें उपवेशे ॥ वं०॥ ११ ॥ केइक श्रा वक केइक भद्रक, केइ करे काउस्सग्ग ॥ केइक अणसण केइ तपस्या, क रता पशुना वग्ग ॥ वं० ॥ १२ ॥ मांस आहार त्याग करे केई, केइ रहे नि

त पासें ॥ तिर्यंचरूपें शिष्य तणी परें, दीसे शुभ अभ्यासें ॥ वं०॥ १३ ॥ एक मृगलो जाति समरणथी, मुनि पूरव भवनेहें ॥ मुनिवर साथें जाय ने आवे, सेवा करे निज देहें ॥ वं० ॥ १४ ॥ काष्ठहार मुख खोले वनमां, ते हरणो मुनि माटें ॥ शुद्ध आहारादिक देखी भासे, मुनि चालो ए वाटें ॥ वं० ॥ १५ ॥ मुनि पण तस आग्रहथी जाये, पारणे लेवा आहार ॥ एम दिन दिन करतां एक दिन मृगें, दीठा तिहां रथकार ॥ वं० ॥ १६ ॥ आहार देखि सुझतो ते मृगलो, शानायें मुनिने भांखे ॥ एम कही मुनिवर आगल चाले, मृगलो मारग दाखे ॥ वं० ॥ १७ ॥ रथकारें दीठा मुनिवरने, मासखमण तपकारी ॥ इण अटवीमां कल्पतरुपरें, मुनिवर ए निरधारी ॥ वं० ॥ १८ ॥ मुज लगें किहांथी एह तपस्वी, माहारूपथ्वी शांत ॥ महातेजस्वी माहागुणवंता, दीसे एह महांत ॥ वं० ॥ १९ ॥ चोथे खंमें ने अधिकारें, बीजी ढाल रसाल ॥ पद्मविजय कहे रथकारकनां, जाग्यां भाग्य विशाल ॥ वं० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो भाग्य आज माहरुं, आव्या श्रीऋषिराय ॥ पदकज प्रणमे साधना, आणंद अंग न माय ॥ १ ॥ स्वामी मुज पावन करो, ल्यो ए शुद्ध आहार ॥ मुनि पण योग्य जाणी हवे, चिंते इम निर्धार ॥ २ ॥ शुद्ध पात्र कोइ पेखीयें, जो नवि लावुं आहार ॥ तो पुण्यमां अंतरायनो, कारण थाउं निरधार ॥३॥ करुणानिधि एम चिंतवी, निरपेक्षी निजदेह ॥ मृगलो मन हरखे घणुं, आहार लिये मुनि तेह ॥ ४ ॥ मुनि रथकारक देखीने, मृगलो चिंते एम ॥ धन्य ए रथकारक जिणें, मुनि पडिलाभ्या केम ॥ ५ ॥ धन्य एह गुरु निःस्पृही, तारण तरण जहाज ॥ हुं नवि कांहि करी शकुं, धिक जमवारो आज ॥ ६ ॥ धर्म ध्यान ततपर त्रिहुं, ऊभा छे एम जाम ॥ अर्द्धछेदी तरुमाल तिहां, त्रूटी वायरे ताम ॥७॥ चंपाणा त्रणे जणा, काल करी ततखेव ॥ पद्मोत्तर वेमानमां, ब्रह्मलोकें सहु देव ॥८॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ माली केरा बागमां ॥ मन भमरा रे ॥ ए देशी ॥ सो वरस व्रत पालीयुं मुनिराजे रे, दे उपयोग ते राम ॥ देवविराजे रे ॥ मार्जे देखे त्रीजी नरकमां दुःख लेहता रे, वैक्रियशरीर करे ताम॥ सुख बहु वहेता रे ॥१॥